ओ३म्

नींव के पत्थर

महाशय मुकन्दलाल जी

लेखक
राजेन्द्र जिज्ञासु एम० ए०

ओ३म्

नींव के पत्थर

महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया

—लेखक—

प्रो० राजेन्द्र "जिज्ञासु" एम० ए

(प्रणेता :—वीर संन्यासी, मौलिक भेद, महर्षि का ऐक्यवाद, भारतीय स्वाधीनता संग्राम व आर्यसमाज, हृदय तन्त्री आदि आदि)

प्रकाशक

लाला चाननलाल जी आहूजा अबोहर

प्रथम बार–१०००

मूल्य–समाज प्रेम

नर तन किस लिए ?

ओ३म् जातो जायते सुदिनत्वे
अह्नां समर्य आ विदथे वर्धमानः।
पुनन्ति धीरा अपसो मनीषा देवया
विप्र उदियर्ति वाचम्। ऋग्वेद ३।८।५

मानव देह इस लिये प्राप्त हुई है कि दिनों को सुदिन बनाया जाये। जीवन संग्राम का प्रयोजन आगे बढ़ना है। ध्यानी और मनीषी बुद्धि से ज्ञान से कर्मों को पवित्र करते हैं। देवजन दिव्य कामना से वाणी का उच्चारण करते हैं।

उपहार

श्री ______________________

____

की सेवा में

सप्रेम भेंट

____

____

____

समर्पण

मैं अपनी इस पुस्तक को—

★ वेद शास्त्र मर्मज्ञ

★ बाल ब्रह्मचारी,

★ वीर संन्यासी

★ स्वाधीनता संग्राम के सेनानी

★ हैदराबाद सत्याग्रह के फ़ील्ड मार्शल

★ लोहारू राज्य के विजयी नेता

★ देश-विदेश में वेद-सन्देश सुनाने वाले

★ महर्षि दयानन्द के महान् लक्ष्य की पू
के लिए तिल तिल जलने वाले तपोध

आचार्य स्वामी स्वतंत्रानंद जी महारा

की सुमधुर पावन स्मृति में सादर समर्पित करता हूं

—विनीत

राजेन्द्र "जिज्ञासु"

पूज्य आचार्य श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, हैदराबाद सत्याग्रह के समय का एक अप्रकाशित चित्र

विषय-सूची

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	प्रस्तावना	
	भूमिका	
पहला	जन्म स्थान व कुल परिचय	१
दूसरा	आर्य समाजी कैसे बने	७
तीसरा	सेतिया जी परिवार में	१०
चौथा	आर्य समाज में	२०
पाँचवां	दीन दुखी की सेवा में	३५
छठा	हिन्दी व हिन्दी साहित्य सदन	४१
सातवाँ	दलितोद्धार	४७
आठवां	अरोड़ वंश सभा	५०
नवाँ	महर्षि स्मारक टंकारा	५६
दसवां	शिक्षा संस्थाओं के निर्माण में	५८
ग्यारहवां	दयानन्द संस्थाओं की सेवा में	६०

बारहवां　　दयानन्द कालेज की यज्ञशाला
तेरहवां　　राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में
चौदहवां　　विविध घटनाएं
पन्द्रहवां　　अंतिम यात्रा
विविध झांकियां
महाशय जी का प्यारा वेदमंत्र
तथा प्यारा भजन　　१
महाशय जी की विचार वाटिका　　१
श्रद्धांजलियां　　१

६४
६७
७६
८७
९४
५१
५३
६२

प्रस्तावना

नींव के पत्थर पुस्तक स्वर्गीय श्री महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया का जीवन-चरित्र है जिसे आर्य समाज के उदीयमान युवक नेता प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने लिखा है । मेरे लिये यह कम गौरव की बात नहीं कि उक्त महाधन के जीवन-चरित्र के प्रकाशन तथा प्रस्तावना लिखने का सौभाग्य मुझे प्रदान किया गया है। इस के लिये मैं आदरणीय लेखक तथा प्रकाशक बन्धुओं का अत्यन्त आभारी हूं ।

यूं तो मेरा स्वर्गीय महाशय मुकन्दलाल जी से बहुत देर से परिचय था। परन्तु उन के इस जीवन-चरित्र के प्रकाशन कार्य को हाथ में लेने पर ज्यों-ज्यों मैं उन की जीवन सम्बन्धी घटनाओं को पढ़ता गया मेरी उनके प्रति श्रद्धा त्यों-त्यों बढ़ती गई और मैंने इस से अनुभव किया कि वह वास्तव में आर्य समाज के रम्य भवन की नींव के पत्थर थे ।

वह पहली बार मुझे अपनी आर्य कन्या पाठशाला
स्वीकृति और उसे आर्य शिक्षा मण्डल से सम्बन्धित कर
के सम्बन्ध में जालन्धर में मिले थे। उस के पश्चात् उ
का मुझ से निरन्तर पत्र-व्यवहार चलता रहा। मेरे साप्त
हिक पत्र "वैदिक धर्म" ने मुझे उन के और भी निकट क
दिया। हिन्दी के अनन्य प्रेमी होने पर भी वह उर्दू प
'वैदिक धर्म' के परिवार के माननीय सदस्य थे और उन क
यह उत्कट इच्छा थी कि वह इस के शीघ्र आजीवन सदस
बन जाएं जिसे उनके निधन के पश्चात् उन के सुपु
श्री वेदप्रकाश जी सेतिया ने पूरा कर दिया। यह बात
उन के आर्यसमाज–प्रेम की परिचायक है।

एक बार वह पुनः मेरे यहां पधारे थे। इस बार व
अपने एक घरेलु मामले में मुझ से परामर्श करने आये थे
उनकी आत्मीयता के कारण मैं उन्हें अपना एक बुजु
समझता था और वह मुझे अपना एक अनुज। यद्यपि मु
उस समय तक उनके व्यापक सेवा-कार्य का ज्ञान नहीं थ
फिर भी इन दो मुलाकातों में मैं उन के महान् व्यक्तित्व
से बहुत अधिक प्रभावित हुआ।

इस जीवन-चरित्र के लेखक प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु आर्य
समाज के क्षेत्र में मेरे सामने परवान चढ़े हैं। आर्यसमाज के
प्रति जिस निष्ठा के कारण वह कालेज के प्राध्यापक होने

के अतिरिक्त अपने सुख-सुविधा के समय को एक सच्चे मिश्नरी के रूप में आर्यसमाज के अर्पण कर रहे हैं वही निष्ठा ही इस जीवन-चरित्र के लेखन की उनकी प्रेरक है। मुझे प्रसन्नता है कि प्रिय जिज्ञासु जी इस समय जितने ओजस्वी वक्ता हैं उतने ही वह अब उत्कृष्ट लेखक भी हैं। प्रस्तुत पुस्तक में जहां उन्होंने साहित्य की जीवनी विधा की सभी परम्पराओं को सुरक्षित रखा है वहां अपने चरित्र-नायक का जीवन चरित्र भी इतना सुन्दर तथा आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया है कि मुझे विश्वास है कि पाठक पुस्तक के अन्त में श्रद्धा से आनंद विभोर होकर महाशयजी के चरणों में नतमस्तक हुए बिना नहीं रह सकेंगे।

मैं इस सफल रचना के लिए जहां अपने प्रिय भाई जिज्ञासु जी को वधाई देता हूं वहां भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वह हमें स्वर्गीय महाशय जी का सा समाज-प्रेम, उनकी सी धर्मनिष्ठा और उन जैसी सेवा भावना प्रदान करें ताकि हम भी उन के चरण-चिह्नों पर चल कर अपने समाज और अपने देश को उन्नत कर सकें।

मुझे पूर्ण आशा है कि प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशक बन्धुओं के लक्ष को अवश्य पूरा करेगी। निश्चय ही इस से स्वर्गीय महाशय जी के नाम और कार्य को अम-

रता मिलेगी तथा उनकी पवित्र भावनाओं का प्रसार भी होगा। यह बात और भी प्रशंसनीय है कि इस पुस्तक का मूल्य केवल समाज प्रेम रखा गया है। आशा है कि प्रेमी पाठक माननीय प्रकाशकों द्वारा इस निश्चित मूल्य को चुकाने का अवश्य यत्न करेंगे।

अन्त में मैं जयहिंद प्रेस के कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करता हूं कि जिन के सहयोग से यह पुस्तक इतनी सुन्दर और शुद्ध छप सकी है।

रामचन्द्र जावेद एम० ए
सम्पादक
वैदिक धर्म

जालन्धर छावनी

ओ३म्

भूमिका

२३-८-६९ को अबोहर क्षेत्र के कर्मठ नेता श्रीयुत महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया का निधन हुआ। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके घर में एक विराट शोक सभा हुई। उस सभा से पूर्व कुछ सज्जनों ने मुझे उनका संक्षिप्त जीवन चरित्र लिखने की आज्ञा दी। चार पृष्ठ का जीवन चरित्र प्रकाशित कराया गया। सामग्री कुछ पृष्ठों की तैयार थी। मैंने तब महाशय जी की अन्तिम कुछ दिनों की डायरी देखी। उन के अन्तिम शब्द पढ़ कर उन के अटल ईश्वर विश्वास, दृढ़ धर्म-निष्ठा तथा प्रखर राष्ट्र प्रेम के विचारों से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ।

मेरे मन में उमड़ धुमड़ कर यह विचार पैदा हुआ कि महाशय जी का जीवन-चरित्र छपना चाहिए। मैंने उपरोक्त सभा में यह सुझाव प्रस्तुत कर दिया। कुछ समय पश्चात्

ओ३म्

भूमिका

२३-८-६९ को अबोहर क्षेत्र के कर्मठ नेता श्रीयुत महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया का निधन हुआ। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके घर में एक विराट शोक सभा हुई। उस सभा से पूर्व कुछ सज्जनों ने मुझे उनका संक्षिप्त जीवन चरित्र लिखने की आज्ञा दी। चार पृष्ठ का जीवन चरित्र प्रकाशित कराया गया। सामग्री कुछ पृष्ठों की तैयार थी। मैंने तब महाशय जी की अन्तिम कुछ दिनों की डायरी देखी। उन के अन्तिम शब्द पढ़ कर उन के अटल ईश्वर विश्वास, दृढ़ धर्म-निष्ठा तथा प्रखर राष्ट्र प्रेम के विचारों से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ।

मेरे मन में उमड़ धुमड़ कर यह विचार पैदा हुआ कि महाशय जी का जीवन-चरित्र छपना चाहिए। मैंने उपरोक्त सभा में यह सुझाव प्रस्तुत कर दिया। कुछ समय पश्चात्

प्रसिद्ध आर्य दानी सेठ चाननलाल आहूजा, ला० कर्मचन्द जी सेतिया, महाशय चूनीलाल जी सेतिया मेरे निवास स्थान पर पधारे और कहा कि आपका ही सुझाव था आप ही यह कार्य करें। हम प्रकाशित करवा देंगे। मैंने सहर्ष यह आज्ञा शिरोधार्य की। इसका मुख्य कारण मेरे विद्यार्थी जीवन के संस्कार हैं।

मुझे विद्यार्थी जीवन में ही जीवन चरित्र पढ़ने की विशेष रुचि रही है। पूज्यपाद स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की एक लेखमाला 'चिनगारियां' शीर्षक से मासिक सार्वदेशिक व साप्ताहिक रिफार्मर उर्दू में प्रकाशित हुई। तीन चार वर्ष पश्चात् उसमें से कुछ लेख पुनः वैदिक धर्म, साप्ताहिक उर्दू में भी छपे। इस लेखमाला में उन आर्य पुरुषों की जीवनियाँ छपीं जो विख्यात नेता नहीं थे धुरन्धर विद्वान, ओजस्वी व्याख्ताता, प्रसिद्ध साहित्यकार भी न थे। पर थे सच्चे समाज सेवी। वीर, निर्भीक, निस्वार्थी व परमार्थी। यह उन आर्य पुरुषों की जीवनियां थीं, जो समाज के लिए जान जोखम में डालकर आगे आए। मुझ पर इस लेखमाला का अमिट व गहरा प्रभाव पड़ा। आज भी सोचता हूं कि बड़ों को तो सब पूछते व पूजते हैं। चाहिए भी परन्तु यदि दूरदर्शी सुधीर वीर संन्यासी उन ज्ञात व अज्ञात

प्रसिद्ध आर्य दानी सेठ चाननलाल जी आहूजा

पुरुषों की जीवनियां न लिखते तो आर्यसमाज अपने कीर्ति भवन की नींव में चुनाए गये इन पत्थरों को भूल गया होता।

स्वामी जी महाराज की यह लेखमाला मेरे लिए प्रेरणा की सम्पदा बन गई। मैंने भी संकल्प किया कि मैं भी ऐसे कर्मवीरों की जीवनियां लिखूंगा। इस पावन प्रेरणा के फल स्वरूप मैंने वैदिक धर्म में दक्षिण के धर्मवीर श्री गणपत-राव जी कथले आदि कई सज्जनों की जीवनियां लिखीं। अद्वितीय शास्त्रार्थी पं० मनसाराम जी वैदिक तोप की जीवनी लिखने का सौभाग्य भी सर्वप्रथम मुझे ही प्राप्त हुआ। स्वतन्त्रता संग्राम में जीवित जलाए गये चार आर्यों की (हैदराबाद राज्य के) जीवनियां भी सर्वप्रथम मैंने ही लिखीं।

चिनगारियां, पढ़कर जो सद्भाव व संकल्प उठे थे उस का परिणाम नींव के पत्थर महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया का यह जीवन चरित्र है। इसे भी उसी लेखमाला की कड़ी समझा जाए। इसी लिए अपनी इस कृति को उसी आदर्श आर्य नेता, प्रत्येक संग्राम में अविराम बढ़ने वाले, अडिग निश्चय वाले, बलिदानी सेनानी की पुण्य स्मृति में समर्पित कर रहा हूं।

मैं यहां यह उल्लेख कर देना भी अनिवार्य समझता हूं कि इस पुस्तक के लेखक का महाशय जी से कई बातों पर मतभेद भी था। मेरा विश्वास है कि यदि वह आर्य-समाज के क्षेत्र में ही कार्य करते तो देश धर्म का अधिक हित हो सकता था। वह इस क्षेत्र में आर्यसमाज को जन-आंदोलन बना सकते थे। हिसार व रोहतक ज़िला की भाँति यहां भी आर्यसमाज उनके सद्प्रयत्नों से सतेज संगठन होता।

इस जीवन-चरित्र में साहित्यकारों की दृष्टि से कई त्रुटियां होंगी। मैं भी अल्पज्ञ जीव हूं। अपनी योग्यता की सीमाओं को जानता हूं, फिर भी अपने पूज्य आचार्य युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महाराज की राह पर तिल तिल जलने वाले साहस के अंगारे ऋषि के शिष्यों में सर्वप्रथम वीर गति पाने वाले, अपने एकमेव पुत्र सुखदेव की आहूति तक दे देने वाले वीरवर लेखराम का अन्तिम आदेश मुझे लेखनी उठाने और चलाने को बाधित करता रहता है। नाम की चाह से नहीं कार्य की पूर्ति के लिए लिखता हूं। अर्थ की सिद्धि के लिए नहीं अपितु लक्ष्य की सिद्धि से प्रेरित हो कर लिखता हूं।

यह जीवन चरित्र एक क्षेत्रीय नेता का है परन्तु इसके पढ़ने से आर्यसमाज, राष्ट्र भाषा व देश के इतिहास की भी

कुछ विशेष घटनायें इसमें मिलेंगी। आने वाली पीढ़ियां इस सामग्री का अवश्य लाभ उठायेंगी। यह मुझे विश्वास है। अन्त में उन सब सज्जनों का आभार मानता हूं जिन्होंने पुस्तक की सामग्री एकत्रित करने में सहयोग दिया। विशेष रूप से श्री योगेन्द्रपाल जी गोयल पत्रकार, महाशय धनश्याम दासजी. सेठ चाननलाल जी आहूजा, श्री अशोक आर्य, माता कौशल्या देवी, श्री पं० ईश्वरचन्द्र जी; प्रो० सतोशकुमारी आदि का और पुस्तक के प्रकाशन की समस्त देख रेख के लिए मैं मान्य जावेद जी का ऋणी हूं।

जो जन्म जुटा कर के जग में जीवन को सफल बनाते हैं।
जो जन हित जीते मरते हैं हम गीत उन्हीं के गाते हैं॥

राजेन्द्र जिज्ञासु प्राध्यापक
दयानन्द कालेज अबोहर

श्रावणी पर्व
२०२७

कुछ विशेष घटनायें इसमें मिलेंगी। आने वाली पीढ़ियां इस सामग्री का अवश्य लाभ उठायेंगी। यह मुझे विश्वास है। अन्त में उन सब सज्जनों का आभार मानता हूं जिन्होंने पुस्तक की सामग्री एकत्रित करने में सहयोग दिया। विशेष रूप से श्री योगेन्द्रपाल जी गोयल पत्रकार, महाशय धनश्याम दासजी. सेठ चाननलाल जी आहूजा, श्री अशोक आर्य, माता कौशल्या देवी, श्री पं० ईश्वरचन्द्र जी; प्रो० सतोशकुमारी आदि का और पुस्तक के प्रकाशन की समस्त देख रेख के लिए मैं मान्य जावेद जी का ऋणी हूं।

जो जन्म जुटा कर के जग में जीवन को सफल बनाते हैं।
जो जन हित जीते मरते हैं हम गीत उन्हीं के गाते हैं॥

राजेन्द्र जिज्ञासु प्राध्यापक
दयानन्द कालेज अबोहर

श्रावणी पर्व
२०२७

ओ३म्

"मैं महाशय मुकुन्दलाल जी सेतिया के विषय
में आप को क्या बताऊं ? क्या कहूं कि वह
क्या थे ? बस मैं तो यह जानता
हूं कि उन के निधन से
मेरी एक भुजा कट
गई है ।"

श्रद्धेय आचार्य नारायण दास जी

महाशय मुकन्दलाल जी युवावस्था में

महाशय मुकन्दलाल जी युवावस्था में

१
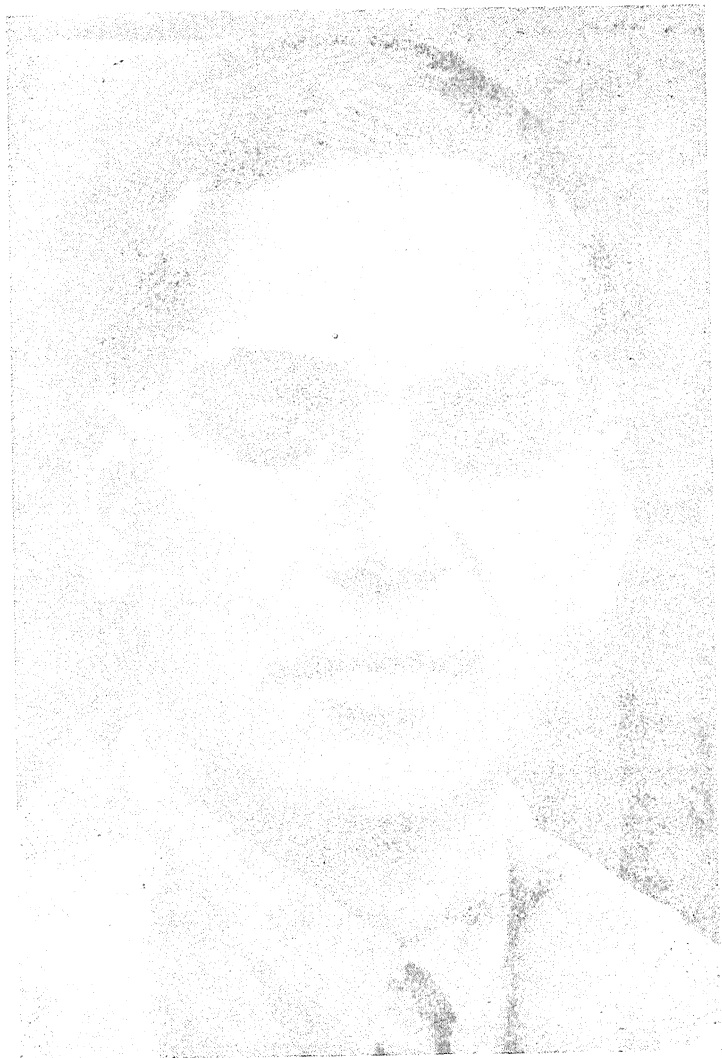
जन्म स्थान व कुल परिचय

पंजाब हरियाणा के सीमा विवाद को सुलझाने के लिए २९. १. ७० को भारत सरकार ने जो निर्णय दिया है उस के अनुसार फ़ाज़िल्का क्षेत्र के १०७ हिन्दी भाषी ग्राम, फ़ाज़िल्का तथा अबोहर नगरों का हरियाणा में विलय होगा। अबोहर एक ऐतिहासिक नगर है। ऐतिहासज्ञों का मत है कि यह नगर बारहवीं शती में बसाया गया था। इस नगर को राजा शालिवाहन के वंशज श्री अभयराज भट्टी ने बसाया था। उसी के नाम पर इस नगर का नामकरण हुआ। इसका प्राचीन नाम अभयगढ़ है।

लगभग सवा छः सौ वर्ष पूर्व एक मिस्री यात्री इब्नबतूता भारत में आया। उस ने अपने यात्रा-विवरण में लिखा है, "मुलतान से चलकर हम अबोहर नामक नगर में पहुँचे। यह वास्तव में भारत का सर्वप्रथम नगर है। यह नगर छोटा है परन्तु रमणीक है और मकान भी सुन्दर बने हुए हैं। यहां नहरें व वृक्ष प्रचुर मात्रा में हैं।" आज भी खण्ड-खण्ड खण्डहरों के चिह्न इस नगर के प्राचीन गौरव की मूक साक्षी दे रहे हैं।

भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा पर स्थित यह नग
यद्यपि आज एक कोने में पड़ता है तथापि हरियाणा, पंजा
व राजस्थान के कई प्रसिद्ध नगरों के निकट पड़ता है
कपास की यह बहुत बड़ी मंडी है। व्यापार का महान
केन्द्र होने के कारण यह उत्तर पश्चिमी भारत का एक समृद्ध
नगर है। यह क्षेत्र अपनी सम्पन्नता के लिए तो प्रसिद्ध है
ही, इस क्षेत्र ने भूत और वर्तमान काल में देश के धार्मिक
सामाजिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक जीवन में भी विशेष
योगदान दिया है। इस वीर-प्रसू भूमि ने देश को कई
छोटे बड़े सपूत दिये हैं। वीरों की खान इस मरु भूमि को
बीसवीं शताब्दी के विख्यात भारतीय राजनीतिज्ञ तथा अर्थ-
शास्त्री सर मनोहर लाल को जन्म देने का गौरव प्राप्त
है। राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के सेनानी, निर्भीक
आर्य नेता, सर्वत्यागी लाला सुनाम राय जी एम० ए० भी
इस भूमि के लाल थे। १९६५ ई० में भारत रक्षा के लिए
वीर गति पाने वाले हुतात्मा मेजर सुरेन्द्र प्रसाद (वीर चक्र
प्राप्त कर्त्ता) की जन्म स्थली भी यही क्षेत्र है। तपापूत
स्वामी केशवानन्द की कर्मभूमि भी यही क्षेत्र है। पूज्य
महात्मा हंसराज के डी० ए० वी० आन्दोलन की ज्ञान
गंगा की निर्मल धारा को जब एक तपस्वी यज्ञमूर्ति आचार्य
नारायण दास ग्रोवर इस क्षेत्र में लेकर आया तो इस क्षेत्र

के उदार-हृदय विद्या-प्रेमी दानियों ने ऐसा सहयोग दिया कि इतिहास ही बदल गया। इस क्षेत्र को अब डी० ए० वी० आन्दोलन पर गर्व है और डी० ए० वी० आन्दोलन को इस क्षेत्र पर गर्व है।

इस क्षेत्र में एक छोटा सा गांव सप्पां वाली है। सप्पां वाली ग्राम के लाला भीला मल जी के सुपुत्र लाला क्षेमचन्द के घर असोज मास विक्रम संवत १९६५ तदनुसार १९०८ ई० में एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। यही बालक आगे चलकर महाशय मुकन्द लाल सेतिया के नाम से चमका। उस काल की प्रथा के अनुसार महाशय जी की माता जय देवी गर्भवती होने के पश्चात् अपने पितृ-घर चली गई। महाशय जी का जन्म अपने ननिहाल के घर ग्राम लुण्डेवाला तहसील मुक्तसर ज़िला फिरोजपुर में हुआ।

महाशय जी के ६ भाइयों में ला० मुन्शी राम जी, ला० कर्म चन्द जी, ला० कुन्दन लाल जी, ला० किशोर चन्द जी जीवित हैं। श्री लक्ष्मण दास जी व श्री लाजपत-राय जी का देहान्त हो चुका है। एक बहिन कर्म बाई की भी मृत्यु हो चुकी है। एक बहिन श्रीमती परमेश्वरी बाई जीवित है। महाशय जी का परिवार आर्थिक दृष्टि से

के उदार-हृदय विद्या-प्रेमी दानियों ने ऐसा सहयोग दिया कि इतिहास ही बदल गया। इस क्षेत्र को अब डी० ए० वी० आन्दोलन पर गर्व है और डी० ए० वी० आन्दोलन को इस क्षेत्र पर गर्व है।

इस क्षेत्र में एक छोटा सा गांव सप्पां वाली है। सप्पां वाली ग्राम के लाला भीला मल जी के सुपुत्र लाला क्षेमचन्द के घर असोज मास विक्रम संवत १९६५ तदनुसार १९०८ ई० में एक पुत्र रत्न ने जन्म लिया। यही बालक आगे चलकर महाशय मुकन्द लाल सेतिया के नाम से चमका। उस काल की प्रथा के अनुसार महाशय जी की माता जय देवी गर्भवती होने के पश्चात् अपने पितृ-घर चली गई। महाशय जी का जन्म अपने ननिहाल के घर ग्राम लुण्डेवाला तहसील मुक्तसर ज़िला फिरोजपुर में हुआ।

महाशय जी के ६ भाइयों में ला० मुन्शी राम जी, ला० कर्म चन्द जी, ला० कुन्दन लाल जी, ला० किशोर चन्द जी जीवित हैं। श्री लक्ष्मण दास जी व श्री लाजपत-राय जी का देहान्त हो चुका है। एक बहिन कर्म बाई की भी मृत्यु हो चुकी है। एक बहिन श्रीमती परमेश्वरी बाई जीवित है। महाशय जी का परिवार आर्थिक दृष्टि से

प्रतिष्ठित था। बाल काल में बड़े लाड प्यार से पा
पोषण हुआ।

उनका जन्म ऐसे समय हुआ जब देश में उथल-पु
मची हुई थी। यह वह समय था जब भारत में क्रान्ति
ज्वाला धधक रही थी। यह युग 'लाल' 'बाल' 'पाल'
युग था। यह युग राजर्षि श्रद्धानन्द का
था। यह युग बलिदानी मदनलाल धींगरा, कन्हाई ल
अरविन्द घोष का युग था। यह युग सावरकर बन्धुओं
उदय का युग था। यह वह युग था जब लोकमा
तिलक को 'स्वराज्य माझे जन्मसिद्ध अधिकार आहे'

'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' की सिंह गर्ज
करने पर छः वर्ष का देश निकाला प्राप्त हुआ। राष्ट्रि
नवजागरण के अग्रदूत राष्ट्र केसरी लाला लाजपतराय ए
वीरवर अजीत सिंह देश प्रेम के अपराध के कारण दे
निकाले का दण्ड भुगत कर अभी लौटे ही थे। यह का
कराल उन दिनों अपना विकराल रूप धारण करके आ
समाज को अपने गाल में विलीन करने पर तुला हुआ था
आर्यों के सिर पर महानाश की दामिनी दमक रही थी
पटियाला की रजवाड़ा-शाही और अंग्रेज़ सरकार ने इस
काल में आर्यों के विरुद्ध दमन-चक्र चलाया था
स्वाधीनता के मतवाले, प्राणों के निर्मोही मातृवेदी पर ब

(खड़े) डा० कर्मचन्द जी गोतिया, महाशय जी, श्री कृष्ण लाल जी
(बैठे हुए) माता कौशल्या देवी जी, श्रीमती पूर्णिमा जी 'विनोद', श्री विनोद कुमार
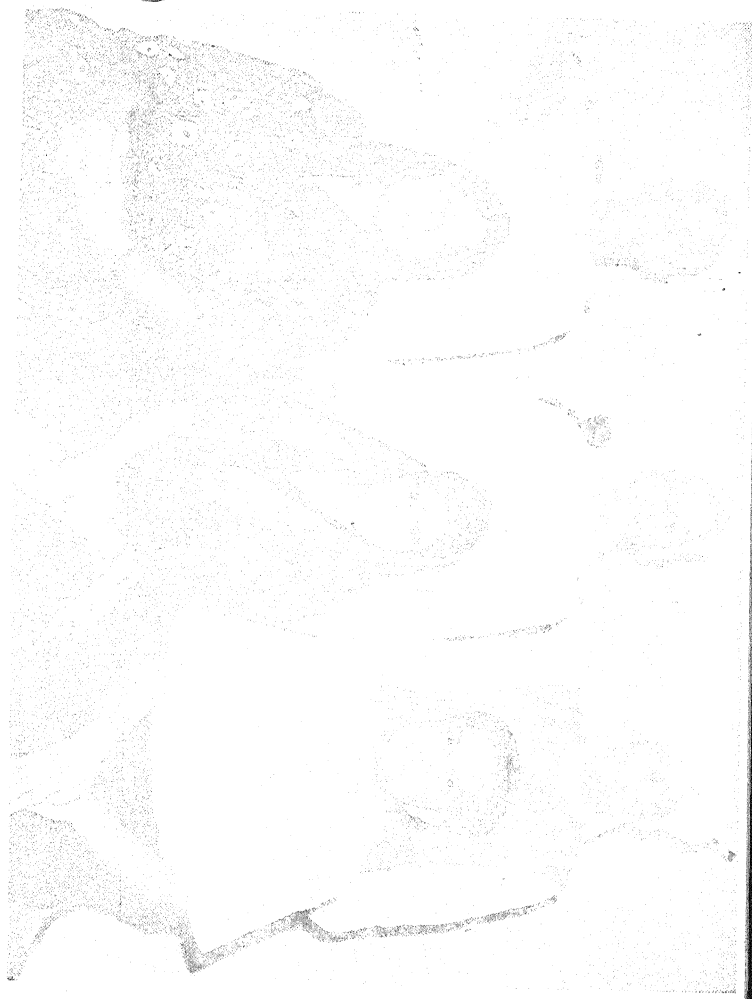
बढ़ कर सर्वस्व न्योछावर करने आगे ग्रा रहे थे। गोली गोलों की गर्जन और बम्बों के विस्फोट से मातृ-वन्दना की जा रही थी। राष्ट्रीय नवजागरण की उस वेला में कर्मवीर मुकन्दलाल सेतिया का जन्म हुआ था।

युग का प्रभाव उन पर भी पड़ा। बाल काल से ही उनकी प्रवृत्तियां अच्छी थीं। उनकी रुचि धर्मकर्म व सामाजिक कार्यों में थी। वह बाल्य ग्रवस्था में ग्रपने बहिन भाईयों से लड़ाई झगड़ा नहीं करते थे। उन के परिवार में ग्रभक्ष्य पदार्थों का सेवन होता था। सुरापान धूम्रपान भी होता था। यह पूर्व जन्म के संस्कारों का फल ही समझना चाहिए कि बालक मुकन्द लाल को शैशवकाल से ही अभक्ष्य भक्षण से घोर घृणा थी।

बाल हकीकत का जीवन चरित्र पढ़ने से उन में धर्म भावना दृढ़ हुई। उनकी ग्रारम्भिक शिक्षा आर्य प्राईमरी स्कूल अबोहर में हुई। प्राईमरी पास करके वह नगर-पालिका के मिडल स्कूल में प्रविष्ट हुए। उन्होंने हिन्दी विषय लेकर मैट्रिक की परीक्षा दी। उन दिनों हिन्दी विषय लेने वाले छात्रों की संख्या बहुत थोड़ी होती थी महाशय जी तब तक आर्य विचार धारा से विभूषित हो चुके थे। ग्रतः उन्होंने अपने ग्रार्यत्व का परिचय देते हुए राष्ट्रभाषा को भी एक विषय चुना। यद्यपि वह एक

अनुशासन-प्रिय विद्यार्थी थे तथापि अपने धार्मिक अधिका
की रक्षा के लिए वह विद्यार्थी जीवन से ही सजग होक
लड़ते थे। स्कूल के मुख्याध्यापक अब्दुल्ला हाशमी ज
स्कूल में प्रार्थना कराते समय छात्रों को इस्लामी ढंग
खड़ा होने का आदेश देते थे। मुकन्दलाल जी अपनी बा
पर डट गये। कुछ मित्रों के साथ उन्होंने मुसलमानी ढं
से प्रार्थना करने से इन्कार कर दिया। यह उनका प्रथ
संघर्ष था और वह इस में सफल हुए।

महाशय जी की ८० वर्षीय वृद्धा माता जयदेवी ज
ने सुनाया कि जब वह आठ दस वर्ष के थे तो एक दि
उनको पाठशाला में अध्यापक ने बहुत पीटा। ममता
वशीभूत माता जी ने कहा कि मैं नहीं पढ़ाती। वह मुकन्
लाल को साथ लेकर लुण्डेवाली अपने पितृकुल जाने लगीं
बालक मुकन्दलाल ने अपनी माता जी से कहा यदि अध्या
पक ने मारा है कोई बात नहीं। मैं तो पढ़ूंगा। अध्यापक
तो पीटा ही करते हैं।

२
आर्यसमाजी कैसे बने ?

महाशय जी ने मुझे स्वयं एक बार अपने आर्यसमाजी बनने की कहानी सुनाई थी ।

महाशय मोती राम जी किसी मुसलमान के प्रभाव में आकर इस्लाम स्वीकार करने की तैयारी कर चुके थे । वह मन और मस्तिष्क से मुसलमान बन चुके थे केवल विधिवत नाम आदि का परिवर्तन शेष था । इसी बीच उनको सिरसा जाना पड़ा । सिरसा में उनके मामा श्री नागर मल जी वैदिक धर्म ग्रहण कर चुके थे । श्री नागर मल ने श्री मोती राम जी पर ऋषिवर दयानन्द का रंग चढ़ा दिया । मोती राम आर्य धर्म का दीवाना बनकर अबोहर लौटा । मुल्ला जी देखते ही रह गये कि यह क्या हो गया । मोती राम जी की मुकन्दलाल जी से मैत्री थी ही । मोती राम जी के हृदय में वैदिक धर्म की ज्वाला धधक रही थी । उन्होंने यह अग्नि मुकन्दलाल के सीने में भी सुलगा दी । पवित्र वेद में बहुत सुन्दर ढंग से कहा गया है .—'**अग्निनाग्निः समिध्यते ।**'

अर्थात् अग्नि से अग्नि प्रज्वलित होती है। Life begets life.

आग्नेय पुरुष मोतीराम ने मुकन्दलाल को भी साहस का अंगारा, ऋषि मिशन का प्यारा व देश का दीवाना बना दिया। उन दिनों आर्यसमाजी बनने का अर्थ चार आठ आने मासिक चन्दा देकर आर्यसमाज के वार्षिक निर्वाचन के लिए मतदाता सूची में नाम अंकित करवाना नहीं था। उन दिनों आर्य समाजी बनने का अर्थ आठवें दिन समाज मन्दिर में दर्शन देना भी नहीं था। तब विद्रोह और विस्फोट का नाम आर्यसमाजी था। कर्मण्यता, पुरुषार्थ व परमार्थ का नाम आर्यसमाजी था। बेचैनी, विह्वलता, व्याकुलता और जागृति का नाम आर्यसमाजी था। पाप, ताप, दम्भ, द्वेष, अण्ड बण्ड पाखण्ड से जूझने वाले को आर्यसमाजी समझा जाता था। वेद ज्ञान की तिमिर नाशक रश्मियों के प्रकाश का प्रसार करने वाला ही वीर लेखराम की सेना का सैनिक समझा जाता था। तब यशस्वी हिन्दी लेखक श्री सुदर्शन का यह गीत समाजों में गाया जाता था :—

पराई आग में जलना मरीज़ों की दवा होना।
कोई सीखे दयानन्द से धर्म पै जां फ़िदा होना॥

महाशय मुकन्द लाल जी को आर्य समाजी बनाने वाले अबोहर
के भाई परमानन्द श्री महाशय मोतीराम जी आर्य

नज़र में मौत बस्ती हो भंवर में किश्ती फंसी हो।
लगाना वेद का चप्पू किनारे पार हो जाना ।।

प्रत्येक आर्यसमाजी तब चेतना की चिंगारी हुआ करता था। मुकन्दलाल इस में कोई अपवाद न था। उनके जीवन ने एक पलटा खाया। तरुणाई ने अंगड़ाई ली। अब वह परिवार के न रहे संसार के हो गये। वह व्यक्ति न रहे एक संस्था बन गये। वह अपने क्षेत्र के सार्वजनिक जीवन पर छा गये। उन के सार्वजनिक जीवन की चर्चा आरम्भ करने से पूर्व उनके पारिवारिक जीवन के विविध पहलुओं का दिग्दर्शन कराना आवश्यक एवं उपयोगी है। उनका सार्वजनिक रूप तो यशस्वी है ही अपने घर में भी वह अपने आदर्शों के अनुरूप अपना जीवन बिताने की सतत साधना करते रहे। क्योंकि उनका पारिवारिक जीवन भी उतना ही शिक्षाप्रद है जितना सामाजिक जीवन।

———

३
सेतिया जी परिवार में

महाशय मुकन्दलाल जी की भुआ श्रीमती धन्नो बाई विधवा होने के पश्चात्, पितृ-गृह में ही रहती थीं। बाल-काल से ही आपके मन में उत्कट सेवा भावना थी। अपनी विधवा भुआ जी के लिए आपके मन में बड़ा सन्मान था। श्रीमती धन्नो बाई को श्वास रोग था। रुग्ण भुआ की सेवा में आप सदा तत्पर रहते थे। जब कभी उन्हें खांसी का प्रकोप होता आप उसको औषधि बना कर देते।

अपनी माता जी के प्रति आपको अपने कर्त्तव्य का मृत्यु पर्यन्त ध्यान रहा। वृद्धा मां जब कभी अस्वस्थ होतीं तो आप दिन में दो तीन बार उनका पता करते। महाशय जी की माता जी अपने छोटे सुपुत्र महाशय कुन्दनलाल जी के घर ही रहती हैं। जब महाशय मुकन्दलाल स्वयं रुग्ण हो जाते तो आप अपने प्रिय भ्राता कुन्दनलाल जी के घर ही आकर ठहरते। कारण इसका यही था कि वह नहीं चाहते थे कि उनके रुग्ण होने पर उनकी वृद्धा जननी को उनका पता करने के लिए बार-

बार उनके घर आने का कष्ट करना पड़े ।

महाशय मुकन्दलाल जी वायु के समान गतिमान रहते थे । सामाजिक एवं व्यावसायिक कार्यों के लिए उन को प्रायः बाहर आना जाना पड़ता था। उनकी बूढ़ी माता ने बताया कि जब कभी वह बाहर से आते तो सर्व प्रथम अपनी माता की सेवा में उपस्थित होते । मां का कुशल क्षेम पूछ कर फिर किसी अन्य कार्य को हाथ में लेते । आजीवन उनका यह नियम रहा ।

अपने पिता श्री क्षेमचन्द जी के प्रति भी आप के हृदय में पूरा आदर भाव था। पिता जी की मृत्यु पर आपने अपने ग्राम सप्पां वाली में 'क्षेमचन्द पुस्तकालय' की स्थापना की । विद्या प्रेमी आर्य महाशय जी की दृष्टि में उनके पिता जी का यही सर्वोत्तम स्मारक हो सकता था। कई वर्ष तक यह पुस्तकालय ज्ञान उजाला देता रहा। कुछ वर्ष पूर्व आपने यह ग्रंथालय साहित्य सदन अबोहर को दान रूप में दे दिया ।

आर्यसमाजी कार्य-कर्त्ताओं की भाँति महाशय जी अपनी धुन के धनी थे । अपनी बात पर अड़ गये तो फिर अड़ गये । ऋषि दयानन्द जी महाराज के सैनिक अड़ियल भो होते हैं और प्रेमल भी। महाशय जी में यह दोनों ही गुण थे । अपने पारिवारिक जीवन में भी वह अड़ियल भी

थे और प्रेमल भी। उनके ज्येष्ठ भ्राता श्री मुन्शीराम जी की पत्नी श्रीमती आत्मा देवी जी ने बतलाया कि जब मेरा विवाह हुआ तब मुकन्दलाल की आयु १२ वर्ष के लगभग थी। बालक मुकन्दलालाल के सद्व्यवहार, प्रेमल स्वभाव व सेवा से मैं बहुत प्रभावित हुई। आपने बताया कि मेरे दूसरे देवर मेरी बोली के कारण मेरा उपहास उड़ाया करते थे। मुझे इस क्षेत्र की बोली भाषा नहीं आती थी। दुकान पर जाकर भी मेरे अन्य देवर मेरे शब्दों के कारण मुझ पर हंसा करते थे। मुकन्दलाल दुकान से आकर बुद्धिमान वयस्कों के समान मुझे समझाता कि यह शब्द न बोला करें इसके स्थान पर यह शब्द बोला करें। कोई शब्द न आये तो चुप ही रहना अच्छा है।

आपने बताया कि सेतिया परिवार तब ही बहुत बड़ा था। मैं दाल भाजी बनाने में भूल कर जाती, कभी कम कभी अधिक। इस पर मुझे बड़ी लज्जा आती पर मैं तब अनुभवहीन ही तो थी। बालक मुकन्दलाल छोटी ननद की भाँति मुझे कहता भाभी जी तुम कटोरी से माप कर दाल बनाया करो फिर भूल न होगी। मुकन्दलाल की सीख ने मुझे बहुत लाभ पहुँचाया।

परिवार के सब सदस्यों एवं सम्बन्धियों का कहना है कि वह रसना के दास न थे। जो मिल जाता सो खा

श्री ओमप्रकाश जी के विदेश जाने पर

श्री ओमप्रकाश जी के विदेश जाने पर

लेते । स्वाद के पीछे न जाते । सम्बन्धियों के जाते तो केवल एक दाल या भाजी से भोजन करते थे । कहते थे कि दूसरी सब्ज़ी मत बनाओ । दूसरी दूसरे दिन खिला देना । विवाहों पर धनी परिवारों में अन्न, फल, मिठाई आदि की भूठ छोड़ना बड़प्पन का चिह्न समझा जाता है । महाशय जी इसका सदैव विरोध करते थे और अपने कुटुम्ब वालों को भी इस नियम के पालन के लिये विवश करते थे ।

अपने खान-पान में वह अचार, खट्टाई, मिर्च, मसाले आदि का प्रयोग नहीं करते थे । किया भी तो नाम-मात्र का ।

वह विवाह के समय होने वाली कुरीतियों का सदैव विरोध करते थे । विवाह के समय वर पक्ष को अश्लील गालियां (सिठ्ठनी के रूप में) देना भी एक रिवाज बन गया है । महाशय जी इसके उन्मूलन का पूरा यत्न करते थे और अपने परिवार में ऐसा न होने देते थे । इसी नियम का उल्लंघन करने के कारण एक बार वह अपनी साली से भी रूठ गये ।

गालियों के स्थान पर वह विवाह के अवसर पर आर्य साहित्य भेंट करने की सब को प्रेरणा किया करते थे ।

महाशय जी के भाई ला० लाजपतराय जी का निधन

हो गया । भाई के निधन पर उन्होंने उनके घर नित्य यज्ञ-हवन की व्यवस्था कराई । श्री पं० ईश्वर चन्द्र जी की माता कौशल्या (विधवा श्री लाजपत जी) को यज्ञ-हवन करवाने आते रहे । महाशय जी नहीं चाहते थे कि उनकी भाभी अब पति के निधन पर रोती ही रहे । उसकी शान्ति के लिये उन्होंने हवन व वैदिक प्रवचन की यह व्यवस्था की ।

अपने भाई की मृत्यु के पश्चात् महाशय जी अपने भाई के परिवार का विशेष ध्यान रखते थे । माता कौशल्या जी ने बताया कि महाशय जी जब भी फतहाबाद किसी काम जाते तो सिरसा में अपनी भतीजी सुदेश जी (सुपुत्री श्री लाजपत जी) को अवश्य मिलकर आते थे । महाशय जी की अपनी पुत्री सन्तोष जी डबवाली मण्डी में विवाहित है । उसको तो छोड़ भी आते परन्तु दिवंगत भाई की पुत्री को मिले बिना कभी न आते ।

श्री लाजपतराय जी का परिवार व श्री किशोर चन्द जी का परिवार एक ही भवन में रहते हैं । महाशय जी यदा कदा सेवकों से पूछते रहते थे कि माता कौशल्या व किशोर चन्द जी की पत्नी परस्पर लड़ती तो नहीं । अपने दिवंगत भाई के परिवार के प्रति इतना प्यार आज के युग में कोई साधारण बात नहीं ।

माता कौशल्या जी ने बताया कि मेरे बच्चों की देखभाल तो वह करते ही थे। मेरे बच्चों के खान-पान का भी ध्यान रखते थे। जो वस्तु अपने बच्चों के लिये लाते वही वस्तु उतनी ही मात्रा में मेरे बच्चों के लिये लाते। मेरी सम्पत्ति का भी महाशय जी पूरा ध्यान रखते थे।

श्री लाजपतराय जी की मृत्यु के पाँच मास पश्चात् उनकी पुत्री सरोज का जन्म हुआ। महाशय जी कहा करते थे कि इसकी बात न मोड़ूंगा। सरोज ने कलकत्ता में M. B. B. S. की शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। महाशय जी दूर भेजने के पक्ष में न थे। परन्तु कह चुके थे कि 'इसकी बात न टालूंगा' इसलिए उसको वहाँ भेजने की अनुमति दे दी।

महाशय जी समय समय पर श्री लाजपतराय जी के परिवार की आवश्यकताओं का पता करते रहते थे। जिस वस्तु की आवश्यकता का पता चलता, आप श्री किशोर चन्द जी को कहकर भिजवा देते।

महाशय जी राष्ट्रीय संघ की १९४८ ई० की धर पकड़ में जेल गये। परिवार के लोग उनको स्थानीय थाना में मिलने गये। लाजपत जी की पुत्री कान्ता भी थाना में ताया जी को मिलने गई। महाशय जी को थाना से किसी

कारागार में भेज दिया गया। अल्पायु कान्ता अगले दिन स्वयमेव थाना चली गई। थाने वालों ने बच्ची को पहचान लिया और घर पहुँचा दिया। घर में से किसी ने यह बात पत्र में उनको लिख दी। कारागार में पत्र पढ़कर वह फूट-फूट कर रोये। कारागार में शेष संघी बंधु महाशय जी की यह अवस्था देखकर पूछने लगे कि हुआ क्या? सबको चिन्ता हुई कि घर में मंगल कुशल तो है? पूछने पर महाशय जी ने यह घटना बताई। अपने भाई की पुत्री के स्नेह से द्रवित होकर वह इतने अधीर हो गये थे।

एक बार कारागार में महाशय जी की माता, उनके भाई किशोर चन्द तथा भतीजी सरोज मिलने गये। कारागार अधिकारियों ने कहा कि केवल आपके अपने बच्चे आप से भेंट कर सकते हैं। महाशय जी चाहते तो असत्य बोल कर छोटी बच्ची से मिल लेते परन्तु आपने स्पष्ट कहा कि सरोज मेरे दिवंगत भाई की पुत्री है। मिलाना है तो मिला दो नहीं तो न मिलाओ। भेंट करा दी गई। पौराणिक संस्कारों के कारण लोग गुरुवार के दिन पुत्रियों को सुसराल नहीं भेजते। महाशय जी अपने परिवार में इस भ्रम-भय का विरोध करते और यह कुप्रथा मिटा दी। वीरवार के दिन भी सेतिया परिवार में कन्या को सुसराल भेजने का साहस पैदा कर दिया।

महाशय जी अपने परिवार, सम्बन्धियों व इष्ट-मित्रों को शुभ कार्यों के अवसर पर यज्ञ-हवन की प्रेरणा देते रहते। जब कभी उनके घर यज्ञ होता तो वह दूसरों को ही आगे बिठाते। स्वयं पीछे रहते।

अपने सेवक धन्ने का व चैकू का विशेष ध्यान रखते। उनके खान-पान की भी उनको चिन्ता रहती थी। चैकू भोला है इस लिये उस से विशेष स्नेह करते थे।

वह अपने परिवार में बच्चों को शिष्टाचार के नियम सिखाने में विशेष रुचि लेते थे। बड़ों का आदर करना सिखाते। नमस्ते करना, बड़ों को श्रीमान् जी कहकर सम्बोधित करना आदि शिष्टाचार के पाठ पढ़ाते। बातचीत में परकीय भाषा अंग्रेज़ी के प्रयोग के वह विरोधी थे। बच्चों को भी यही सिखाते। पत्र-व्यवहार आर्य भाषा (हिन्दी) में करने की प्रेरणा बच्चों को भी देते थे। परिवार में बालक बालिकाओं को अश्लील पत्रिकायें पढ़ने से बचने की प्रेरणा देते थे। सिनेमा जाने से भी बच्चों को रोकते थे। बच्चों को देश धर्म पर बलिदान होने वालों की प्रेरणाप्रद घटनायें सुनाने में उनको विशेष आनन्द अनुभव होता था।

सेतिया जी के पिता जी के दो विवाह हुए थे। लाला क्षेम चन्द जी की पहली पत्नी से दो पुत्र थे। लाला

लक्ष्मण दास जी व लाला मुन्शी राम जी। परिवार में सम्पत्ति के बटवारे का समय आया तो सेतिया जी ने अपने मां जाये भाइयों से कहा कि बड़े भाई लाला लक्ष्मण दास जी व ला० मुन्शी राम जी सम्पत्ति में भाग दें तो उचित, न दें तो भी कोई बात नहीं। उनके मन में सम्पत्ति के लिए लालसा थी ही नहीं। यही कारण था कि इतने बड़े कुल में प्यार का तार न टूटा।

अनुपम त्याग का एक उदाहरण

महाशय जी के बड़े भ्राता कर्मचन्द जी ने बताया कि जब उन की पैतृक सम्पत्ति का बटवारा हुआ तो जिस भाग को उन में से कोई भाई भी लेने को तय्यार न था, महाशय जी ने स्वेच्छा से उसे स्वीकार किया। परिवार को स्नेह सूत्र में पिरोये रखने के लिए महाशय जी का यह त्याग उन के उच्च नैतिक स्तर का परिचय देता है। त्याग के और आदर्शवाद के राग गाना और बात है और समय आने पर उदाहरण प्रस्तुत करना एक और बात है। महाशय जी की कथनी और करनी में कितना घनिष्ट सम्बन्ध था, इस का पता उपरोक्त घटना से मिलता है।

परिवार व समाज

महाशय जी ने सामाजिक कार्यों के लिए अपने
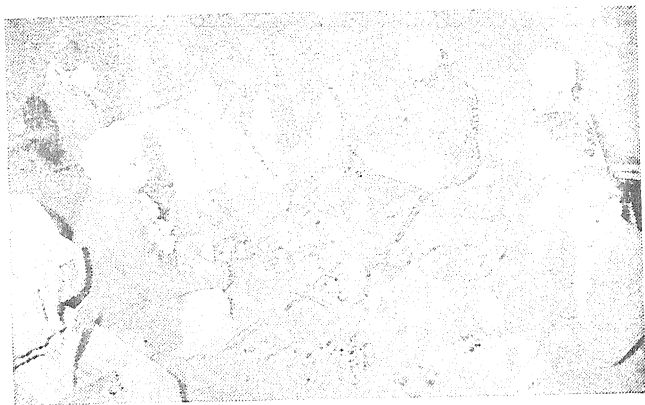
श्री लाला कर्मचन्द जी सेतिया के कारखाना के उद्घाटन के समय हवन-यज्ञ पर
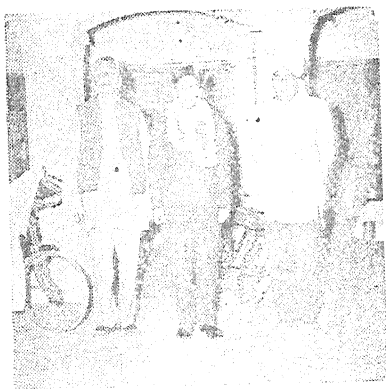
श्री विनोद के अमरीका जाने पर

परिवार के हितों को कहां तक क्षति पहुंचाई है, यह लेखनी सम्भवतः न बता सके। यहां इस का उल्लेख उचित व लाभप्रद भी नहीं। महाशय जी ने एक बार अपने परिवार एवं भाईयों के प्रति कृतज्ञता का प्रकाश करते हुए मुझे कहा, यह मेरे भाईयों का सौजन्य है कि मेरी बात मान लेते हैं और मुझे सामाजिक कार्यों में अत्यधिक समय देने से रोकते टोकते नहीं। आचार्य ग्रोवर जी को एक दिन मैंने महाशय जी के ये शब्द बताए तो उन्होंने कुछ इस प्रकार टिप्पणी की कि "परिवार की कृपा तो है ही यह महाशय जी की भी तो मस्ती है जिन्होंने अपना जीवन इस प्रकार का बना लिया है। वह सदा मस्त रहते हैं।"

४

आर्य्य समाज में

जैसा कि पूर्व बताया जा चुका है कि सेतिया जी बाल्य काल से ही धार्मिक वृत्ति के थे। जब आर्य समाजी बने तो जी-जान से आर्य समाज सेवा में जुट गये। उनको प्रति-क्षण लोक सेवा की धुन लगी रहती थी। जब विवाह के बंधन में बंध गये तो भी सेवा भाव में किसी प्रकार की कोई न्यूनता न आई। उनके पिता जी भी उनको सार्व-जनिक कार्यों में भाग लेने से नहीं रोकते थे। वैदिक धर्म के प्रकाश को फैलाने के लिए आपने आर्य कुमार सभा की स्थापना की। इस कार्य में उनके कई सहयोगी थे। सेतिया जी ने कुमार सभा के संगठन को तेजस्वी बनाने के लिये प्रशंसनीय कार्य किया। अबोहर की आर्य कुमार सभा की सारे प्रदेश में धाक थी। आर्य कुमार सभा में प्रविष्ट होकर अनेक लड़कों ने संध्या-हवन व वैदिक सिद्धान्तों की

शिक्षा प्राप्त की । बालकों के जीवन निर्माण में इस संस्था ने सक्रिय कार्य किया । अबोहर के कई प्रमुख व्यक्तियों ने जन-सेवा के प्रथम पाठ श्री महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया के मार्ग-दर्शन में चलने वाली आर्य कुमार सभा में ही पढ़े ।

आर्य कुमार सभा के अतिरिक्त आपने आर्य युवक सभा व आर्य युवक दंगल की स्थापना की । आर्य युवक सभा ने भी वेद-ज्योति के प्रसार के लिए स्तुत्य सेवायें कीं । युवकों में देश सेवा, धर्म सेवा की भावनाएं कूट-कूट कर भरीं । युवकों को भ्रम जाल को तार-तार करने की प्रेरणा यहां से मिलती रही । युवकों को निर्भय होकर सेवा पथ पर बढ़ने का प्रशिक्षण मिलता रहा ।

वैदिक धर्म मानव की सर्वांगीण उन्नति का उपदेश देता है। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने इसी लिए शारीरिक उन्नति पर विशेष बल दिया है। शारीरिक उन्नति के आर्ष आदेश को मूर्त रूप देने के लिए आपने आर्य युवक दंगल की स्थापना की । इस संस्था ने भी समय की मांग को पूरा किया । सच तो यह है कि जाति-सेवा का कोई भी तो क्षेत्र ऐसा नहीं जिस में सेतिया जी ने कार्य न किया हो । युवकों के चरित्र-निर्माण के लिए

आर्य युवक दंगल एक सजीव संस्था सिद्ध हुई। आर्य युव
दंगल अपने में कोई अलग संस्था न थी। उस यु
में अंग्रेज़ सरकार की कूट-नीति के कारण मुस्लिम साम्प्र
दायिकता देश में उभर रही थी। गांधी जी की मुस्लि
पोषक नीति ने मुस्लिम लीगी जनून को और अधि
प्रोत्साहन दिया। शिखा सूत्र धारियों में दीनता हीनत
की भावना बढ़ रही थी। देश भर में मुस्लिम लीगी दं
कर रहे थे। हिन्दु सर्वत्र पिट रहे थे। देवियों के अपहर
व बलात्कार की घटनाएं दिन प्रति दिन बढ़ रही थीं
मालाबार में हिन्दुओं पर अमानुषिक अत्याचार ढाए ग
सहस्रों बलात् मुसलमान बनाये गये थे। सहस्रों मारे ग
किसी को भी उनको सहायता करने का साहस न हुआ
कांग्रेस को तो इतना भी साहस न हुआ कि अन्यायी क
अन्यायी कह सके। गांधी जी ने भी अपनी मुस्लि
पोपक नीति के प्रकाश का अच्छा अवसर पाकर कह
'......brave God fearing Moplahs who were fighting
for what they consider as religion and in a manner
which they consider as religious." साम्प्रदायिकत
कहकर मुस्लिम को सिर पर चढ़ा दिया। उस समय
हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज व महात्मा जी ने
दीन दुखियों की व देवियों की पुकार सुनी। आर्यवीर शीश

तली पर धर कर मालाबार पहुंचे। पक्षपाती इतिहासकार भले ही उपेक्षा कर रहे हैं तथापि आर्यसमाज की गौरवमयी सेवाओं की कहानी भुलाई नहीं जा सकती।

महान् श्रद्धानन्द नित्य प्रति की लीगी गुण्डागर्दी देखकर व्याकुल हुए। वह राष्ट्रीय एकता के सन्देश-वाहक थे। परन्तु राष्ट्रीय एकता कोई One way Traffic तो है नहीं। एक वर्ग लूट-मार, रक्तपात व रक्तपान करे और दूसरे वर्ग को शान्ति, अहिंसा व सहिष्णुता के आत्मघाती उपदेश दिये जाएं। स्वामी जी महाराज ने दानवता का नग्न नृत्य रोकने के लिये देश भर में अखाड़ों की स्थापना करवाई। शिखा सूत्रधारियों को स्वस्थ नीरोग व बलवान बनने की प्रेरणा दी। डा० अन्सारी जैसे मुसलमान नेताओं ने स्वामी जी से इस सम्बन्ध में कुछ प्रश्न किये तो स्वामी जी ने उत्तर में कहा कि लोहे के दो टुकड़े तभी जोड़े जा सकते हैं जब दोनों ही गर्म किये जाएं। एक गर्म हो और दूसरा ठण्डा तो जोड़ कैसे लगे? मुसलमान संगठित व बलवान हैं। हिन्दु मुस्लिम एकता ढोंग है जब तक हिन्दु निर्बल है। दक्षिण भारत में भी हुतात्मा भाई श्यामलाल जी के उत्साह से स्थान स्थान पर व्यायाम शालाओं की स्थापना हुई। इस से आत्मविश्वास पैदा हुआ। देश का हित हुआ। महाशय मुकन्द लाल जी सेतिया का आर्य

युवक दंगल भी इसी राष्ट्र व्यापी आन्दोलन की एक कड़ी था।

सेतिया जी एक ऐसे व्यक्ति थे जो कार्य के बिना रह नहीं सकते थे। वह स्वभाव से पुरुषार्थी, परमार्थी व कर्मठ थे। पदलोलुपता उन को छू नहीं सकी। वह ऐसे व्यक्ति न थे जो पद के बिना मरने लगते हैं। अनेक सभा संस्थाओं ने उनकी सेवाओं से लाभ उठाया। संस्थायें उनको अधिकारी बना कर गौरवान्वित हुईं। आर्य ससाज के वह मृत्यु पर्यन्त सदस्य रहे। आर्य समाज के रिकार्ड से पता चलता है कि १९४१ ई० में वह समाज के मन्त्रो निर्वाचित हुए। इस से पूर्व भी कभी वह आर्य समाज के पद-अधिकारी बने, इसका निश्चित रूप से कोई पता नहीं चल सका।

१९४२-४३ ई० में वह आर्य पुत्री पाठशाला के व्यवस्थापक चुने गये। १९५४ ई० में वह आर्य समाज के उप प्रधान निर्वाचित हुए। १९५५ ई० से १९५८ ई० तक वह आर्य पुत्री पाठशाला के विविध पदों को सुशोभित करते रहे। १९६०, १९६२ ई० में तथा पुनः १९६४ व १९६६ ई० में वह बनवारी लाल वैदिक कन्या पाठशाला के व्यवस्थापक चुने गये। एक बार किन्हीं 'भद्र पुरुषों' की कृपा से बनवारी लाल वैदिक पाठशाला आर्य समाज़ के हाथ से निकल चली थी। महाशय मुकन्दलाल

जो के साहस व सूझ से आर्य समाज की यह संस्था बच पाई अन्यथा आज यह कुछ व्यक्तियों की निजी......। १९४१ में जब वह मन्त्री चुने गये, तब से लेकर १९६९ ई० तक अर्थात् मृत्यु पर्यन्त वह आर्य समाज के अन्तरंग सदस्य रहे।

आर्य समाज से उनको अटूट प्यार था। वह अटल ईश्वर-विश्वासी थे। वह नियमपूर्वक सन्ध्या करते थे। आर्य ग्रंथों व आर्य पत्र पत्रिकाओं का स्वाध्याय करते रहते थे। स्वाध्याय उनके स्वभाव का अंग बन चुका था।

१९६९ ई० में आर्यसमाज अबोहर का निर्वाचन करवाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने श्रीमान् महाशय निहाल चन्द जी रामा मण्डी व श्री मास्टर पूर्णचन्द जी को निरीक्षक के रूप में भेजा। महाशय मुकन्दलाल जी निर्वाचन की बैठक के प्रधान चुने गये। जब अधिकारियों का निर्वाचन होने लगा तो किसी पद के लिए किसी ने उनका नाम प्रस्तुत कर दिया। इस पर आपने कहा या तो मेरी अध्यक्षता में निर्वाचन नहीं करवाना था अब अध्यक्ष बनाया है तो मुझे किसी पद के लिये मत चुनो। मैं वैसे ही सेवा करूंगा। यह थी समाज सेवा की उनकी ऊँची भावना।

सामाजिक कार्यों में उनको अनेक संघर्ष करने पड़े

परन्तु वह अपने नैतिक स्तर से गिर कर संघर्ष नहीं करते थे। १९६९ ई० के समाज के निर्वाचन में श्री महाशय घनश्याम दास जी आर्य प्रधान चुने गये। किसी ने उनके पुत्र का नाम लेखा-निरीक्षक के लिये प्रस्तुत कर दिया। यद्यपि महाशय धनश्याम दास जी के सुपुत्र इस पद के लिए सर्वथा उपयुक्त थे तथापि सेतिया जी ने कहा ऐसा मत करो। प्रधान जी का पुत्र ही लेखा निरीक्षक नहीं होना चाहिए। समाज सेवा करते हुए वह धड़े पर धर्म की बलि नहीं देते थे, यह ऊपर की दो घटनाओं से स्पष्ट है।

आर्य समाज में प्रविष्ट होने के पश्चात् आपने अपने कुटुम्ब के अन्य सदस्यों को अभक्ष्य भक्षण के परित्याग की सफल प्रेरणा दी। आप स्वयं तो आर्य समाजी बनने से पूर्व ही शाकाहारी थे। आर्य समाज में आकर आप इस नियम पर और दृढ़ हो गये। आप जब यात्रा पर जाते तो कभी भी सामिष भोजन वाले होटल में नहीं जाते थे। शाकाहारी भोजनालय न मिले तो आप फल आहार पर ही निर्वाह कर लेते। एक बार परिवार के किसी कार्य के लिए देहली जाना पड़ा। परिवार के कुछ अन्य सदस्य भी साथ थे। श्रीयुत मुन्शी राम जी की पत्नी भी साथ गईं। आठ दिन तक आपने केले व दूध पर ही निर्वाह किया। आठ दिन के पश्चात् एक शाकाहारी

भोजनालय में सबको भोजन करवाया। देहली में आपके अनेक मित्र रहते हैं। किसी के घर जा कर भोजन का कष्ट देना आपको अभीष्ट न था।

१९६९ ई० में आर्यसमाज के निर्वाचन से एक दिन पूर्व किसी विरोधी पुरुष ने आपके नाम एक गुमनाम पत्र लिखा। इसकी एक एक प्रति श्री घनश्याम दास जी आर्य, श्री प्रो० राजकुमार जी एवं मुझ को भी भेजी गई। पत्र क्या था गाली गलोचका भंडार था। महाशय मुकन्दलाल जी को सभ्यता से गिरा हुआ वह अश्लील पत्र पढ़कर तनिक भी रोष न आया। उन्होंने इस पत्र के लिए न तो किसी को दोषी ठहराने की आवश्यकता अनुभव की. न ही इस पत्र को कुछ महत्व दिया। उन पर इसका कुछ भी तो प्रभाव न पड़ा। उनका मानसिक सन्तुलन पूर्ववत रहा।

आर्य समाज की सम्पत्ति की हानि हो रही हो और कोई व्यक्ति कह दे कि कोई बात नहीं, बात निपटा दो तो महाशय जी का मन्यु प्रचण्ड रूप धारण कर लेता था। वह कहा करते थे कि क्या आपके घर में कोई घुस जाए, आपकी दुकान पर कोई दुष्ट चोर अधिकार जमा ले तो आप इस प्रकार की नीति अपनाओगे? आप कहा करते थे कि जो अपनी निजी सम्पत्ति की हानि सहन नहीं कर सकते वे समाज की हानि देखकर जब कुछ नहीं करते तो इस से

बड़ा पाप और क्या हो सकता है ?

किसी कुपात्र को सहयोग देने के वह सदैव विरोधी रहे । कुछ लोग एक कर्महीन को कुछ धन देना चाहते थे। महाशय जी केलिए भी एक सौ रुपया कोई बड़ी बात न थी। आपने झट उत्तर दिया मेरी कमाई लूट पाट की नहीं कि एक अधर्मी को मैं एक सौ रुपया दे दूं ।

कुछ व्यक्ति अपने घर पर संस्कार करवाते समय जब दान देते हैं तो अधिक से अधिक संस्थाओं में दान बांटते हैं परन्तु अधिक से अधिक दान राशि देने का यत्न नहीं करते । महाशय जी इसके विपरीत अपने हां यज्ञ-हवन के अवसर पर आर्य संस्थाओं व आर्य समाज को अधिक से अधिक दान देने का ध्यान रखते थे । यदि आर्य समाज का कोई अधिकारी आर्य समाज की उपेक्षा करे तो उनको यह बात अखरती थी । नगर की अन्य संस्थाओं को भी वह दिल खोलकर धन दिया करते थे। उनको इस बात की चिन्ता न थी कि किसी संस्था के वार्षिक विवरण में दान दाताओं की सूची में उनका नाम छपे ।

अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तथा वीर सेनानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज आर्य-समाज के कार्य-कर्त्ताओं को प्रायः कहा करते थे 'गाली खाओ समाज की, रोटी खाओ घर की और सेवा करो

क्षमा करें ऐसा न होगा। यह था उनका बड़प्पन। यह थी उनकी ऋषि-भक्ति। यह थी उन की सरलता। वह व्यक्ति जो अपनी अड़ियल नीति के लिए नगर में प्रसिद्ध था, धर्म सेवा के क्षेत्र में जाति-हित में वह इतना विनीत था कि अपने पुत्र के समान प्रो० राज कुमार जी के पांव पर ही गिर पड़ा।

यह थी वह घटना जिसे स्मरण करके प्रो० राजकुमार जी उस ममय फूट २ कर रो पड़े जब सेत्तिया जी के निधन पर पुत्री पाठशाला में हुई सभा में वह सेतिया जी को श्रद्धाञ्जलि देने के लिए खड़े हुए।

वह वैदिक मान्यताओं का यथा-शक्ति पालन करने में तत्पर रहते थे। पौराणिक लोग जिन दिनों मृतक श्राद्ध करते हैं सेतिया जी उन दिनों किसी के हां भोजन स्वीकार नहीं करते थे। कारण स्पष्ट है कि कई अध-कचरे नाम-धारी ढिलकम ढिलकू आर्यसमाजी भी पोंगा पंथी-पोपों के कुप्रभाव में मृतक श्राद्ध करते हैं। वह भूलचूक व अनजाने में भी मृतक श्राद्ध वाला भोजन न करना चाहते थे।

संवत् २००६ विक्रम (१९०६ ई०) में १५वां अखिल भारतीय अरोड़वंश सम्मेलन अबोहर में हुआ। श्रीयुत लाला चाननलाल जी आहूजा इसके स्वागताध्यक्ष थे और महाशय जी स्वागत मन्त्री। महाशय जी के प्रभावशाली
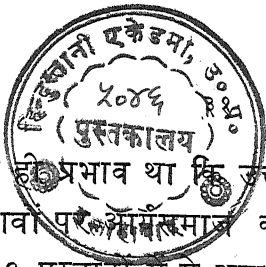
व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि उक्त सम्मेलन में अधिक से अधिक प्रस्तावों पर आर्यसमाज की छाप लगी। सम्मेलन में पारित २९ प्रस्तावों में से आठरह ऐसे थे जिनको पढ़-कर प्रतीत होता है कि इस सम्मेलन का नाम तो अरोड़वंश सम्मेलन था पर था यह आर्य सम्मेलन। विधुर का विवाह विधवा से ही हो यह प्रस्ताव भी स्वीकार करवाया गया। सम्मेलन की कार्यवाही वेदोक्त रीत्यनुसार हवन-यज्ञ से आरम्भ की गई।

सिद्धांत व संस्थायें :—१९६८ ई० में एक पत्रिका में एक लेख छपा। मान्य प्राध्यापक राजकुमार जी ने वह लेख पढ़कर मुझे दिखाया। लेखक ने बड़ी कुटिल नीति से दुर्भावना-पूर्वक महर्षि दयानन्द की प्रशंसा करके ऋषि के महत्व को नगण्य सिद्ध करने का दुःसाहस किया था। मैंने उक्त लेख का मुंह तोड़ उत्तर आर्य गज़ट एवं वैदिक धर्म साप्ताहिक में दिया। महाशय जी ने वैदिक धर्म में मेरा लेख पढ़ा। मुझे मिले और कहा, 'आपका लेख सुन्दर व युक्तियुक्त है। हम दयानन्द शिक्षा महाविद्यालय के लिए धन संग्रह कर रहे हैं। यदि कोई पौराणिक वह लेख पढ़ लेता तो चन्दे पर प्रभाव पड़ सकता था। आपने विरोधी पक्ष पर यथायोग्य वार किया है। थोड़ा नर्म चाहिये था।' मैंने उत्तर में कहा, 'यदि आर्य संस्थाओं के दान दाता

अन–आर्य समाजी यह समझते हैं कि आर्य समाज, वेद या ऋषि दयानन्द पर घिनौने वार होते देखकर हम मौन रहेंगे तो एसा समझना भूल है। आर्य संस्थायें देश की महान् सेवायें कर रही हैं। आर्यसमाज के बड़े बड़े महारथी इन संस्थाओं के लिये कार्य कर रहे हैं। संस्थाओं को दान देकर लोग यश प्राप्त कर रहे हैं। कोई दान दाता मुझ जैसे व्यक्ति की धार्मिक भावनायें कम कर लेगा, यह असम्भव है। कोई हमारी संस्थाओं को उपयोगी समझता है तो दान दे, नहीं समझता तो न दे। मैं तो आर्य समाज के हित में जो उचित समझता हूं लिखूंगा और कहूंगा।'

महाशय जी मेरा उत्तर सुनकर बहुत प्रभावित हुए और तुरन्त अपने विचार बदलकर बोले आपका कथन सर्वथा ठीक है। आर्यों की ऐसी ही भावना होनी चाहिए सिद्धान्त संस्था से ऊँचे हैं।

श्रीयुत डा० श्री राम जी कई बार कहा करते हैं कि मैंने उनके मन में राष्ट्र भाषा, देश, जाति एवं वैदिक धर्म के लिए जो तड़प देखी है वह अब अबोहर निवासियों में किसी और में नहीं मिलती। आर्यसमाज के लिए, हिन्दी के लिए, देश के लिए, वह सदैव सीना तान कर आगे आ जाते। उनका विश्वास था कि :—

जग को जगाने वाला आर्यसमाज है।
युग की पुकार है व जग की आवाज़ है॥

जड़ पूजा के विरोध में

अबोहर किसी समय एक हिन्दू राजा के आधीन था। पड़ोस के मुसलमानी राज्य बहावलपुर (पश्चिमी पंजाब) ने अबोहर पर आक्रमण कर दिया। अबोहर के राजा की वीराङ्गना पुत्री ने आक्रमणकारियों का सफलता पूर्वक सामना किया। मुसलमानों के पाँच प्रमुख सेनानी इस संघर्ष में मारे गये। आक्रान्ता उनके शव छोड़ कर भाग खड़े हुए। कुछ अज्ञानी हिंदुओं ने कालांतरमें उस वीराङ्गना को तो भुला दिया, आक्रान्ता सेना के मरे हुए सरदारों की कबरों की पूजा आरम्भ कर दो।

देश विभाजन के पश्चात् भी जड़ पूजा के महारोग से रुग्ण शव के उपासक हिन्दुओं ने पञ्च पीर के नाम से उन कबरों की पूजा जारी रखी। स्वार्थी हिन्दु मुजावरों ने भी इसको प्रोत्सहन दिया। महाशय मुकन्द लाल जी इस जड़ पूजा के धार्मिक व राष्ट्रीय दोनों दृष्टियों से विरोधी थे। उन्होंने इसके विरुद्ध बड़ा प्रचार किया। अपने साथियों को लेकर कबरों की ओर प्रचार करने गये। लोगोंको रोक-२ कर समझाया और बीसियों को इस पाप कर्म से बचाया।

उन्होंने मुझे बताया कि उनके एक पौराणिक संघी मित्र के घर में भी किसी मुसलमान की कबर थी। उनका मित्र व उस मित्र का परिवार उस कबर से डरते थे।

५
दीन दुखी की सेवा में

उपनिषदों में एक कथा आती है। प्रजापति के पास उस की सन्तान दानव, मनुष्य व देव उपदेश लेने गये। प्रजापति ने असुरों को उपदेश दिया 'द'। मनुष्यों को भी कहा, 'द' और देवों को भी यही 'द' का उपदेश मिला। 'द' का अर्थ क्रमशः दया, दान व दमन है। दया से असुर मनुष्यपन को प्राप्त करता है। दान से मनुष्य देवत्व को प्राप्त होता है और दमन से देवजन अहंकार के प्रहार से बचते हैं। इसी प्रकार उनका देवत्व सुरक्षित रहता है।

भारत में दान की बड़ी महिमा गाई जाती रही है परन्तु दान की यहां बड़ी दुर्गति होती आई है। भगवान की बनाई मूर्तियां अस्पृश्य कह ठुकराई जाने लगीं और मनुष्य की बनाई मूर्ति को भगवान् कह कर लोगों ने पाषाण पूजा का ढोंग रचा। लाखों करोड़ों रुपये के वस्त्र, भूषण व भोग इन मूर्तियों के लिये चाहिएं। इस अपव्यय को भी दान कहा गया। यह दान की दुर्गति हुई।

महर्षि दयानन्द ने दान की धारा को पुनः मोड़ दिया। गोशालाएं खुलने लगीं, गुरुकुल, विद्यालय, महाविद्यालय, अनाथालय स्थापित हुए। देश धर्म की सेवा के सब कार्यों में आर्य समाज आगे आया। दुष्काल, बाढ़, भूकम्प पीड़ितों की सहायता के लिये आर्य समाज ने स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी व लाला लाजपत राय आदि महान् नेताओं के मार्ग दर्शन में अद्वितीय कार्य किया। इस कार्य के लिये आर्यों ने दान दिया और दान मांगा। दान की सद्गति होने लगी। देश भर में एक नई भावना का निर्माण हुआ।

जब देश का विभाजन हुआ तो लाखों हिन्दू पाकिस्तान में मारे गये। जन धन की अकथनीय हानि हुई। पाशविकता का खुला प्रदर्शन हुआ। हिन्दुओं के नर संहार की कहानियां सुन कर महाशय जी का हृदय द्रवित हुआ। घर-घाट लुटा कर जब हिन्दू पाकिस्तान से इधर आए तो उन की दयनीय अवस्था थी। कई चतुर व्यक्तियों ने तो इन हिन्दओं के नाम पर 'शरणार्थी सेवा समितियां' बना कर अपने घर भर लिए।

महाशय जी ने पीड़ित भाईयों के लिए बड़े उत्साह से कार्य किया। चौबीस घण्टे महाशय जी को अपने विस्थापित भाइयों की चिन्ता लगी रहती। सैंकड़ों चार-

पाइयां व अन्न वस्त्र बांटे गये। श्री योगेन्द्र पाल गोयल पत्रकार ने उन दिनों की एक मार्मिक कहानी सुनाई। एक वृद्ध पीड़ित भाई सहायता समिति के कार्यालय में पहुंचा और कहा कि मेरी पत्नी रुग्ण है। मुझे एक चारपाई चाहिए। रात्री का समय था। समिति के सर्वेसर्वा तो महाशय जी ही थे परन्तु उस समय समिति का कार्यालय बन्द हो चुका था। महाशय जी उसे घर ले गये और अपने घर से उस पीड़ित बन्धु को चारपाई देकर भेजा।

महाशय नन्द लाल आर्य का कथन है कि महाशय मुकन्द लाल जी अनाथों विधवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के पक्ष में थे। उन्होंने अरोड़ वंश, आर्य समाज एवं अन्य संस्थायें जिनसे उनका सम्बन्ध था, के द्वारा असहाय बहनों भाइयों को सिलाई मशीनें आदि दिला कर आत्म-निर्भर बनाने की योजनायें चलाईं। वह पीड़ितों के आत्म-सम्मान का पूरा ध्यान रखते थे।

महाशय नन्दलाल जी ने बताया कि बृजलाल जी दर्ज़ी के उजड़े घर को बसाने के लिये महाशय जी निरन्तर अबोहर फाज़िल्का आते जाते रहे। इस कार्य में प्रभु ने उन को सफलता प्रदान की। दीन दुखी की सेवा करते हुए महाशय जी को आत्म-शान्ति का अनुभव होता था

यहां यह उल्लेखनीय है कि १९४७ ई० के दंगों में अबोहर नगर के सब पक्षों के हिन्दू अपने राजनैतिक मत-भेद भुला कर महाशय जी को ही अपना एक मात्र नेता मानते थे। उन को सिंहगर्जना, उनका साहस सब में प्रेरणा व स्फूर्ति का संचार करता रहा। नगर की रक्षा के लिए उन्होंने ठोस कार्य किया।

अकाल पीड़ितों की सहायता

१९६७ ई० में बिहार प्रदेश में भयंकर अकाल पड़ा। सारे प्रदेश में भुखमरी के कारण हाहाकार मच गई। समाचार पत्रों के पृष्ठ दुष्काल के समाचार से भरे होते थे। महाशय मुकन्द लाल जी सेतिया का जाति प्रेमी हृदय विह्वल हो उठा। वह देश धर्म की सेवा का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे। उन्हीं जैसे कर्मठ आर्य पुरुषों की सेवा भावना व सेवा कार्यों से प्रभावित होकर विख्यात देशभक्त श्री सी. वाई. चिन्तामणि ने लिखा था—

"Where there is work to do there one does not miss the Arya samaj." जहां भी करने योग्य कोई कार्य होगा वहां आप आर्य समाज को अनुपस्थित नहीं पायेंगे।

अबोहर में महाशय जी की मित्रमण्डली ने बिहार के अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये अन्न धन संग्रह करने

यहां यह उल्लेखनीय है कि १९४७ ई० के दंगों में अबोहर नगर के सब पक्षों के हिन्दू अपने राजनैतिक मत-भेद भुला कर महाशय जी को ही अपना एक मात्र नेता मानते थे। उन को सिंहगर्जना, उनका साहस सब में प्रेरणा व स्फूर्ति का संचार करता रहा। नगर की रक्षा के लिए उन्होंने ठोस कार्य किया।

अकाल पीड़ितों की सहायता

१९६७ ई० में बिहार प्रदेश में भयंकर अकाल पड़ा। सारे प्रदेश में भुखमरी के कारण हाहाकार मच गई। समाचार पत्रों के पृष्ठ दुष्काल के समाचार से भरे होते थे। महाशय मुकन्द लाल जी सेतिया का जाति प्रेमी हृदय विह्वल हो उठा। वह देश धर्म की सेवा का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे। उन्हीं जैसे कर्मठ आर्य पुरुषों की सेवा भावना व सेवा कार्यों से प्रभावित होकर विख्यात देशभक्त श्री सी. वाई. चिन्तामणि ने लिखा था—

"Where there is work to do there one does not miss the Arya samaj." जहां भी करने योग्य कोई कार्य होगा वहां आप आर्य समाज को अनुपस्थित नहीं पायेंगे।

अबोहर में महाशय जी की मित्रमण्डली ने बिहार के अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये अन्न धन संग्रह करने

का शुभ संकल्प किया। बिहार अकाल पीड़ित सहायता समिति का गठन किया गया। माननीय श्री डा. श्रीराम जी, मान्यवर श्री परमानन्द जी डोडा, महाशय मुकन्द लाल जी, आचार्य नारायण दास जी ग्रोवर इस कार्य के लिये आगे निकले। श्री मास्टर हरनारायण सिंह जी को साथ लेकर इन महानुभावों ने अबोहर नगर व इस क्षेत्र के ग्रामों से सहस्रों मन अनाज संग्रह किया। कड़कती धूप में, झुलसा देने वाली लू में, मई व जून की ग्रीष्म ऋतु में इन भद्र पुरुषों ने जिस लग्न से यह कार्य किया वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। इस कार्य में सर्वाधिक समय महाशय जी ने ही दिया। घर के काम धन्धे छोड़ कर, खाने और सोने की सुधि भूल कर वह इस यज्ञ को सम्पन्न कराने में जुट गये। वृद्ध अवस्था में उस कर्त्तव्य-निष्ठ व्यक्ति की समाज सेवा की धुन दर्शनीय व अनुकरणीय थी। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि उनकी कर्मण्यता व सेवा की न बुझने वाली प्यास युवकों को लज्जित कर देती थी। उन दिनों उन को देख कर अनायास मुख से निकल आता था :—

नहीं स्वप्न में भी तुम करते तन
के सुख का तनिक विचार।

कई बार वह दोपहर को एक दो बजे इस कार्य हेतु

ग्रामों में जाया करते थे और रात्री ग्यारह बारह बजे घर लौटते थे। घर लौट कर ही भोजन किया करते थे। ऐसे समाज सेवी किसी भी देश में समाज के गौरव का कारण बनते हैं। उनकी रग-रग रोम-रोम से यह स्वर निकलता था :—

भगवन् हमारा जीवन संसार के लिए हो।
यह ज़िंदगी हो लेकिन उपकार के लिए हो ॥

———

२४ से २५ सितंबर १९३३ ई० में प्रादेशिक हिंदी साहित्य सम्मेलन का वार्षिक अधिवेशन अबोहर में रखा गया। पूज्य-पाद महात्मा हंसराज जी इस के अध्यक्षपद को सुशोभित करने के लिये पधारे। महाशय मुकन्द लाल जी इस ऐतिहासिक अधिवेशन के स्वागत-मन्त्री निर्वाचित हुए। राष्ट्रभाषा के वह अनन्य भक्त थे। यदि किसी समारोह का निमंत्रण पत्र आप को अंग्रेज़ी में मिलता तो आप उस में कदापि भाग नहीं लेते थे। आप के मित्रों व सम्बंधियो को आप के इस दृढ़ वृत के कारण संस्कारों आदि पर निमन्त्रण-पत्र हिन्दी में ही छपवाने पड़ते थे।

जब १९६७ ई० में अकालियों व जनसंघ ने पंजाब में संयुक्त सरकार बनाई तो जनसंघ ने अकाली दल के सन्मुख दो कुर्सियों के लिए ऐसा आत्म-समर्पण किया कि अकाली दल ने पंजाब में हिन्दी का गला घोंटने के लिये अपनी कुनीति का कुचक्र चलाया। आर्य समाज के नेतृत्व में पंजाब के हिन्दुओं ने इसका घोर विरोध किया। महाशय कृष्ण के सुपुत्र श्री वीरेन्द्र सम्पादक प्रताप जालन्धर ने अकाली जन-संघ सरकार की भाषा-नीति के विरुद्ध ऐसी जन-जागृति पैदा की कि जनसंघी वीरेन्द्र जी का सर्वत्र विरोध करने लगे। जनसंघी दैनिक प्रदीप ने अपने एक लेख में वीरेन्द्र जी को मानसिंह की गाली भी दी।

उन दिनों महाशय जी एक दिन मेरे पास आए और कहा कि पंजाब के सब नगरों में हिंदी रक्षा सम्मेलन हो रहे हैं। अबोहर तो है ही हिन्दी-भाषी। यहां भी कुछ होना चाहिए। मेरी ओर से वीरेन्द्र जी को यहां बुलाओ। उनके आने पर विशाल सम्मेलन करेंगे। मैंने कहा आप संघ के भी नेता हैं। संघी सभामें गड़बड़ करें तो कौन उत्तरदायी होगा? वीरेन्द्र जी का यहां किसीने अपमान किया तो परिणाम भयंकर होगा। महाशय जी ने कहा, 'देश जाति की सेवा के पाठ मैंने आर्यसमाज से सीखे हैं। आर्य समाज ने हिन्दी से प्यार सिखाया। आर्य समाज ने जाति सेवा का पाठ पढ़ाया! मैं जाति सेवा व हिन्दी प्रेम के कारण संघ में गया। संस्थायें बड़ी नहीं, देश बड़ा है। मैं हिन्दी व हिन्द को संघ पर नहीं बार सकता। वीरेन्द्र जी को अवश्य बुलायें। मैं दायित्व लेता हूं। कोई गड़बड़ न होगी। वीरेन्द्र जी के नाम से संघी भी आयेंगे। मैं चाहता हूं कि संघ वालों को उनकी भूल सुझाने के लिए वीरेन्द्र जी का आना आवश्यक है। वीरेन्द्र जी को लिखें मैं हिन्दी रक्षा में उनके साथ हूं। संघ ने हिन्दी के हितों से द्रोह किया है।"

यह था महाशय जी का हिन्दी प्रेम। इस घटना का मान्य प्रो० राजकुमार जी को ज्ञान है। वीरेन्द्र जी महाशय जी की दी तिथियों पर यहां न आ सके। वह वे तिथियां

पहिले लुधियाना दे चुके थे।

१९५७ ई० में हिन्दी रक्षा ग्रान्दोलन में उन्होंने जेल यात्रा भी की।

जैसा कि पूव बताया जा चुका है कि अंग्रेज़ी में निमन्त्रण पत्र प्राप्त होने पर वह सगे सम्बंधियों के घर भी विवाह आदि संस्कारों में सम्मिलित नहीं होते थे। इस प्रकार की उनके जीवन की बीसियों घटनायें लोग सुनाते हैं। स्थान ग्रभाव से यहां उनका उल्लेख नहीं किया जा रहा। संस्कारों के लिए वह अपने मित्रों व सम्बंधियों को जहां यज्ञ-हवन की वैदिक पद्धत्ति से संस्कार करवाने की प्रेरणा देते थे वहां राष्ट्रभाषा में निमन्त्रण पत्र छपवाने का भी प्रचार करते रहते। ग्रनेक बार वह दूसरों के निमन्त्रण पत्र स्वयं किसी से लिखवाते ग्रौर फिर छपवाने भी स्वयं प्रेसों में जाया करते। अपने ग्रति व्यस्त जीवन के अमूल्य क्षण इस प्रकार के कार्यों में देकर वह सन्तोष अनुभव करते थे। उन्होंने कभी भी तो यह नहीं जताया कि मेरे घर के काम काज की हानि होती है ग्रथवा मैंने ग्रमुक कार्य के लिये यह हानि उठाई है।

आज अबोहर के सार्वजनिक जीवन का सूनापन प्रति-क्षण हमें महाशय जी की स्मृति दिलाता है।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३०वां अधिवेशन

विक्रम संवत् १९९८ तदनुसार १९४१ ई० में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३०वां वार्षिक अधिवेशन अबोहर में सोत्साह सम्पन्न हुआ । इसके सभापति विख्यात शिक्षा शास्त्री मान्य अमरनाथ झा थे । सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष प्रसिद्ध आर्य नेता वैद्य भूषण श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा अमृतधारा वाले थे। इस अवसर पर देश के कोने कोने से हिन्दी सेवी व हिन्दी लेखक व कवि पधारे । दर्शन परिषद, विज्ञान परिषद्, समाज शास्त्र परिषद् आदि कई सभाओं का आयोजन किया गया । महाशय जी ने इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिये बड़ा परिश्रम किया।

प्रौढ़ शिक्षा द्वारा हिंदी प्रचार

महाशय जो ने कोई करने योग्य कार्य छोड़ा नहीं आर्य महिला परोपकारिणी सभा अबोहर ने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोला। इस योजना के कर्णधार महाशय जी ही थे । आर्य समाज अबोहर के वर्तमान मन्त्री प्राध्यापक गोविन्द दास जी पर्याप्त समय इस केन्द्र में सेवा करते रहे। इस केन्द्रने अनेक व्यक्तियों को राष्ट्रभाषा का बोध कराया।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३०वां अधिवेशन

विक्रम संवत् १९९८ तदनुसार १९४१ ई० में अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का ३०वां वार्षिक अधि-वेशन अबोहर में सोत्साह सम्पन्न हुआ । इसके सभापति विख्यात शिक्षा शास्त्री मान्य अमरनाथ झा थे। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष प्रसिद्ध आर्य नेता वैद्य भूषण श्री पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा अमृतधारा वाले थे। इस अवसर पर देश के कोने कोने से हिन्दी सेवी व हिन्दी लेखक व कवि पधारे। दर्शन परिषद, विज्ञान परिषद्, समाज शास्त्र परिषद् आदि कई सभाओं का आयोजन किया गया। महा-शय जी ने इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिये बड़ा परिश्रम किया।

प्रौढ़ शिक्षा द्वारा हिंदी प्रचार

महाशय जी ने कोई करने योग्य कार्य छोड़ा नहीं आर्य महिला परोपकारिणी सभा अबोहर ने प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र खोला। इस योजना के कर्णधार महाशय जी ही थे । आर्य समाज अबोहर के वर्तमान मन्त्री प्राध्यापक गोविन्द दास जी पर्याप्त समय इस केन्द्र में सेवा करते रहे। इस केन्द्रने अनेक व्यक्तियों को राष्ट्रभाषा का बोध कराया।

अबोहर के दुकानदारों को महाशय जी व उनके साथी हिन्दी पढ़ने की प्रेरणा देते रहते । उनके अनुरोध पर रात्री को यह सज्जन प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में हिन्दी पढ़ने आते थे ।

७

दलितोद्धार

आज ग्रस्पृश्य कहलाये जाने वाले दलित भाइयों के कई ठेकेदार मिलते हैं। दलित बंधुओं के वोट के लिए सब उनके धरों के चक्र काटते हैं। आज उनकी वर्तमान ग्रवस्था का श्रेय भले ही कोई दल ले या किसी भी व्यक्ति को दिया जाए परन्तु निष्पक्ष इतिहासकार आने वाली पीढ़ियों को यह तथ्य व सत्य बतायेंगे और सुनायेंगे कि जब काँग्रेस न थी, जब गांधी जी भी ग्रागे न आए थे, जब ठक्कर बापा का नाम भी कोई न जानता था तब आर्य समाजी वीरों ने गढ़वाल में डोला पालकीं के लिए लाठियां खाईं। तब दलित सेवा के पुनीत कार्य में जम्मू राज्य में महाशय रामचन्द्र ने वीर गति पाई। तब मध्यप्रदेश में एक ग्रार्य इसी कार्य के लिए शहीद हुग्रा। तब बारम्बार दीनबंधु, भक्त फूलसिंह ने इस सेवा-वृत केलिए अग्नि परीक्षा दी। कर्मवीर लाला गंगाराम, धर्मधीर पण्डित गंगाराम

हुतात्मा भाई श्यामलाल आदि ने वीर सेनापति स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय व महात्मा हंसराज जी की प्रेरणा से इस क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य किया।

उस समय प्रमुख आर्य समाजी दलितोद्धार कार्य में समय लगाते थे। महाशय मुकन्दलाल जी भी किसी से पीछे न थे। दलित बंधुओं की बस्तियों में जा कर वह उनसे सम्पर्क स्थापित करते। उनमें शिक्षा प्रचार व धर्म प्रचार करते। अबोहर के नाई दलितों की हजामत करने को तैयार न थे। यह घोषणा की जा चुकी थी कि जो नाई दलितों की हजामत करेगा उसका बिरादरी से बहिष्कार किया जाएगा। महाशय जी ने इस चुनौती को स्वीकार किया! सोहनलाल नामके एक नाई को तैयार किया। उसको अपने व्यय पर गली न० ८ में दुकान खुलवा दी। वह दलितों की भी हजामत बनाता। यह राष्ट्रीय दुकान बहुत चमकी।

मुझे यह घटना श्रीयुत योगेन्द्रपाल जी गोयल पत्रकार ने सुनाई।

अबोहर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन के अवसरपर दलितोद्धार सम्मेलन भी रखा गया। सम्मेलन के कर्णधारों से विचार विमर्श कर के आपने सेठ चाननलाल जी आहूजा को दलितोद्धार सम्मेलन का स्वागताध्यक्ष बनने

की प्रार्थना की । सेठ चाननलाल जी ने उस अवसर पर स्वागताध्यक्ष के रूप में एक प्रभावशाली भाषण दिया। महाशय मुकन्दलाल जी तथा श्री स्वामी केशवानन्द जी ने सेठ जी के भाषण की बड़ी प्रशंसा की।

अस्पृश्यता निवारण के लिए समाज सुधार प्रेमी सज्जनों ने समय समय पर यहां कई सम्मेलन आयोजित किये। बड़े बड़े नेताओं को आमन्त्रित किया जाता था। कई बार प्रीति भोजन रखे गये। इन सब आयोजनों के पीछे सेतिया जी का अदम्य उत्साह कार्य करता था। एक बार सदन में सहभोज रखा गया। इसका सारा व्यय श्री गोकुल चन्द जी व महाशय जी ने मिलकर किया था। दलित भाइयों के लिए उनके हृदय में बहुत प्यार था।

असहाय के सहाय हों उपकार हम करें।
अभिमान से बचें हृदय निर्मल उदार हो॥

८

अरोड़-वंश सभा

अति प्राचीनकाल में आर्यों में जन्म अधिकारवाद न था। आर्य धर्म व्यवस्था का दूसरा नाम है। आर्य समष्टि जीवन में व्यवस्था को मानते हैं। आर्य के व्यक्ति जीवन का भी एक विधान है। इस समष्टि एवं व्यक्ति जीवन की आर्य-पद्धति का नाम क्रमश: वर्ण व्यवस्था तथा आश्रम व्यवस्था है। जब आर्य जाति पतनोन्मुख हुई तो व्यवस्था का स्थान जन्म की जाति पाति ने लिया। आर्य जाति सहस्रों जात बिरादरियों में बट गई। फूट, कलह, द्वेष, अस्पृश्यता आदि दूषण इस देश को खा गए। इनका मूल यही जातिवाद है। हिन्दू इस जातिवाद को वर्ण-व्यवस्था कहने लगे। महर्षि दयानन्द ने इसे **मरण व्यवस्था** कहा है।

आर्य समाज ने इसके विरुद्ध बड़ा सघर्ष किया है। मानना पड़ेगा कि उसे उतनी सफलता नहीं मिली जितनी

कि चाहिये थी। फिर भी इस क्षेत्र में जो कुछ सुधार हो गया है इसका श्रेय आर्य समाज को ही है। यदि तेजस्वी प्रतापी श्रद्धानन्द जैसे बीस पच्चीस व्यक्ति इस क्षेत्र में और आगें आते तो 'मरण व्यवस्था' से देश का पिण्ड छूट जाता और वर्ण व्यवस्था की ओर हमारा पग आगे बढ़ता।

मनोबल की कमी ही इस क्षेत्र में हमारे मार्ग में बाधक बनी। समाज सुधार की जो घुट्टी ऋषि ने आर्यों को घोट कर पिलाई उसका यह सुखद फल निकला कि अनेक लग्नशील आर्य समाजी कार्यकर्ता अपनी बिरादरियों के संगठन के नेता बन गये और इन बिरादरियों के द्वारा सुधार कार्य में लग गये। महाशय मुकन्दलाल सेतिया के स्वभाव में ही कुछ ऐसी बात थी कि उनका मन कुछ करने के लिए प्रतिक्षण मचलता रहता था। वह अरोड़ वंशी थे। अपनी अरोड़ वंश सभा में आगे होकर आपने सुधार का बीड़ा उठाया। बिरादरी को सदैव रचनात्मक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। अपव्यय, कुरीतियों, आडम्बरों से बचने के लिए अरोड़ों को प्रेरणा देते रहे। कोई माने या न माने वह अपने पथ पर चलते रहते थे। वह परिणाम से चिन्तामुक्त होकर लक्ष्य की ओर अविरल व अविराम पग उठाते रहते। यश अपयश, हानि लाभ का

तनिक भी विचार नहीं करते थे।

जिस किसी ने भी बिरादरी का नियम तोड़ा—अपना हो या बेगाना, वह सब को समझाते। नियम भंग करने वाले को दण्ड स्वीकार करने के लिए कहते और विवाह आदि पर बिरादरी द्वारा नियत संख्या में बाराती ले जाने दहेज, शगुन आदि की सीमाओं का ध्यान रखने, सुरापान, भंगड़ा नाच आदि न करने के लिए सब को समझाते। अपने मित्रों को विशेष रूप से महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक रीति से संस्कार करवाने का अनुरोध करते।

जैसा कि पहिले बताया जा चुका है कि १५वां अरोड़ वंश सम्मेलन १७, १८, १९ मार्ग शीर्ष सम्वत् २००६ को अबोहर में सम्पन्न हुआ। मान्य महाशय जी उसके स्वागत मंत्री निर्वाचित हुए। १९३६ में फाज़िल्का में भी अखिल भारतीय अरोड़ वंश सम्मेलन हुआ। १९४३ में मलोट मण्डी में ऐसा ही सम्मेलन रखा गया। श्री महाशय जी का गतिमान व्यक्तित्व इन सब सम्मेलनों पर छाया रहा।

नवम्बर १९६७ में गीता मन्दिर अबोहर में त्रि-प्रान्तीय अरोड़ वश सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन के प्रेरक भी महाशय जी ही थे। इसे सफल बनाने में आपने

मानना चाहिए कि जो स्थान उन्होंने चुना वह सार्वजनिक कार्यों के लिए प्रत्येक दृष्टि से उपयुक्त है। इस स्थान को प्राप्त करने के लिए उन्होंने जो दौड़ धूप की उसका शब्दों में वर्णन करना कठिन है। सफलता ने पग पग पर उस धुन के धनी का चरण चुम्बन किया। ईश्वर की अनुकम्पा से आज वह भवन तय्यार होने जा रहा है। यह भवन जहाँ महाशय चानन लाल आहूजा का कीर्ति-स्तम्भ होगा वहां पुरषार्थ व परमार्थ की प्रतिमा महाशय मुकन्दलाल सेतिया की कर्मठता का भी मूक गान होगा।

मैंने उनको सुझाव दिया कि महान् मनीषी पं० गुरुदत्त जी विद्यार्थी पहले भारतीय थे जो देव दयानन्द की कृपा से अब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर अपने समय के असाधारण प्रतिभा के ब्राह्मण बने। पंडित जी अरोड़ वंशी परिवार में पैदा हुए अतः इस भवन में उनका एक सुन्दर चित्र लगना चाहिए। महाशय जी ने कहा अवश्य ऐसा होगा। आप आहूजा जी को भी कह दें। मैंने उनको भी यह सुझाव लिखित रूप में दिया। आहूजा जी ने भी इस सुझाव को बहुत सराहा।

जातिवादी न राष्ट्रवादी थे

महाशय जी की रुचि अपनी बिरादरी तक ही सीमित न थी। आर्यसमाजी संस्कारों के कारण अरोड़वंश क्या और

अग्रवाल सभा क्या, जहां भी कहीं उनका बस चला वह कुरीतियों से जूझने के लिए आगे आ जाते थे। राष्ट्रहित उनके लिए सर्वोपरी था। लाला गोकुल चन्द जी ने बताया कि कई बार वह हमारी अग्रवाल सभा की बैठकों में आते और भंगड़ा, सुरापान का विरोध करने के लिए सब को उत्साहित करते। सरलता सादगी पर बल देते। अपव्यय से बचने का प्रचार करते। उनक ध्येय था बुराई से लड़ाई।

है बुराई बुराई से लड़ना अगर।
यह बुराई तो हम नित्य करते रहे॥
जब भी आई वतन पर मुसीबत कभी।
झूम कर फांसियों पर लटकते रहे॥
ऐसी ज्योति जगाई दयानन्द ने।
आंख में दुशमनों को खटकते रहे॥
होश पाखण्डियों के तो ऐसे उड़े।
नाम सुनकर हमारा खिसकते रहे॥

———

८

महर्षि स्मारक ट्रस्ट टंकारा

महर्षि दयानन्द के जन्म-स्थान टंकारा में महर्षि का स्मारक बनाने के लिये उक्त ट्रस्ट की स्थापना की गई। प्रतिवर्ष महर्षि बोध पर्व पर एक मेला आयोजित किया जाता है। विशेष यात्रा गाड़ियां मार्ग में वेद-प्रचार करते हुए टंकारा को जाती हैं। सेतिया जी ऐसे कार्यों में पीछे रहने वाले व्यक्ति नहीं थे। २५-२-१९६५ को २६ व्यक्तियों के साथ वह भी यात्रा पर गये। अनेक ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा करके लौटे। श्री महाशय घनश्याम दास जी मार्ग में अस्वस्थ हो गये। श्री ठाकुर दास जी मुंजाल, श्री लालचन्द जी नारंग व महाशय मुकन्द लाल जी ने अपने रुग्ण साथी की बहुत सेवा की। महाशय मोती राम जी की औषधि से वह स्वस्थ हो गये।

१७-३-१९६३ ई० को न्यायमूर्ति मेहर चन्द महाजन के

श्री महाशय जी टंकारा स्मारक के लिये समिति के प्रधान डा० महाजन जी को थैली दे रहे हैं।

अबोहर आगमन पर आपने उक्त ट्रस्ट के लिए १००० रु०
की थैली भेंट की ।

वेदों की तान मीठी सुन्दर सुनाने वाले ।
ज्ञानी सजग ऋषि थे जग को जगाने वाले ॥

१०

शिक्षा संस्थाओं के निर्माण में

"अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।" इस ऋषि आदेश को मूर्त्तरूप देने में सेतिया जी सदैव प्रयत्नशील रहे। आर्य पुत्री पाठशाला से तो वह सम्बन्धित थे ही। १९४३ ई० में प्रसिद्ध आर्यदानी सेठ चानन लाल आहूजा के परिवार ने स्व० श्री बनवारी लाल की स्मृति में बनवारी लाल वैदिक कन्या मिडल पाठशाला की स्थापना की। इस पाठशाला ने सेतिया जी की देखरेख में अल्पकाल में पर्याप्त उन्नति की। सेठ चानन लाल जी लिखते हैं कि श्री सेतिया जी व श्री घनश्याम दास जी की प्रेरणा से ही दो तीन वर्ष पूर्व हमने इस कन्या विद्यालय को मिडल से हाई बनाना स्वीकार किया। इस निमित्त आहूजा परिवार ने वार्षिक अनुदान भी बढ़ा दिया। सेतिया जी की प्रेरणा से भवन-निर्माण के लिए कई सहस्र रुपये देने की स्वीकृति भी दी। वह शिक्षा संस्थाओं में धर्म शिक्षा के लिए बड़ा

बल देते थे। आर्य पुत्री पाठशाला व बनवारी लाल वैदिक पाठशाला में कन्याओं को प्रविष्ट कराने के लिए वह नगर वासियों को प्रबल प्रेरणा दिया करते थे। इन संस्थाओं में धर्म शिक्षा दी जाती है इसलिये इनमें बच्चियों को भेजकर देश का भविष्य उज्ज्वल बनाओ, ऐसा वह सबसे कहा करते थे। विज्ञापनों द्वारा भी इस बात का प्रचार करते रहते थे।

पाठशाला में यदा कदा जाकर कन्याओं को 'नमस्ते' कहने की विशेष प्रेरणा दिया करते थे। वह संस्कृत विषय लेनेवाली छात्राओं को विशेष स्नेह देते थे। धर्म-शिक्षा परीक्षा में बैठने वाली कन्याओं को भी बड़ा प्रोत्साहित करते। अबोहर की कन्याओं का धर्म शिक्षा परीक्षा परि-णाम बहुत अच्छा रहता है। सेतिया जी इस पर विशेष गर्व किया करते थे।

फूले दयानन्द की फुलवारी।
विद्या मधु का पान करें हम॥

११

दयानन्द संस्थाओं की सेवा में

१९६० ई० में यहां दयानन्द महाविद्यालय की स्थापना की गई। प्राचार्य नारायण दास जी ग्रोवर ने प्राचार्य पद को सुशोभित किया। तब न कालेज का भवन था और न भूमि। न छात्र थे, न शिक्षक। न कोष न कार्यालय। महात्मा हंसराज के कंटकाकीर्ण मार्ग पर साधनहीन प्राचार्य नारायण दास ग्रोवर चल पड़े। अबोहर में दयानन्द संस्थाओं के भव्य भवन उनकी सतत साधना की मूक कहानी हैं। इन संस्थाओं के निर्माण में इस क्षेत्र की उदार हृदय जनता ने तन मन धन से सहयोग दिया है और दे रही है। प्राचार्य जी के उर्वरा मस्तिष्क से नित नई विकास योजनाएं निकल रही हैं। धन मांगते हुए वह ठीक ही कहते हैं :—

'तृष्णा तू न गई मेरे मन से।'

इस **'प्यासे दरया'** को रिझाने में महाशय जी सदैव

यत्नशील रहे। घर घर व गांव-गाँव उन्होंने प्राचार्य जी के साथ दयानन्द संस्थाओं के लिए झोली पसारी। अपने मित्रों से बार बार इन संस्थाओं के लिए भिक्षा मांगी। अपने परिवार, अपने सम्बन्धियों से निःसंकोच दान मांगा। दिन देखा न रात जब भी प्राचार्य जी ने पुकारा वायु के समान वेगवान यह धुन का धनी घर से चल पड़ा। गर्मी हो शीत; भूख प्यास से निश्चिन्त निष्काम लोक सेवी ने घर बार के काम धंधे छोड़ कर इस ज्ञान-यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित करने के लिए अपनी सेवायें अर्पित कीं। १९६८ ई० में जब दयानन्द शिक्षा महाविद्यालय की स्थापना का संकल्प लेकर प्राचार्य ग्रोवर ने गली २ अलख जगाई तो क्षेत्र के दानी लोक सेवी नेता इस कार्य में साथ जुट गये। सृजनात्मक शक्तियों से सुसज्जित महाशय मुकन्दलाल कब पीछे रहने वाले थे। झुलसा देने वाली दोपहरी में वह भी इस महान कार्य में जुट गये। दयानन्द शिक्षा महाविद्यालय का विशाल भवन देखकर वह गद-गद हो जाते थे। वह केवल अपने परिवार से इन संस्थाओं को दान दिलाने का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं देते थे। उनकी मृत्यु के समय उनके परिवार के व्यक्ति दयानन्द कालेज के आजीवन दानी सदस्य थे। इस

का श्रेय उन्हीं को जाता है।

अपनी मृत्यु से पूर्व वह दो स्वप्न ले रहे थे। वह फतेहाबाद ज़िला हिसार में दयानन्द कालेज की स्थापना का प्रयास कर रहे थे। उनका वहां पर्याप्त परिचय व प्रभाव था। इस सम्बन्ध में वह फ़तेहाबाद आते जाते रहे।

देश विभाजन से पंजाब कट गया। अकालियों ने विभाजित पंजाब का पुनः विभाजन करवाया। पंजाबी सूबा में अकाली-जनसंघ सरकार ने राष्ट्रभाषा हिन्दी का गला घोट दिया। जब पंजाब में सरकारी स्कूलों में हिन्दी माध्यम की स्वतन्त्रता न रही तो सेतिया जी को इससे आघात पहुंचा। अबोहर में सहस्रों छात्र मातृभाषा हिन्दी में शिक्षा पाने के अधिकार से वञ्चित हो गये। सेतिया जी के मन में तब डी० ए० वी० हाई स्कूल खोलने की धुन सवार हुई। मृत्यु से एक दो दिन पूर्व वह कालेज गये और कुछ मित्रों से मिल कर स्कूल के भवन व भूमि की चर्चा की। उन्होंने तब मुझे भी कहा कि एक दानी से मैं बात कर चुका हूं। उसने एक लाख देना स्वीकार कर लिया है। अब आचार्य नारायण दास जी ग्रोवर को मिलाऊंगा। आचार्य जी दबाव दें तो सवा लाख भी मान जाएगा। कुछ अन्य व्यक्तियों से भी उन्होंने

यह बात कही । खेद है कि काल कराल ने इस बातचीत के दो दिन पश्चात् महाशय जी को हम से छीन लिया । किसी को उन्होंने उस व्यक्ति का नाम न बताया था; जिस ने एक लाख देना माना था ।

प्रभु की कृपा से महाशय जी का यह स्वप्न आज साकार रूप धारण कर चुका है । उन की मृत्यु के पश्चात् आर्य नगर में 'गांधी जन्म शताब्दी स्मारक' के रूप में डी० ए० वी० कालेज प्रबन्ध कर्तृ सभा ने एक विद्यालय स्थापित कर दिया है । सन्तनगर में भी इस की शाखा चल रही है । सैंकड़ों छात्र शिक्षा पा रहे हैं ।

यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि अबोहर मंडी के अनाज तथा कपास के व्यापारियों से कालेज को प्रतिवर्ष २० हज़ार रुपए शिक्षा धर्मादा के रूप में प्राप्त होते हैं । शिक्षा धर्मादा बन्धवाने में मान्य महाशय जी का विशेष हाथ था ।

'लहलाती है खेती दयानन्द की ।'

१२

दयानन्द कालेज की यज्ञशाला

१९६७ ई० में माता कौशल्या देवी जी ने अपने पति की स्मृति में कुछ बनवाने का निश्चय किया। अपने संकल्प की सूचना महाशय जी को पहुंचा दी। महाशय जी ने परामर्श दिया कि दयानन्द कालेज में यज्ञशाला का निर्माण होना चाहिए। यदि आप यज्ञशाला बनवा दें तो यह बड़ा पुण्य का कार्य होगा। माता कौशल्या जी ने महाशय जी के परामर्श को मानकर कालेज के भव्य भवन में अपने पति श्री लाजपतराय जी सेतिया की पुण्य स्मृति में यज्ञशाला बनवा दी। भारत के दिवंगत प्रधानमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री की पूज्या पत्नी माता ललिता देवी के कर कमलों द्वारा इसकी आधार शिला रखी गई।

यज्ञशाला के निर्माण में महाशय जी ने असाधारण रुचि ली। वह इसे कई बार देखने आते। कई यज्ञ-

शालाओं के नकशे मंगवाये गए । उन्हें इस बात का विशेष ध्यान था कि यज्ञशाला भवन का निर्माण विशुद्ध भारतीय कला के अनुरूप हो ।

आर्य पुत्री पाठशाला गली नं० १२ में भी महाशयजी की प्रेरणा से उनके परिवार ने माता जयदेवी जी के नाम पर एक यज्ञशाला का निर्माण करवाया । आर्य समाज के बड़े २ पर्वों पर वहीं यज्ञ-हवन होता है । लाजपतराय महिला होस्टल के निर्माण में भी महाशय जी ने विशेष रुचि ली ।

गीता हाई स्कूल कुरुक्षेत्र

महाशय जी का राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से भी घनष्ट सम्बन्ध था । संघ वालों ने कुरुक्षेत्र में गीता हाई स्कूल के नाम से एक संस्था की स्थापना की । यह विद्यालय हरियाणा की एक महत्वपूर्ण संस्था है । अपनी मृत्यु के समय महाशयजी इसके प्रधान थे । पूज्या माता कौशल्या देवी जी ने अपने स्वर्गीय पति श्री लाजपतरायजी की स्मृति में कुछ दान देने का निश्चय किया । माताजी ने अपना संकल्प अपने ज्येष्ठ श्री महाशय मुकन्दलालजी सेतिया तक पहुंचाया । महाशय जी की प्रेरणा व परामर्श से माता कौशल्या देवी जी ने गीता हाई स्कूल के लिए कुछ बीघे भूमि-खण्ड देना स्वीकार किया ।

सेतिया परिवार की कुरुक्षेत्र में बहुत भूमि है। कुछ भूमि के लिए खेत-मज़दूरों से कुछ विवाद चल रहा था। परिवार के कुछ सदस्यों का विचार था कि विवादास्पद भूमि दान में दे दी जाए। महाशय जी ने कहा कि यह सात्विक नहीं। महाशय जी की प्रेरणा से परिवार के सब लोगों ने विवादास्पद भूमि की बजाए वह भूमि दी जो परिवार के अधिकार में थी।

परोपकारी महाशय जी सदा इसी मनोभावना से कार्य करते थे।

१३

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में

१९३९ ई० के आस पास महाशय जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से भो सम्बन्धित हो गये। अपनी प्रखर राष्ट्रवादी भावनाओं के कारण आर्यसमाजी लोग बिना सोचे समझे प्रत्येक उस आन्दोलन में कूद पड़ते हैं जो भारत भूमि के अभ्युदय का उद्घोष लगा कर चलता है। कांग्रेस में गये। कांग्रेस ने मुस्लिम लीग के सामने घुटने टेक नीति अपनाई तो हिन्दु महासभा व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की ओर चल पड़े।

महाशय जी के संघ में सम्मिलित होने से पूर्व ही यहाँ संघ का कार्य आरम्भ हो चुका था। जब महाशय जी संघ में आए तो संघ इस क्षेत्र में एक सबल जन-शक्ति बन गया। महाशय जी ने जी जान से इस संस्था की शक्ति को बढ़ाया। समोपवर्ती मण्डियों व ग्रामों में कई प्रतिष्ठित व्यक्ति संघ में आए। इनका कारण इतना संघ की लोक-

प्रियता नहीं जितना महाशय जी का गतिमान व्यक्तित्व। संघ में आने से पूर्व ही महाशय जी आर्य सामाजिक कार्य-कर्त्ता के रूप में इस क्षेत्र के अग्रिम पंक्ति के नेताओं में स्थान पा चुके थे। उनके चरित्र, निष्काम सेवा, कार्यदक्षता कर्मण्यता, देश प्रेम आदि गुणों के सम्बन्ध में जनता में दो मत नहीं थे। संघ के नेताओं का सदैव यह यत्न रहा है कि आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं को संघ में लाया जाए। आर्य-समाज के सहस्रों कार्यकर्त्ता संघ में जाकर संघ ही के हो गये। आर्यसमाज से वे दूर चले गए। आर्यसमाज भले ही घाटे में रहा परन्तु इन लोगों ने संघ की प्राणपन से सेवा की। संघ से तो यह लोग एक भी बड़ा छोटा व्यक्ति आर्य समाज में न ला सके। यदि संघ के दो चार बड़े व्यक्ति आर्यसमाजी विचारधारा अंगीकार कर लेते तो महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में आर्यसमाज शीघ्र फैल जाता। दोनों संस्थाओंका हित होता। देश आगे बढ़ता। परन्तु महाराष्ट्र में (मराठावाडा को छोड़ कर) ब्राह्मण आर्यसमाज के सदस्य तक नहीं बनते और अब्राह्मण संघ को ब्राह्मणों की संस्था समझ कर उसमें नहीं गए। अपवाद नियम को सिद्ध करता है।

प्रसंगवश यह बात मैंने यहां लिखी है। यह इतिहास
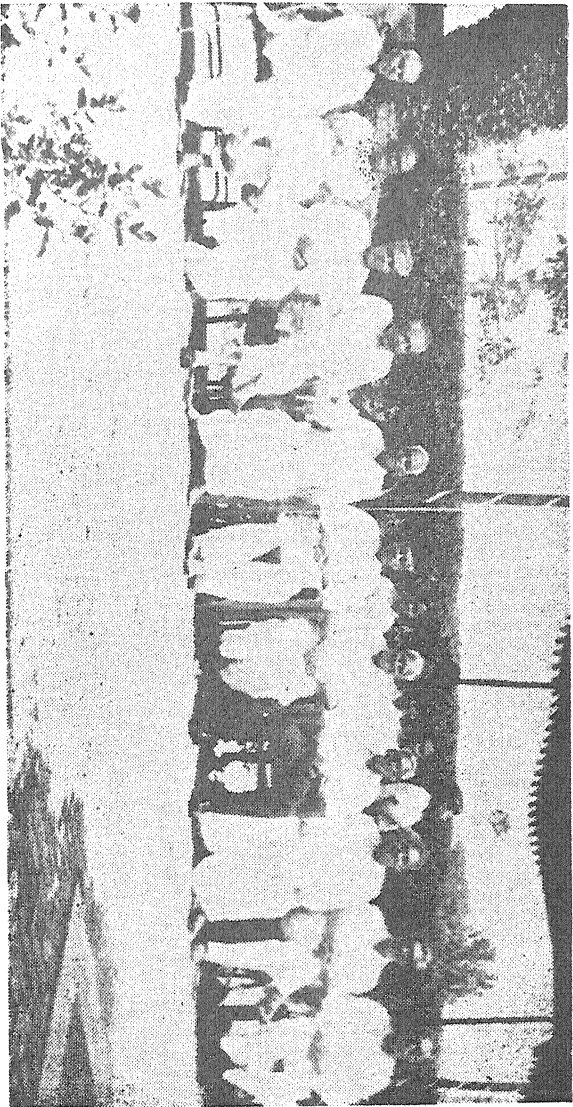
महाशय जी राष्ट्रीय संघ के नेताओं के साथ

का एक कटु सत्य है। भाई परमानन्द जी के प्रति महाशय जी को अडोल श्रद्धा थी। इसलिए उनको संघ में लाना संघ के लिये कठिन न था। थोड़े समय में ही महाशय जी अपनी सेवा के बलबूते पर राष्ट्रीय संघ के तहसील संघ सञ्चालक मनोनीत हो गये। १९४८ ई० में गांधी जी की हत्या के आरोप में संघ वालों की पकड़ धकड़ आरम्भ हुई। महाशय जी भी जेल गये। कारावास में उन्होंने अपने लिये विशेष सुविधाएं लेने से इन्कार कर दिया। सामान्य कार्यकर्त्ताओं के साथ ही वह बन्दी गृह में रहे। बन्दी गृह में अपनी सेवा व सद्व्यवहार से उन्होंने सबको अपना श्रद्धालु बना लिया। धनीमानी व्यक्ति कष्ट सहन नहीं कर सकता। विलास-प्रिय हो जाता है। महाशय जी ने धनी होते हुए भी अपना जीवन तपोमय बना रखा था। कारावास के संकट मुस्काते हुए सहन किए। इस कारावास यात्रा ने उनके मान में और अधिक अभिवृद्धि की।

श्री योगेन्द्र पाल गोयल पत्रकार ने एक घटना बताई श्री गोयल भी १९४८ ई० में बन्दी बनाए गए। योल जेल ज़िला कांगड़ा में गोयल जी को भेजा गया। महाशय जी व अबोहर के कई अन्य संघी कार्यकर्त्ता पहले से ही वहां थे। रात्री को शीत अधिक होता था। ये लोग पर्वतीय शीत के

अभ्यासी न थे। यह लोग दो दो तीन-तीन कम्बल जोड़ कर सोते थे। एक रात्री महाशय जी श्री गोयल के पास आए। गोयल जी को झंझोड़ कर जगाया। निद्रा से गोयल जी उठ तो गये परन्तु महाशय जी का रात्री के समय आकर जगाना उनको बुरा लगा। महाशय जी ने गोयल जी की ओर देखा और कहा आप को तो ठण्ड लग रही है। फिर अपने स्थान पर गये और लौट कर आये। हाथ में घर का नया कम्बल था। गोयल जी पर डाल कर बोले, 'मेरे पास तो घर की बनी रज़ाई है, यह आप ले लीजिये। अब शीत नहीं सतायेगा।' प्रातःकाल पता चला कि महाशय जी रात्री ज़िला फिरोजपुर के सब व्यक्तियों के पास गये। सबकी आवश्यकताएं पूछीं, नोट कीं और पूरी कर दीं। यह थी उनकी विशेषता। जन संग्रह की कला में वह निपुण थे। जन संग्रह के लिये दूसरों का दुःख बांटना ही पड़ता है।

श्री योगेन्द्रपाल ने अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया कि कारावास में सहवास से ही छोटे बड़े को परख होती है। बड़े-बड़े आदर्शवादी नेता वहां खोखले पाए गए। छोटी-छोटी वस्तुओं के लिए यथा डबल रोटी व प्याज़ के टुकड़ों के लिए हो परस्पर झगड़ा हो जाता था। महाशय जी को कभी भी खाने पीने का वस्तु का लोभ करते नहीं

देखा गया। वह घर से भेजी गई वस्तुओं को भी साथियों में वितरित कर देते थे। अपने व्यवहार के कारण वह नेताओं से भी बड़े समझे जाते थे। गोयल जी ने बताया कि जिनको आदर्श मानकर हम चलते थे, जिनको वर्षों पूजा की, वे व्यक्ति कारावास में आदर्शवाद को भूल जाते हैं। उनसे तो सामान्य जन भले व बड़े हैं।

एक दिन कारावास में एक व्यक्ति ने महाशय जी को अनजाने में कुछ कठोर शब्द कह दिये। सेतिया जी के एक मित्र ने आकर कहा, 'कहो तो उसको अभी ठीक कर दूं ?' सेतिया जी ने कहा, 'किसको ?' वह सज्जन बोले, 'वही जो आप को अभी अपशब्द कह रहा था।'

महाशय जी ने कहा, 'मुझे और अपशब्द ! यह कैसे हो सकता है ? आप को भ्रम हुआ है।' यह सुन कर वह व्यक्ति महाशय जी की उदारता व महानता से बहुत प्रभावित हुआ।

श्री योगेन्द्रपाल गोयल उन दिनों अपने आपको जोगिन्द्र पाल लिखा करते थे। महाशय जी ने एक दिन गोयल जी को घर पर उर्दू में पत्र लिखते देखा। प्रेम से गोयल जी से कहा, 'राष्ट्रभाषा में पत्र व्यवहार किया करें। अपना नाम अशुद्ध मत लिखें। जोगिन्द्र शब्द अशुद्ध है। योगेन्द्र लिखा

करें। वह कारावास में गोयल जी को योगी जी कह कर पुकारा करते थे। महाशय जी की प्रेरणा से इस क्षेत्र के एक विख्यात पत्रकार का सार्थक नामकरण हो गया।

श्री रामप्रकाश जी गूम्बर ने बताया कि एक बार वह महाशय जी के साथ संघ के किसी कार्य के लिए किसी गांव जा रहे थे। दोनों घोड़ों पर सवार थे। मार्ग में महाशय जी घोड़े से उतरकर लघु शंका करने लगे। घोड़ा भाग निकला। पकड़ में न आया। रामप्रकाश जी ने कहा, 'आप मेरे घोड़े पर बैठें। मैं उस घोड़े के पीछे जाता हूं। आप तो कार्य क्रम में पहुंचें।

महाशय जी ने कहा, 'मैं आपका घोड़ा क्यों लूं? भूल मैंने की है, आपने तो नहीं। मेरी भूल का दण्ड मुझे ही मिलना चाहिए।'

श्री कशमीरी लाल जी नारङ्ग ने सुनाया कि महाशय जी संघ के कार्य में जिस उत्साह से भाग लिया करते, उसे देख कर तरुण लज्जित हो जाते थे।

महाशय जी ने तन, मन, धन से संघ की सेवा की। आपने संघ को बैंड बाजा भी लेकर दिया। पाठक पहले पढ़ चुके हैं कि संघ के गीता स्कूल कुरुक्षेत्र को भूमि भी आप ही के परिवार ने दी। संघ ने कन्या कुमारी में विवेका

नन्द शिला स्मारक' के लिये धन संग्रह अभियान चलाया तो महाशय जी ने इस कोष में भी पर्याप्त धन दिलाया। अपने घर से भी उदारता पूर्वक दान दिया। संघ के किसी भी कार्य में वह कभी भी पीछे नहीं हटे। संघ के शिविरों, संघ की बैठकों में दूर दूर तक वह निजी व्यय करके जाते रहे।

संघ से अपनी सेवा का कभी भी मूल्य नहीं मांगा। वह चाहते तो इस क्षेत्र से विधान सभा के लिए जनसंघ का टिकट लेकर विधानसभा के सदस्य निर्वाचित होते परन्तु उनके मन में यह भाव कभी उत्पन्न न हुआ। इस क्षेत्र में संघ की शक्ति का मुख्य कारण महाशय जी ही थे। यह एक निर्विवाद सत्य है।

१९५७ ई० के निर्वाचन में लोगों की इच्छा थी कि महाशयजी लोक सभा का निर्वाचन लड़ें। बड़ा दबाव डाला गया परन्तु वह न माने। एक दिन कुछ मित्रों के दबाव में आकर कहा, अच्छा। फीरोज़पुर जाकर देख लेंगे। जब वह फीरोज़पुर से लौटे तो पता चला कि वह किसी प्रकार भी निर्वाचन लड़ने को उद्यत नहीं हुए।

सेतिया जी संघ के कार्यकर्त्ताओं के दुःख सुख का

बड़ा ध्यान रखते थे। १९४७ ई० के दंगों में अंग्रेज़ व मुस्लिम लीग के षडयन्त्र से हिन्दुओं का नर-संहार आरम्भ हुआ। नेहरू जी की कांग्रेस शान्ति पूर्वक यह दृश्य देख रही थी। संघ ने उस समय लीगी दनुजता का वीरता पूर्वक सामना किया। उन दिनों संघ के दो प्रचारकों श्री कुल भूषण जी व श्री प्रेम जी का बम्ब से एक २ हाथ कट गया। हस्पताल में महाशय जी नित्य-प्रति उनका पता करने जाते। वह उनको अपने परिवार के सदस्यों के समान प्यार व दुलार देते थे।

राष्ट्रीय संघ के राजनैतिक पक्ष जनसंघ के वह सदस्य तो न बने परन्तु जनसंघ की इस क्षेत्र में सफलताएं उनके नेतृत्व की ऋणी हैं। १९६८ ई० के मध्यावधि निर्वाचन में पहले तो वह चुपचाप कार्य करते रहे परन्तु कुछ समय पश्चात् विरोधियों के बड़ हांकने पर निर्वाचन अभियान में अपने ही निराले ढंग से वह डटकर जनसंघ के लिए आगे आए। संघ के बड़े बड़े नेता यथा डा० बलदेव प्रकाश व श्री लालचन्द सभ्रवाल क्रमशः प्रधान व उप प्रधान प्रदेश जनसंघ चुनाव में पराभूत हो गये, परन्तु अबोहर से जनसंघी प्रत्याशी बहुत बड़े बहुमत से विजयी हुआ। इसका बहुत सा श्रेय सेतिया जी की कार्य कुशलता

को जाता है । संघ का जन्म यहां भले ही महाशय जी के संघ में आने से पूर्व ही हो चुका था परन्तु इतिहास का तथ्य यह है कि सच्चे अर्थों में वही इस क्षेत्र में संघ के जन्मदाता अथवा संस्थापक थे । वह संस्थाओं के निर्माण की कला के चतुर शिल्पी थे । इसमें अतिशयोक्ति नहीं । सर संघ चालक श्री गुरुजी तक महाशय जी की पहुंच थी । संघ के सब नेता महाशय जी की संघ सेवा का सन्मान करते थे ।

स्वाधीनता के मन्त्र का जप हम सदा करें ।
सेवा में मातृभूमि के तन मन निसार हो ॥

१४

विविध घटनाएं

सेठ चानन लाल आहूजा धर्मार्थ औषधालय

इस क्षेत्र के विख्यात आर्य दानी श्री सेठ चाननलालजी आहूजा ने एक ट्रस्ट बनवाया हुआ है। महाशयजी भी इस ट्रस्ट के एक ट्रस्टी थे। इस ट्रस्ट की ओर से फ़ाज़िल्का में एक धर्मार्थ औषधालय चल रहा है। सहस्रों रोगी प्रतिवर्ष लाभान्वित होते हैं। महाशयजी का एक नियम था कि जब भी वह फ़ाज़िल्का जाते तो औषधालय अवश्य जाते। अपवाद रूप में कई बार फ़ाज़िल्का जाकर वह औषधालय का निरीक्षण न भी कर पाते परन्तु अपवाद नियम को सिद्ध ही करता है। वह रोगियों से पूछताछ करते। यदि उनको औषधालय के कार्य में कोई त्रुटि दीखती तो वह उसे दूर करने करवाने का भरसक यत्न करते। औषधालय के लिए महाशय जी के स्नेह को देखकर सेठ चाननलाल जी बड़े प्रसन्न होते थे।

गो रक्षा सत्याग्रह में, पगड़ी पहने महाशय लालचन्द जी नारंग और उन के दायें महाशय जी

गोशाला अबोहर

जब वेद विरुद्ध मत फैलने लगे तो मानव समाज का सारा साँचा ढांचा ही बदल गया। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकार और बिगाड़ पैदा हो गया। मनुष्यों के विचार, संस्कार, आहार, आचार सब दूषित हो गये। धर्म के नाम पर ठग्गी होने लगी। शाकाहार का स्थान मांसाहार को मिला। गौ जैसे उपयोगी व उपकारी पशुओं की निमर्मता पूर्वक हत्या होने लगी।

आधुनिक युग के महानतम आचार्य, कुरीति-निवारक, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने गोरक्षा के लिए आवाज़ उठाई। महर्षि ने गो करुणानिधि नाम के लघु ग्रंथ की रचना कर अपने नाम के गौरव को और भी बढ़ा दिया। महर्षि ने इस युग में सर्वप्रथम रेवाड़ी में गो-शाला की स्थापना करवाई।

आर्य समाजी कार्यकर्त्ता के रूप में महाशय मुकन्दलाल के हृदय में गो-भक्ति की भद्र भावना किसी से कम न थी। विक्रम संवत् १९६५ में अबोहर में गोशाला की स्थापना की गई। महाशयजी गोशाला के कभी अधिकारी तो नहीं बने परन्तु वह गोशाला के सदस्य थे। गोशाला की उन्नति के लिए वह सदैव योगदान देते रहे। कुछ समय

तक वह गोशाला के उप मन्त्री भी रहे।

सन १९६७ ई० में जब गोरक्षा का देशव्यापी आन्दोलन चला तो महाशय जी भी आर्य समाज अबोहर की ओर से सत्याग्रह के लिये गये। कुछ दिन वह कारावास में रहे। शीघ्र उन्हें मुक्त कर दिया गया था। देश स्वतन्त्र होने के पश्चात् नेहरू जी की धर्मविरोधी नीति के फलस्वरूप गोवंश के संहार को देखकर वह बड़े दुखी होते थे। अपनी हृदय की व्यथा वह बातचीत में व्यक्त करते रहते थे। **कारावास से उन्होंने कई भावपूर्ण प्रेरणाप्रद** पत्र लिखे।

"Whole sale slaughter of animals have made us callous hearted. (Vedic culture)

पशुओं के खुले संहार ने मनुष्यों को पाषाण-हृदय बना **दिया है।**

एक वाचनालय का निर्माण

श्री योगेन्द्रपाल गोयल पत्रकार ने बताया कि अबोहर नगर में एक वाचनालय की स्थापना की योजना बनाई गई। स्थान की समस्या उत्पन्न हुई। महाशय जी ने अपनी दुकान दे दी। मेज़ों की आवश्यकता पड़ी तो वे भी दे दिये। अपने व्यय से महाशय जी एक दैनिक पत्र भी वाचनालय के लिए मंगवा कर देते रहे। उनकी

सृजनात्मक शक्तियों के चमत्कार नगर की निर्माण योजनाओं के समय सदैव देखने को मिले।

जो तड़प उठे जन पीड़ा से,
वह सच्चा मुनि मनस्वी है।
जो राख रमा कर आग तपे,
वह भी क्या ख़ाक तपस्वी है॥

बिक्री-कर आन्दोलन

१९४१-४२ ई० की बात है। पंजाब में जींमादारा पार्टी का मन्त्री मण्डल था। राष्ट्रीय आन्दोलन तथा द्वितीय महायुद्ध के कारण राजनैतिक वातावरण में बहुत गर्मी थी। पंजाब सरकार के बिक्री-कर अधिनियम के विरुद्ध व्यापारी वर्ग ने प्रचण्ड आन्दोलन चलाया। श्री बिहारी लाल चानना इस आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। अबोहर के व्यापारियों ने भी इसमें बढ़चढ़ कर भाग लिया। श्रीयुत गोकुल चन्द जी तथा महाशय बनवारीलाल जी धूरिया इस आन्दोलन में जेल भी गये। महाशय मुकन्दलाल जी ने भी इस आन्दोलन में बड़ी रुचि ली। महाशय जी ने इस आन्दोलन में बड़ा योगदान दिया। उनके सक्रिय सहयोग से यहां के व्यापारियों का बड़ा साहस बढ़ा। अबोहर नगर में बिक्री-कर आन्दोलन

की सफलता का कुछ श्रेय महाशय जी को भी जाता है।

जूझना मैं झंझटों से मुस्कराना जानता हूं।

उलझना मैं उलझनों से खिलखिलाना जानता हूं ॥

जब देश का विभाजन हुआ

लेखराम नगर निवासी महाकवि 'शान्त' ने धर्मवीर पं० लेखराम जी पर अपने महाकाव्य 'अमर कथा' में भारत की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में लिखा है :—

तू देवी है मगर लाशों के अम्बारों से निकली है।

तू आई है हज़ारों लाल चूड़े तोड़ कर देवी।

उस विकट विषम वेला में महाशय मुकन्दलाल जी ने अपने सर्व सामर्थ्य से देश जाति की सेवा की। जब नवाखली में हिन्दुओं पर अत्याचार ढाये गए तो आर्य-समाज के सेवक पूर्वी बंगाल में पीड़ित भाइयों की सेवा को पहुंचे। आर्य समाज ने वहां कई सहायता केन्द्र खोले। नवाखली से कई अनाथ बच्चे पंजाब लाये गए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशानुसार अबोहर के आर्यसमाज ने भी इस सेवा कार्य में बढ़चढ़ कर सहयोग दिया। बंगाल के पीड़ितों की सहायता के लिए अबोहर

की आर्य पुत्री पाठशाला में विशेष बैठक व उत्सव किये गये । महाशय जी इन सब कार्यों में अग्रणी रहे । उन दिनों वह कई बार लाहौर व दिल्ली में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की बैठकों व शिविरों में जाते रहे। संघ की ओर से हिन्दु जाति व देश की सेवा के लिए जो भी योजना बनाई गई महाशय जी उसे मूर्त्तरूप देने में कृतसंकल्प हो जाते थे। देश जाति की दुर्दशा देखकर वह रक्त रोदन करते थे । उन पर देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी का गहरा प्रभाव था । भाई जी देश विभाजन का आघात सहन न कर सके। वह इसी दु:ख से घुल घुल कर मर गये । भाई जी की अन्तः वेदना आजीवन सेतिया जी को तड़पाती रही । उनकी तड़प ने उनको कभी चैन से न बैठने दिया ।

बटवारे से पूर्व एक व्यक्ति बाग़ अली सखेरा अबोहर से ज़मीदारा पार्टी के टिक्ट पर मुसलमानों का प्रतिनिधि होकर विधान सभा का प्रतिनिधि निर्वाचित होकर विधान सभा का सदस्य बना। देश विभाजन के समय वह मुसल-मानों की सभाओं में भाषण दिया करता था। उसका उत्तर महाशय जी दिया करते थे। यद्यपि महाशय जी कोई बड़े

ओजस्वी वक्ता न थे तथापि जहां दूसरे धनीमानी व्यक्ति संघर्ष के समय आगे आने से कतराते हैं वहां महाशय जी परीक्षा की घड़ी पीछे रहना जानते ही न थे । देश की पीड़ा उनको आगे आने पर विवश करती थी ।

जब देश का विभाजन हुआ तो मुस्लिम लीग ने सारा पंजाब व सारा बंगाल माँगा । मुस्लिम लीग तो आसाम काश्मीर की भी मांग करती रही । सम्भव है कि नेहरू जी व उनकी कांग्रेस अपनी कायरतापूर्ण मुस्लिम पोषक परम्पराओं का सन्मान करते हुए सम्पूर्ण बंगाल व सम्पूर्ण पंजाब पाकिस्तान को दे देते परन्तु हिन्दु महासभा के नेता दूरदर्शी देश-भक्त डा० श्याम प्रसाद मुखर्जी ने पंजाब व बंगाल के विभाजन की मांग करके देश का बहुत सा भाग बचा लिया । एक बार संसद में डा० जी ने नेहरू जी से कहा भी था :—

You Partitioned India I Partitioned Pakistan. अर्थात् तुमने, तुम्हारी कांग्रेस ने भारत का बटवारा किया मैंने पाकिस्तान का विभाजन करवाया । जब पंजाब के विभाजन के लिए अंग्रेज सरकार ने रैडकल्फ-आयोग बिठाया तो मुसलमानों ने फ़ाज़िल्का तहसील को छोड़कर सारा फ़ीरोजपुर ज़िला भारत को देना मान लिया । आयोग के

सामने दोनों पक्षों ने अपना अपना पक्ष रखा।

उन दिनों फ़ाजिल्का क्षेत्र के हिन्दुओं को अपना पक्ष रखने के लिए महाशय जी जैसे योद्धा का नेतृत्व प्राप्त था। महाशय जी ने गांव २ से आंकड़े एकत्रित किये। वह लाहौर आते व जाते रहे। अन्य हिन्दू भी इस कार्य में सहयोग देते रहे परन्तु प्रत्यक्ष में आगे आकर संग्राम करना प्रत्येक व्यक्ति के बस की बात नहीं। धनी मानी लोग समय की सरकार से टक्कर लेने से घबराते हैं। सेतिया जी तन, मन व धन तीनों से राष्ट्र सेवा में जुट जाया करते थे।

यहाँ यह उल्लेख कर देना आवश्यक है कि फ़ाजिल्का तहसील भारत के लिये ले लेना कोई साधारण बात न थी। उस समय पंजाब विधान सभा में मुस्लिम लीग सबसे बड़ा दल था। आज तो मुसलमान भारत में कांग्रेस को व ऐसे और दलों की टोपियां पहन कर कई प्रकार के नारे लगाते हैं। उस समय लगभग सारे मुसलमान मुस्लिम लीगी ही थे। विधान सभा में लीग के नेता नवाब ममदोट थे। नवाब साहेब की जागीर ममदोट इसी फ़ाजिल्का क्षेत्र में पड़ता है। पाठक इससे अनुमान लगा सकते हैं कि मुस्लिम लीग ने फ़ाज़िल्का प्राप्ति के लिए कितना प्रयत्न

किया होगा। फ़ाज़िल्का भारत को मिल गया इसके लिए देश महाशय जी के भगीरथ प्रयास को न भूल सकेगा।

चरित्र निर्माण सभा

सेतिया जी अहर्निश देश के लिए सोचते थे । उनको तन के सुख का तनिक भी विचार न था । विश्राम का शब्द उनके शब्दकोष में ही न था। देशोद्धार के लिए नित नई योजनाओं की सृष्टि करते रहते थे। अश्लील चित्र व अश्लील चलचित्रों के कुप्रभाव को देखकर उनके कोमल हृदय को टीस लगी। अपने नगर के प्रमुख लोगों का आपने इस बुराई से भिड़ने के लिए आवाहन किया। परिणाम स्व-रूप चरित्र निर्माण सभा अबोहर की स्थापना हुई। वह इस सभा के मन्त्री थे न प्रधान. न प्रचारमन्त्री न उपप्रधान। वह थे साधारण सदस्य, परन्तु तथ्य यह है कि इसके जन्मदाता भी वही थे और इस सभा के प्राण भी वही थे। अश्लोल चित्रों के विरुद्ध आपने अभियान चलाया । वीरों के, सुधा-रकों के, विचारकों के, मुनियों के, महात्माओं के, हुतात्माओं के चित्र घरों व दुकानों पर लगाने की सबको प्रेरणा देते। अश्लील चित्र उतरवाते। इसके लिए आपने विज्ञापन भी छपवाए। महर्षि दयानंद निर्वाण पर्व (दीपमाला) के अवसर पर कैलण्डर विक्रेताओं को अच्छे चित्र लाने की प्रार्थना

करते थे । नगर वासियों को 'आचारः परमो धर्मः' का आर्ष घोष देकर नगर में एक नये वातावरण का निर्माण करना उसी कर्मवीर का कार्य था ।

फ़ाज़िल्का डबवाली ट्रांसपोर्ट के मैनेजर श्री डोडा के घर श्री महाशय जी व महाशय नन्दलाल जी आर्य का भोजन था । उसके घरमें अश्लील सिनेमा चित्र लगे देखकर महाशय मुकन्दलाल जी ने भोजन करने से इनकार कर दिया । श्री डोडा जी से चित्र उतरवा कर महाशय जी ने भोजन करना स्वीकार किया । यह थी उनकी लग्न ।

सैंकड़ों सुन्दर चित्र एकत्रित करके एक विशाल प्रदर्शनी रखी गई । इसका आयोजन केवल एक दिन के लिये किया गया । परन्तु लोगों के आग्रह पर इसे तीन चार दिन तक रखना पड़ा । घर घर, गली गली, अश्लील चित्रों के विरुद्ध वातावरण पैदा हुआ । १९६९ ई० में जब आर्य युवक समाज ने पुनः यह आन्दोलन चलाया तो श्रीयुत प्रह्लाद नाई को अच्छे चित्र लगाने पर सर्वप्रथम पुरस्कार मिला । श्री प्रह्लाद नाई (फूलचन्द) ने कहा, यह पुरस्कार तो हमें सेतिया जी के कारण प्राप्त हुआ । यह उस आन्दोलन का फल है जो गत प्रदर्शनी के समय महाशय जी ने आरम्भ

किया था।

श्री प्रह्लाद बारबर शाप के मालिक श्री फूलचन्द के ये शब्द महाशय जी के आन्दोलन के ठोस परिणाम का उदाहरण हैं !

१५
अन्तिम यात्रा

वेद भगवान् कहता है 'कालो अश्वो वहति' अर्थात् काल रूपी घोड़ा दौड़ रहा है। काल चक्र से कोई शरीर धारी बच नहीं सकता। जो बना है सो टूटेगा। जिसका आद है उसका अन्त होगा ही। यह अटल नियम है। मर्हषि दयानन्द जी महाराज ने स्वमन्तव्य प्रकाश में लिखा है कि शरीर के प्राप्त होने का नाम जन्म व छूटने का नाम मृत्यु है। आर्योद्देश्य रत्नमाला में भी मर्हषि लिखते हैं कि जब शरीर व जीव अलग अलग होते हैं उसको मरण कहते हैं।

इस सृष्टि नियम के अनुसार २३-८-१९६९ को महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया का निधन हो गया। वह २२-८-६९को प्रातः चण्डीगढ़ से आए। यहांसे फ़ाजिल्का चले गये। फ़ाज़िल्का अपने कार्यों में व्यस्त रहे। सकुशल घर लौटे। रात्री १२ बजे उनको कुछ कष्ट अनुभव हुआ। घर वालों को कहा कि मुझे दर्द है। डाक्टर को बुलाया

गया। प्रातः ५ बजे के लगभग कई डाक्टर आए। आपने कहा, 'कोई विशेष बात नहीं, मैं ठीक हूं।'

२३ को ११ बजे महाशय जी के अभिन्न-हृदय मित्र डा० श्रीराम जी भी आए। और भी कई आर्य समाजी सज्जन मिलने गये। महाशय जी प्रसन्न चित्त थे। महाशय जी अपनी वृद्धा माता जयदेवी जी व घर के अन्य सदस्यों से यही कहते रहे, आप विश्राम करो। मैं ठीक हूं। कोई चिन्ता की बात नहीं। डेढ़ बजे औषधि दी गई। लेट गये। ऊपर कपड़ा ले लिया। अपने सुपुत्र श्री वेद प्रकाश जी से कहा; 'तुम जाओ मुझे आवश्यकता हुई तो मैं बुला लूंगा।'

पौने दो बजे देखा गया कि महाशय जी का आत्मा इस नश्वर शरीर को छोड़ चुका है। हाथों की मुट्ठियां बन्द थीं। प्रभु का चिन्तन करते हुए वह संसार से चल बसे।

वह कर्मचक्रवाद में विश्वास रखते थे। ईश्वर के न्याय नियम को शिरोधार्य कर वह हंसते हंसते इस संसार से विदा हुए। अपने आचार्य ऋषि दयानन्द के अन्तिम शब्द, 'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो, पूर्ण हो, पूर्ण हो' इस आस्तिक वेदाभिमानी का आदर्श थे।

इन शब्दों में उनको कितना विश्वास था यह उन्हीं के अन्तिम शब्दों में पढ़िए। उनकी डायरी में मैं उनके अन्त समय के ये शब्द पढ़ कर चकित रह गया । ये शब्द पढ़कर मेरे मुख से अनायास निकला 'महाशय जी सचमुच महान थे।' उनका जीवन गर्वीला जीवन था । उनकी मृत्यु भी गर्वीली ही रही। जो मृत्यु से डर गया वह सच्चा आस्तिक नहीं। उसने जीवन में कुछ पाया नहीं, गंवाया ही है।

महाशय जी ने मृत्यु से कुछ समय पूर्व अपनी डायरी में लिखा; 'मृत्यु नाम की कोई अवस्था है ही नहीं। शरीर के नाश को अपनी मृत्यु समझना भारी भूल है। हम शरीर नहीं हैं; आत्मा हैं...

कामना का अन्त नहीं इसको वश में करना कठिन अवश्य है, किन्तु दृढ़ निश्चय और साहस की आवश्यकता है। आत्मा इनना शक्तिशाली है कि इसके प्रकाश से जीवन का अन्धेरा भाग जाता है।"

मृत्यु के समय ही व्यक्ति के जप, तप, साहस, संयम संकल्प, मनोबल की परीक्षा होती है। महाशय जो साधु नहीं थे, सन्त नहीं थे, मुनि या महात्मा न थे। वह जीवन पथ के एक पथिक थे। मानना पड़ेगा कि उनकी अन्तिम

वेला की परीक्षा ने सिद्ध कर दिया कि वह गृहस्थी वेश में एक असाधारण पथिक थे।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने ऋग्वेद भाष्य में लिखा है, 'किसी को भी मृत्यु से भय करना योग्य नहीं है क्योंकि जिन का जन्म हुआ है उनकी मृत्यु अवश्य होती है इस लिए मृत्यु से डरना मूर्खों का काम हैं।' ऋ० १.४१.१

महर्षि दयानन्द जी के यह वेदोक्त वचन जीवन व मृत्यु के रहस्य खोलते हैं। बड़े छोटे की पहचान की यही एक कसौटी है। माता जयदेवी के सुपुत्र महाशय मुकन्द लाल इस कसौटी पर ठीक उतरे। मृत्यु उन पर विजय न पा सकी। उसी कर्मवीर को यहाँ भी जय और विजय प्राप्त हुई। वास्तव में जीत उसी की मानी जाती है जो अन्त में विजयी हो। महाशय जी जीवन भर समस्याओं, विपदाओं से झूझते रहे, विजयी होते रहे। चलते फिरते और मुस्काते हुए संसार से चले गये।

मनुष्य संसार में रोता हुआ जन्म लेता है। तब उस के जीवन का परिचय उस के रोदन से ही मिलता है। बालक का जन्म परिवार व स्वजनों के लिए हर्षोल्लास का कारण वनता है। निःसन्देह उस मानव का जीवन

सफल है जिस के मरण पर परिवार रोता है और बन्धुवर्ग अपने बेगाने सब शोकाकुल होते हैं। जो प्रसन्न मुद्रा में संसार से विदाई ले और संसार उस के जाने पर अश्रु बहाए उसी नरवर की जीवन यात्रा सफल समझनी चाहिए।

महाशय मुकन्द लाल की मृत्यु अढ़ाई बजे दोपहर के लगभग हुई। बहुत थोड़े समय में यह समाचार जंगल की ज्वाला के समान नगर में फैल गया। पाँच बजे तक बड़ी संख्या में नर नारी उन के निवास स्थान पर पहुंच गये। उन की शव-यात्रा के साथ जितना जन समूह था; इतनी बड़ी भींड़ लोग कहते थे कि किसी शव यात्रा में सम्भवतः कभी कम ही देखी गई हो। उनके निधन पर आर्य पुत्री पाठशाला में जो शोक सभा हुई उसकी उपस्थिति भी महाशय जी की लोक-प्रियता, निष्काम सेवा, ठोस कार्यों का परिचय दे रही थी। उनके मित्रों ने तो श्रद्धाञ्जलियां अर्पित करनी ही थीं। वे लोग भी उनका गुणगान कर रहे थे; जो विचारधारा में भिन्नता के कारण जीवन भर उनके विरोधी रहे। वहां मैं ने ऐसी शोक सभा भी दो चार वर्षो में नहीं देखी। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके घर में जो अन्तिम शोक सभा हुई उसमें भी उपस्थिति का कोई ठिकाना

न था । घर का आंगन भर गया तो लोग गली में बैठ गये । इतना यश भाग्य से ही किसी को मिलता है । उनको बहुत दीर्घ जीवन तो नहीं मिला । परन्तु एक विद्वान ने लिखा है :-

"A long life may not be good enongh but a good life is long enough ?"

एक दीर्घ जीवन भले ही बहुत अच्छा न हो परन्तु, एक अच्छा जीवन निश्चय ही बहुत दीर्घ है । यह वाक्य सेतिया जी जैसे परमार्थी पुरुषों पर ही पूरा-पूरा घटता है ।

एक ओ३म् को ध्याइये सकल प्रपंच विसार ।
हो 'प्रकाश' भवसिन्धु से जीवन-नैया पार ॥

———

स्वेन क्रतुना

सं वदेत। ऋ० १०. ३१.२

हम कर्म द्वारा अभिप्राय को प्रकट करें ।

पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इस लिये है कि जिस से संचित प्रारब्ध बनते, जिस के सुधरने से सब सुधरते और जिस के बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसी से प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।

(सत्यार्थ प्रकाश)

चेतना आशा से जीवन वाटिका सुरभित रहे।
धमनियों में रक्त उष्ण शूरवीरों का बहे ॥
विश्व में डिग-डिग के भी उठ-उठ के पग बढ़ता रहे ।
रश्मियां लेकर विजय की सूर्य नित चढ़ता रहे ॥

विविध झांकियां

नमस्ते ही एक मात्र अभिवादन

शतियों की दासता के कारण भारतीय जनता के विचार, संस्कार, व्यवहार, आचार सब बिगड़ गये हैं। हम अभिवादन की सरल श्रेष्ठ वैदिक पद्धति को भी भूल गये हैं। महर्षि दयानन्द ने सांप्रदायिक एवं पृथकता को बढ़ाने वाली विभिन्न २ अभिवादन पद्धतियों को जड़-मूल से उखाड़ने का प्रयास किया। नमस्ते का अनादि वैदिक अभिवादन देकर ऐक्यवादी ऋषि ने राष्ट्र व मानव समाज पर भारी उपकार किया है। महाशय मुकुन्द लाल जी ने इस क्षेत्र में नमस्ते का बड़ा प्रचार किया। Good Morning आदि शब्दों द्वारा अपना अभिवादन अस्वीकार करते थे। दूषित वातावरण के प्रभाव में प्रायः हम लोग हाथ जोड़कर नमस्ते नहीं करते। नमस्ते कह कर हाथ मिलाते हैं। सेतिया जी इस अवैज्ञानिक अनार्ष रीति का घोर विरोध किया करते थे। कई बार भूल चूक से हम शिक्षक

लोग भी नमस्ते कह कर उन से हाथ मिलाने को हाथ बढ़ा देते। सेतिया जी अपने विशिष्ट ढंग से कहते "आप तो शिक्षक हैं आप का कार्य हमें शिक्षा देना है। आप अभारतीय अस्वाभाविक ढंग से क्यों अभिवादन करते हैं।" यह उचित नहीं।" सेतिया जी के ये शब्द सुन कर हमें कई बार लज्जित होना पड़ता था। नमस्ते के कई प्रेमियों को सेतिया जी ने नमस्ते का ढंग सिखाया।

परिवार से विचार बड़ा

महाशय जी के भाई किशोर चन्द जी के पुत्र श्री रमेश की बरात गंगानगर गई। बरातियों ने भंगड़ा नाच नाचा। अरोड़वंश सभा ने इस के विरुद्ध प्रस्ताव पारित कर रखा था। महाशय जी ने सामाजिक नियम का उल्लंघन न करने की प्रेरणा दी। नाचने वाले नाचने से न टले। महाशय जी बरात से निकाल गये। वहां कुछ खाया न पिया। परिवार वाले उन का निश्चय न बदल सके। परिवार से उन के लिए विचार बड़ा था। सिद्धान्त प्रिय था।अपने घर से वह सुधार आरम्भ करते थे।

श्री किशोर चन्द जी के चिरंजीव श्री सुनील की बरात फ़ाज़िल्का गई। महाशय जी को पता चला कि बराती युवक वहां सुरापान करेंगे। उन्होंने साथ जाने से इनकार कर दिया।

महाशय जी के भतीजे श्री महाशय चूनी लाल जी सेतिया के चिरंजीव सुरेन्द्र की बरात फ़ाज़िल्का गई। महाशय जी को पता चला कि वहां भी कुछ लोग सुरापान करेंगे। उन्होंने इस विवाह में भी सम्मिलित होने से इनकार कर दिया। परिवार के वे लोग जिन के कारण इन तीनों विवाहों में मर्यादा भंग हुई—अपनी भूल पर लज्जित तो थे। महाशय जी के रुष्ट होने पर भी उनके प्रति सब का आदर भाव यथापूर्व बना रहा। परिवार के शेष वृद्धजन यथा श्री महाशय चूनी लाल जी, श्री कर्मचन्द जी, श्री कुन्दन लाल जी, श्री किशोर चन्द जी सभी मर्यादा भंग करने के विरुद्ध तो थे परन्तु मर्यादा तोड़ने वालों की मनमानी का विरोध न कर सके। कारण स्पष्ट है कि युग की उलटी धारा के कारण युवक बड़ों की सुनते नहीं। महाशय मुकन्द लाल जी अपनी धुन के धनी थे। वह अपने बेगाने छोटे बड़े सब के विरोध की चिन्ता से मुक्त अपने पथ से विचलित न होते थे।

राष्ट्रभाषा के प्रेमी

महाशय जी के अनन्य मित्र नगर के सर्वमान्य नेता श्री डा० श्रीराम जी ने अपने पोते को शिक्षा प्राप्ति के लिये इंगलैंड भेजने की व्यवस्था की। बालक की विदाई के उपलक्ष में पूज्य डा० जी ने घर पर यज्ञ हवन का आयोजन

किया । नगर के बड़े बड़े नागरिक निमन्त्रित किये गये । इस अवसर पर कई व्यक्तियों को बोलने के लिये कहा गया । स्थानोय राजकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय के एक भूतपूर्व ईसाई मुख्याध्यापक ने बोलते हुए कहा कि मैं बालक के लिए शुभकामना भेंट करता हूं । बालक शीघ्र वहाँ जाकर अंग्रेज़ी में प्रवीण हो जाए । वहां से अपने दादा को अंग्रेज़ी में पत्र लिखने की शीघ्र अति शीघ्र क्षमता प्राप्त कर ले आदि २ ।

अन्त में मेरा भाषण था । मैंने कहा मेरे आचार्य ऋषि दयानन्द ने तृण से लेकर ब्रह्म पर्यन्त ज्ञान प्राप्त करने का आदेश दिया है । ऋषि ने अपने सुशिष्य भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन के जन्मदाता श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा को विदेश में लिखा कि कुछ भारतीय युवकों को मैं तुम्हारे पास भेजता हूं । इनको विज्ञान, कला कौशल में उच्च शिक्षा दिलाने का प्रबंध करो । इस लिए मैं कहीं से भी कुछ सीखने का विरोधी नहीं । बालक के विदेश जाने पर परिवार को वधाई । परन्तु एक खरी बात कहूंगा । किसी को बुरी लगे तो मुझे चिन्ता नहीं । उस देव दयानंद का सैनिक हूं जिसके बारे श्रद्धेय पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने लिखा है –

"Truth was dearer to him than name, fame and

Prestige' अर्थात् नाम, मान, प्रतिष्ठा से ऋषि को सत्य अधिक प्यारा था। बालक से सम्बोधित करते हुए मैंने कहा विदेश जाकर संध्या के नियम का पालन करना। संध्या नहीं आती तो गायत्री का प्रातः सायं पाठ करना। अपने देश वासियों से अपनी राष्ट्र भाषा में हो वार्ता करना। यहां पत्र-व्यवहार अपनी भाषा में ही करना। अंग्रेज़ी पढ़ना परन्तु अंग्रेज़ी अपनाना मत। भाई परमानन्द जी व ला० लाजपतराय जी के दृष्टान्त देकर बताया कि अंग्रेज़ी में पत्रव्यवहार और बोलचाल राष्ट्र का अपमान और आत्म-हीनता का प्रमाण होगा। अनार्यपन से सदैव बचना।

श्रोताओं ने मेरे विचारों को बहुत पसन्द किया। बाहर निकले तो महाशय बख़्तावर लाल जी तथा महाशय मुकन्दलाल जी ने मेरी स्पष्टवादिता व सिद्धान्त-प्रियता की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए मुझे आशीर्वाद दिया। महाशय मुकन्दलाल जी ने तो हर्ष विभोर होकर कहा राष्ट्र भाषा से ऐसी श्रद्धा होगी तभी देश बचेगा। आपने समय पर अराष्ट्रीय विचारों का विरोध कर के अपना कर्त्तव्य निभाया है। यही आर्यत्व है। हमारे ही घर एक अंग्रेज़ी भक्त ईसाई हमारी पगड़ी उतार जाए; यह असह्य है।

नम्रता

एक बार आर्यसमाज अबोहर की अन्तरंग सभा

की एक बैठक में महाशय जी ने दुखी हृदय से एक कटु सत्य कहा। सब समझते थे कि महाशय जी की बात कटु भले ही है परन्तु है कठोर सत्य। श्रद्धेय आचार्य ग्रोवर जी ने महाशय जी को वे शब्द वापिस लेने के लिए कहा। आचार्य जी एक विवाद मिटा रहे थे। महाशय जी उठकर चल दिये। आचार्य जी ने कहा जाते हो तो जाओ। कुछ सज्जनों ने महाशय जी को प्रार्थना कर के फिर बैठा लिया। महाशय जी ने कहा, 'प्रिंसिपल ग्रोवर जी की आज्ञा का उल्लंघन मैं नहीं कर सकता। जैसी उनकी इच्छा है वह करें। यह बात किसी से छिपी नहीं कि नगर में प्रिंसिपल नारायणदास जी को जिन व्यक्तियों ने डी० ए० वी० संस्थाओं के निर्माण में सर्वाधिक सहयोग दिया उनमें महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया एक थे। महाशय मुकन्द लाल जी की चर्चा के बिना पूज्य आचार्य ग्रोवर जी के सेवा कार्यों की कहानी सदैव अधूरी ही रहेगी। महाशय जी की नम्रता की यह पराकाष्ठा थी। उन्होंने मान अपमान की चिन्ता न करते हुए संगठन सूत्रधार की आज्ञा को शिरोधार्य किया।

व्यवहार-कुशलता

१९६९ ई० में पञ्जाब विधान सभा का मध्यावधि निर्वाचन हुआ। महाशय जी संघ के पक्ष में थे। संघ के

तो वह प्रमुख स्तम्भ थे। महाशय नन्दलाल जी आर्य संघ के विरोध में श्री परमानन्द जी डोडा का साथ दे रहे थे। महाशय जी और महाशय नन्दलाल आर्य की अटूट मित्रता रही है। निर्वाचन के दिनों में एक दिन महाशय जी बारह नम्बर गली से निकल रहे थे तो महाशय नन्दलाल जी आर्य ने उन्हें अपनी दुकान पर बुलाया। महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया का उत्तर था, 'अभी बात नहीं करूंगा। आप संघ के विरोधी प्रत्याशी का पक्ष ले रहे हैं और मैं संघ का। परस्पर बातचीत करते समय कहीं निर्वाचन की चर्चा न हो जाए। निर्वाचन की चर्चा करते २ कहीं विचार भेद के कारण कोई कटु या अप्रिय वचन न मुख से निकल जाए। मैं आप से अपने सम्बंध बिगाड़ना नहीं चाहता। अतः निर्वाचन के पश्चात् ही पूर्ववत मिला करेंगे।" महाशय नन्दलाल जी पर इन वाक्यों का अमिट प्रभाव पड़ा। वह महाशय जी की व्यवहार-कुशलता पर मुग्ध हो गये। उन्होंने निर्वाचन के दिनों में गली नम्बर १२ में प्रायः आना जाना ही कम कर दिया। कारण यही था कि वह अपने अन्यतम बंधु महाशय नन्दलाल जी से मिले बिना रह न सकते थे। कटुता से बचने का यही एक मार्ग था। निर्वाचन में लोग सबसे पहले मिलते ही मित्रों से हैं परन्तु

महाशय जी ने जब देखा महाशय नन्दलाल जी ने अपना निश्चित मन बना लिया है तो उन्होंने उनसे इस विषय में तनिक भी चर्चा नहीं की।

'तुम अपना कर्त्तव्य निभाओ'

महाशय मुकन्दलाल जी आर्यसमाजी संस्कारों विचारों के कारण सदैव सुधार व उपकार के कार्य में संलग्न रहते थे। अरोड़वंश सभा ने दो तीन वर्ष पूर्व जब सामाजिक रूढ़ियों कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाया तो महाशय जी इसमें अग्रिम पंक्ति के महारथी थे। सुधार का जितना अधिक यत्न किया गया बिगाड़ की उतनी अधिक बाढ़ आई। महाशय नन्दलाल जी ने एक दिन सेतिया जी से कहा 'महाशय जी आप इतना समय देते हैं। इतने यत्न करते हैं फिर भी लोग अपना भला बुरा नहीं सोचते तो आपको क्या पड़ी है जो दिन-रात इन कार्यों में जुटे रहते हो।'

महाशय जी ने उत्तर दिया, 'लोग मानें या न मानें अपना कर्त्तव्य निभाते जाना चाहिए।' उनके जीवन का आदर्श था :–

बंधुवर्ग से प्यार न करना जिसने सीखा।
देश जाति उपकार न करना जिसने सीखा॥
विनययुक्त व्यवहार न करना जिसने सीखा।
हा! जन्म हुआ निःसार न जीना उसने सीखा॥

जब सेतिया जी का विवाह हुआ

महाशय जी के ज्येष्ठ भ्राता ला० कर्मचन्द जी सेतिया की पत्नी श्रीमती विद्यावती जी ने एक घटना सुनाई कि जब महाशय जी का विवाह हुआ तो माता विद्यावती जी ने प्रचलित रीति रिवाज के अनुसार अभद्र गीत गाया या कोई अशोभनीय बात कह दी। आर्य समाज सब सामाजिक बुराइयों से जूझता है। महाशय जी ने स्वयं अपनी भाभी को टोक दिया। रामायण से माता सीता के पवित्र जीवन व ऊँचे आदर्शों की दुहाई देकर आपने महिलाओं से घटिया मनोविनोद बन्द करने की प्रार्थना की।

दूसरे के विवाह पर कहना कुछ और बात है और अपने विवाह पर ही कुरीतियों से टक्कर लेना यह और बात है। पहली से दूसरी बात अधिक कठिन है।

'सत्य कहना बुरा नहीं'

एक बार एक सभा में बड़ा अनर्थ होता देख कर आर्य युवक समाज अबोहर के स्तम्भ रूप कार्यकर्त्ता श्री अशोक आर्य ने अपना मन्यु प्रकट करते हुए खरी खरी सुनाई। इस स्पष्टवादिता से बड़े बड़े कुर्सी-भक्त बोखला गए। एक ने व्यंग्य कसते हुए कहा, 'आपका विराट रूप देखा।' महाशय ठाकुर दास जी ने भी अपने पुत्र की गर्मी पर

श्री सेतिया जी से कहा, "अशोक को इतना गर्म नहीं होना चाहिए था।" इस पर श्री सेतिया जी ने कहा, "अशोक जी की बात सत्य थी या असत्य ?" महाशय ठाकुर दास जी ने कहा कि सत्य। तब सेतिया जी ने कहा कि यदि अशोक जी स्पष्टवादिता से कार्य न लेते तो अनर्थ ही होता। अशोक जी ने निस्वार्थ भाव से समाज का हित किया है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री सेतिया जी छोटों की भी अच्छी बात का समर्थन किया करते थे।

स्वदेश भक्त

सेठ चानन लाल जी आहूजा ने १९५६ ई० में विदेश यात्रा का निश्चय किया। वह पर्याप्त समय तक विदेश में रहना चाहते थे। सेतिया जी को जब इसका पता चला तो उन्होंने वहां अधिक समय रहने के विचार को बदलने की प्रार्थना की। शीघ्र लौटने का वचन लेकर ही विदेश जाने दिया। जब पाँच मास के पश्चात् आहूजा जी लौटे तो आपने बड़ा हर्ष प्रकट किया।

बड़प्पन की बात

अबोहर के प्रसिद्ध पत्रकार श्री योगेन्द्र पाल जी गोयल ने एक घटना बताई कि एक बार गीता मन्दिर में एक विनोद सभा हुई। कुछ जोशीले नवयुवकों ने एक

राजनैतिक विनोद भी दिखाया जिसे देख कर श्री महाशय जी तथा कुछ अन्य लोग क्रुद्ध हो उठे। विनोद बीच में ही बन्द करना पड़ा।

अगले दिन महाशय जी घूमते फिरते विनोद सभा वाले युवकों से मिले। सबसे पूर्ववत स्नेहपूर्ण व्यवहार था। करबद्ध नमस्ते से सेतिया जी ने सबका अभिवादन किया। युवकों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य व हर्ष हुआ कि रात्री वाली घटना का उन पर तनिक भी प्रभाव न था। उनके बड़प्पन का रहस्य उनकी व्यवहार कुशलता व कर्मठता में छिपा था।

जब सत्य है तो छिपाना क्यों ?

एक बार आर्य समाज स्थापना दिवस पर श्रद्धेय आचार्य नारायण दास जी ग्रोवर ने कहा, "कई बार मै चैक काट कर बैंक में भेज देता हूं। बैंक वाले कालेज वे लिए धन नहीं देते। यह कह कर चैक लौटा दिया जात है कि खाता डी. ए. वी. कालेज मैनेजिंग कमेटी के नाम का है। आपके नाम का नहीं। आर्य समाजी भी सो कि क्या समाज में उनके नाम का खाता है ? कटु सत्य य है कि लोक सेवा बैंक में महर्षि दयानन्द के नाम का खात है, अमर धर्मवीर लेखराम, पं. गुरुदत्त जी, स्वामी श्र

नन्द, महात्मा हंसराज, महात्मा नारायण स्वामी व लाला लाजपतराय के तप त्याग व सेवा का खाता है। आजके आर्य समाज के नाम का लोक सेवा बैंक में Account नहीं आचार्य जी के हृदय की गहराइयों से निकले हुए ये शब्द मेरे सीने पर अंकित हो गये। एक सभा में मुझे बोलने के लिये कहा गया। मैंने भी उपरोक्त बात दुहराई और कहा कि आज जनता आर्य समाज को दान देती है तो आर्यसमाज के गौरवमय अतीत के कारण। आर्य समाज की विभूतियों के अद्वितीय सेवा कार्यों के कारण। आज के आर्य समाज के तथाकथित कर्णधारों के कारण तो आर्य समाजों के मन्दिर व संस्थायें भी अधर्मी लोगों के हाथ में जा रहे हैं। आर्य समाज में प्रमादी, स्वार्थी, पदलोलुप, वेदघाती घुस कर ऋषि मिशन की प्रगति में बाधक बन रहे हैं। मेरे ये विचार सुन कर कुछ सज्जनों के हृदय में कम्पन हुआ। एक ने मंच मन्त्री को संकेत दिया कि इसे बिठा दो। परन्तु उसने यह आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। उसी ने एक दिन सेतिया जी से व महाशय बखतावर लाल जी आदि से कहा, "जिज्ञासु का भाषण ठीक नहीं था। इससे आर्य समाज का दूसरों पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता।" सेतिया जी ने उत्तर दिया कि 'जिज्ञासु' जी ने जो कहा वह पूर्णतया

सत्य है। इससे आप इनकार नहीं कर सकते । उक्त सज्जन ने कहा कि सत्य तो है परन्तु.........

श्री सेतिया ने कहा, "जब सत्य है तो सत्यको छिपाना क्यों ? यह तो आर्य समाज का सौभाग्य है कि आर्यसमाज में सत्यवक्ता हैं। चाटुकारिता करने वाले वक्ता से समाज का हित नहीं हो सकता ।" सत्य सुन कर सेतिया जी सटपटाते नहीं थे । प्रसन्न होते थे ।

हितैषी मित्र

एक बार भारत सरकार के राज्य शिक्षा मन्त्री प्रो. शेर सिंह अबोहर आये । लाजपतराय महिला होस्टल में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। उस सभा में राय साहब कुन्दन लाल आहूजा आदि कई प्रमुख व्यक्तियों ने भाषण दिये। प्रो. शेर सिंह ने शुद्ध सरल हिन्दी में बड़ा प्रभावशाली भाषण दिया। राय साहेब कुन्दन लाल ने अपने भाषण में अंग्रेज़ी फ़ारसी शब्दों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया ।

यद्यपि महाशय जी व आहूज़ा जी बड़े घनिष्ट मित्र थे तथापि सभा के तुरन्त पश्चात् आपने अपने मान्य मित्र से स्पष्ट कहा; देखिये प्रो. शेर सिंह जी ने तो परकीय भाषा का आश्रय नहीं लिया। आपने अंग्रेज़ी फ़ारसी का

पल्ला नहीं छोड़ा। आप भी राष्ट्र भाषा में ही बोला करें। महाशय जी अपनों को सदैव हितकर सीख दिया करते थे। दूसरों को टोकने से पूर्व वह अपनों को पहले समझाया करते थे।

पूज्य भाई परमानन्द जी के निधन पर

देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी की मृत्यु पर अबोहर में एक शोक सभा हुई। विभिन्न वक्ताओं ने तिल तिल जलने वाले देशभक्त को श्रद्धाँजलियां भेंट कीं। एक वक्ता ने अपने भाषण में कुछ खरी खरी बात कही। उस सभा के प्रधान ने कहा कि मैं इन बातों का उत्तरदायित्व लेने को तैयार नहीं हूं। महाशय जी मंच पर आये और कहा कि मैं यह उत्तरदायित्व लेता हूं।

आदर्श नागरिक

देश में खाण्ड का अभाव था। सेतिया जी के गृह पर उनके सुपुत्र के विवाह के उपलक्ष में दो तीन कार्यक्रम हुए। हवन यज्ञ के पश्चात् प्रसाद वितरित करने का प्रश्न सामने आया। सेतिया जी चाहते तो काला बाज़ार से खांड ले सकते थे परन्तु उन्होंने एक आदर्श नागरिक के रूप में समाज के निर्धन वर्ग की कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए प्रसाद के रूप में फल बांटे। यह थी सेतिया जी की विशेषता।

आचार्य नारायण दास से एक समझौता

एक बार श्री महाशय चूनी लाल जी सेतिया को साथ लेकर महाशय मुकन्द लाल जी कालेज की यज्ञशाला का निर्माण कार्य देखने गये। आचार्य नारायण दास जी को साथ लेकर दोनों महानुभाव यज्ञशाला का निरीक्षण कर रहे थे। सायंकाल का समय था। मैं भी कालेज में ही था। मुझे भी बुलाया गया। नगर को लौटते समय मैं महाशय जी के साथ आया। हम दोनों कालेज के बारे कुछ चर्चा करते आये। किसी प्रसंग में मैंने कहा कि आप दूसरों से कालेज को धन दिलाते हैं। आपके परिवार के लोग भी इतना धन देते हैं। आप स्वयं कालेज के आजीवन दानी सदस्य क्यों नहीं बनते ? महाशय जी ने बड़े मार्मिक शब्दों में उत्तर दिया कि इसका एक कारण है।

मेरा आचार्य महोदय से एक समझौता हुआ हुआ है। मैंने उत्सकुता से पूछा वह क्या ? उन्होंने कहा, 'मैंने उनसे कह रखा है कि यदि मेरा नाम उन्होंने प्रचारित करना है अथवा मेरे फ़ोटो छापने हैं तो मैं कोई कार्य नहीं करूंगा। मैं उनके आदेशानुसार प्रत्येक अच्छा कार्य करने को उद्यत हूं परन्तु चित्र खिचवाने के लिए नहीं। आजीवन सदस्यों का चित्र छपता रहता है इस लिये मैं आजीवन सदस्य न बनूंगा।'

मैं उनका यह उत्तर सुनकर अत्यन्त प्रभावित हुआ। वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की मानस सन्तान में ऐसे ऐसे नर रत्न हैं यह जानकर किस आर्य को गर्व न होगा। सेतिया जी बड़े धनी मानी थे परन्तु उनके चित्र बहुत कम मिलते हैं। उनको चित्र खिंचवाने का चाव नहीं था ।

पद के योग्य

एक बार एक ऐसा व्यक्ति साहित्य सदन का पदाधिकारी बन गया जिसको हिन्दी का तनिक भी ज्ञान न था। उस व्यक्ति को हिन्दी से प्यार भी नहीं था। कुर्सी की चाह ही उसे सदन के समीप ले आई। महाशय जी को यह बात बुरी लगती थी। आपकी प्रेरणा से कुछ युवकों ने अपने रोष को प्रकट करने का निराला ढंग निकाला। उस व्यक्ति को बुरा भला कहने की बजाय युवकों ने श्री स्वामी केशवानन्द जी के नाम इस आशय के पत्र लिखने आरम्भ किये। परिणाम स्वरूप उस व्यक्ति के नीचे से कुर्सी खिसक गई।

'दक्ष, वाम'

मृत्यु से दो वर्ष पूर्व महाशय जी ने वैदिक धर्म प्रचार के लिए एक नई योजना बनाई। अपने परिवार एवं मित्रों के घर मंगल कार्यों के अवसर पर एकत्रित लोगों में वैदिक

मन्तव्यों के प्रचारार्थ महाशय जी ने छोटे छोटे ट्रैकट छप-वाने की योजना बनाई। उनकी व्यस्तता तथा सामाजिक समस्याओं के कारण इसको व्यापक रूप तो न दिया जासका फिर भी कुछ कार्य किया गया। ट्रैक्टों के प्रकाशन का व्यय वह स्वयं वहन करते अथवा सम्बंधित परिवार ही दे देता। इसी योजना के अन्तर्गत रायसाहेब श्री कुन्दनलाल आहूजा के सुपुत्र के विवाह के अवसर पर उन्होंने मान्य प्रो० विश्वबंधु जी तथा मुझे 'विवाह के वैदिक आदर्श' पुस्तिका लिखने की प्रेरणा दी। हम दोनों ने यह कार्य कर दिया। महाशय जी ने प्रो० विश्वबंधु जी से कहा कि एक बार पाण्डुलिपि मुझे (महाशय जी को) सुना दो।

प्राध्यापक विश्व बंधु जी ने उसमें से जब सप्तपदी का विषय पढ़कर यह कहा कि इस वेदोक्त विधि में 'मा सव्येन दक्षिणमतिक्राम' कह कर वधु को पहले दायां पांव उठाने की आज्ञा दी जाती है। आज तो पहले बायां पांव उठाया जाता है। सर्वत्र Left Right, left Right वाम दक्ष, वाम दक्ष ही सैनिक प्रशिक्षण में प्रचलित है। मान्य विश्वबंधु जी ने दक्ष वाम का महत्व बताया तो महाशय जी स्तब्ध रह गये। फिर सहसा बोले, "आपने तो आज आँखें खोल दीं। मुझे तो अब पता चला कि आर्ष दर्शन व आर्ष जीवन पद्धति में दक्ष का महत्व क्या है। मैं तो संघ

की केन्द्रीय कार्यकारिणी को भी लिखूंगा कि संघ में इस अभारतीय पद्धति को स्थान क्यों दिया गया है । संघ में पश्चिम का अंध अनुकरण कर Left Right के स्थान पर वाम दक्ष कहा जाता है । इसका परित्याग कर हमें भारतीय पद्धति 'दक्ष वाम' को अपनाना श्रेयस्कर है ।"

पाठकगण ! घटना छोटी है परन्तु इसका महत्व कितना है, यह तनिक सोचनेकी बात है । यह घटना सेतिया जी की मनोभावना का सच्चा प्रतिबिम्ब है । वह हठी, दुराग्रही न थे । उनका हठ कर्मठता में परिवर्तित हो चुका था । जब उनको यह जंच जाता कि अमुक बात भारतीय मर्यादा के विरुद्ध है तो उसको छोड़ते उन्हें देर न लगती ।

आर्य वेश भूषा

दयानन्द कालेज के संगीत के प्राध्यापक श्रीयुत शिवनाथ राय जी एक दिन बाहर शौचादि के लिये गये । महाशय जी ने प्रो० साहब को तहमत बांधे देखा तो कहा कि आपने धोती छोड़कर तहमत क्यों बाँध लिया ? प्रो० साहब ने कहा, 'महाशय जी मुझे एक फुंसी हुई है इस तहमत में कुछ सुविधा है ।" महाशय जी ने कहा, "कुछ भी हो आप जैसे सज्जन को तहमत शोभा नहीं देता । धोती को हमें यथेष्ट महत्त्व देना चाहिए ।" स्मरण रहे महाशय जी घर में धोती पहन कर ही सन्ध्या किया

करते थे ।

दल से देश हित बड़ा है

श्रीयुत अशोक आर्य ने महाशय जी के जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घटना सुनाई । जब महाशय जी ने चित्र प्रदर्शनी लगवाई तो उसमें भारत के मानचित्र के पीछे भारत माता की एक प्रतिमा रखी गई । उस प्रतिमा के हाथ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का ध्वज दिखाया गया । चरित्र निर्माण सभा के एक सम्मानीय सदस्य श्री गोकुल चन्द जी ने इस पर आपत्ति की । संघ के कार्यकर्त्ता ध्वज हटाने के विरोधी थे । अपने साथियों के विरोध की चिन्ता न करते हुए महाशय जी ने ध्वज हटवा दिया । महाशय जी राष्ट्रीय एकता, देश हित, समाज सुधार के कार्यों में दलगत बातों से बहुत ऊपर थे । वह सिद्धान्त-प्रेमी थे, धड़ा-प्रेमी नहीं ।

लोक-सेवा के अरमान

महाशय मुकन्द लाल प्रायः सामाजिक व पारिवारिक कार्यों के लिए बाहर आते जाते रहते थे । कई बार तो मिलने वालों को उनके घर से यह सुनकर बड़ा आश्चर्य होता कि "महाशय जी का पता नहीं यहां है या बाहर । कब आयेंगे यह भी पता नहीं ।' जब वह बाहर से घर आते तो आते ही अपने सेवक धन्ना से पूछते कि नगर में किसी परिचित अपरिचित की मृत्यु तो नहीं हुई । यदि किसी

परिवार में किसी की मृत्यु की सूचना मिलती तो वह महाशय नन्दलाल आर्य की दुकान पर जाते और शोक संवेदना प्रकट करने के लिये साथ चलने को कहते । यदि दुकान पर उनका सुपुत्र न होता तो कह देते, "अच्छा चलेंगे ।" कई बार उस समय ताला लगवा कर साथ ले जाते। किसी के दुःख में सहानुभूति प्रकट करना वह अपना अनिवार्य कर्त्तव्य समझते थे।

निरभिमानी महाशय जी

अक्तूबर १९६६ ई० में मैं स्थानान्तरित होकर अबोहर पहुंचा । मेरे पहुंचने से पूर्व ही मान्य प्रो० 'शरर' जी ने 'वैदिक धर्म' साप्ताहिक में मेरे अबोहर आने पर एक नोट लिख भेजा। महाशय जी ने नोट पढ़ा और प्रि० नारायण दास जी को दूरभाष पर पूछा, "क्या राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' यहां आ गये हैं ?"

आचार्य जी ने उत्तर दिया, "हां कुछ दिन हुए आ गये हैं ।"

महाशय जी ने कहा, "आप ने हमें बताया ही नहीं । मुझे तो 'वैदिक धर्म' पढ़ कर उन के आगमन की सूचना मिली। अच्छा मैं उन से मिलूंगा ।'

मेरा महाशय जी से कोई पूर्व परिचय न था। मेरे लेखों व सामाजिक गतिविधियों से ही वह मुझे नाम से

जानते थे । यहां आर्य समाज में कई ऐसे व्यक्ति हैं जिन से मेरा पूर्व परिचय था परन्तु मैंने ही सब से स्वयं सम्पर्क स्थापित किया । महाशय जी ही एक व्यक्ति थे जिन्होंने बिना जान पहिचान के स्वयं मिलने की इच्छा व्यक्त की और आचार्य जी को उपालम्भ भी दे दिया कि उन्हें मेरे स्थानान्तरण की सूचना क्यों न दी गई । उन की निर-भिमानता तथा समाज-प्रेम की इस घटना से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ । मैं उसी दिन आचार्य जी के आदेशानु-सार उन से एक बैठक में भेंट करने गया ।

साधु का आदर

१९५५ ई० में पूज्यपाद स्वामी आत्मानन्द जी महा-राज आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान निर्वाचित हुए। सभा की वेद प्रचार निधि में धन नहीं था। स्वामी जी ने धन संग्रह के लिए झोली पसारी । वह लाला सन्त लाल जी विद्यार्थी के साथ अबोहर पधारे । महाशय जी व उन के सहकारी आर्य बंधुओं ने उदार हृदय से साधु की झोली में धन डाला । एक व्यक्ति ने उस समय तो दूसरों के साथ समान सम्मान पाने के लिये धन का वचन दे दिया परन्तु वचन वचन ही रहा । महाशय जी कई बार कहा करते थे कि साधु का सम्मान तो करना ही चाहिये । साधु से

रफेर अशोभनीय ही नहीं निन्दनीय है।

राष्ट्रीय पर्व

महाशय जी ने अस्पृश्यता में विश्वास रखने वाले ौराणिक नेताओं से भी सम्पर्क रखा। उन लोगों को इस ात के लिए उद्यत किया कि विजय दशमी सरीखे राष्ट्रीय र्व यहां सामूहिक रूप से मनाये जायें।

सुनाते न थे

अनेक दुखियों के कष्ट निवारण करने वाले महाशय जी सारा जीवन पर-सेवा में लगाया। अनेक दलित बालकों ो शिक्षा की व्यवस्था की परन्तु कभी किसी को सुनाया हीं। समाचार पत्रों अथवा भाषणों में इस बात की चना नहीं दिलाई। वह ताली पिटवा कर कार्य करने ाले नेता न थे।

केवल महाशय जी का डर है

ज़मीदारा पार्टी के नेता बाग़ अली अबोहर में मुसल- ानों के सर्वमान्य नेता थे। बड़े कूटनीतिज्ञ भी थे। देश वभाजन के समय प्रो० शिवनाथ राय एक हिन्दू के साथ कसी कार्य के लिये श्री बाग़ अली के पास गये। मुस्लिम ाता ने कहा, "मुझे अबोहर के हिन्दुओं में किसी का भी ाय नही। मेरा एक मुसलमान लठ लेके निकले तो ये सब

घरों में घुस जाएं। मुझे तो केवल महाशय मुकन्दलाल सेतिया से डर लगता है।" ये शब्द उस व्यक्ति के हैं जिस के मार्गदर्शन में मुसलमानों ने रक्तपात, लूटपाट की पूरी तैयारी कर रखी थी। उन के घरों से पर्याप्त युद्ध सामग्री प्राप्त हुई। महाशय जी से ऐसे ऐसे व्यक्ति भी भय खाते थे।

हवन-यज्ञ में शांत

महाशय जी यज्ञ में बैठते तो शांत होकर मन्त्रपाठ, श्रुति-श्रवण की ओर मन लगाते। बातचीत कतई न करते और न ही करने देते। यह था उन का सत्संग प्रेम।

प्रत्युत्पन्नमति

महाशय जी ने एक बार स्वयं एक घटना मुझे सुनाई अबोहर में कई सज्जनों को इस बात का ज्ञान है। एक दिन महाशय जी के एक सिख मित्र ने पूछा, "महाशय जी आप का मकान कौन सी गली में है?" उस व्यक्ति को पता तो था परन्तु उस ने जानबूझ कर विनोद के लिये पूछा। महाशय जी ने कहा, "गली नम्बर दस में।" इस पर वह मित्र बोले, "अच्छा आप दस नम्बर में हैं।"

इस पर महाशय जी ने बड़े सहज स्वभाव से कहा

जी हां ! बड़े लोग प्रायः दस नम्बर में ही होते हैं।
गलैंड का प्रधान मन्त्री दस डाऊनिंग स्ट्रीट में, हमारे
धानमन्त्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री दस जन-पथ पर,
छ और भी नाम गिनाये जो मुझे अब स्मरण नहीं।
हाशय जी का उत्तर सुनकर वह सिख मित्र अपना सा
ंह लेकर रह गया।

आर्य समाज के लिए

एक बार दलबन्दी की गंदी दलदल में फंसकर कुछ
ागों ने बैंक में किसी से मिल मिला कर आर्य समाज के
ाते से रुपया निकलवाना रुकवा दिया। महाशय जी कुछ
न्य आर्य समाजियों के साथ बैंक के मैनेजर से मिले। आप
ागों ने बैंक मैनेजर को स्थिति से अवगत कराया और
हा कि लेन देन रोका न जाये। जब वह नहीं माने तो
हाशय जी ने उग्र रूप धारण करके कहा अच्छा देखता हूं
ाप कैसे रोकते हैं? आज ही मण्डी में सभा करेंगे और
ापके मुख्य कार्यालय को भी सूचना देंगे। यह हेर फेर
नेजर महोदय के ज्ञान के बिना कैसे हो गई? यह भी सब
न्होंने बताई। महाशय जी की निडरता का यह फल था
ि मैनेजर महोदय ने बैंक कर्मचारियों को आर्य समाज के
ाते से रुपये निकलवाने पर लगी रोक हटाने का आदेश

दे दिया। आर्य समाज के लिए महाशय जी उलझनों से उलझना अपना धर्म समझते थे।

सेवक का सन्मान

महाशय जी के सेवक श्री धन्नु; ने बताया कि महाशय जी छोटों का भी अनादर नहीं करते थे।'' वह मुझे सदैव धन्नु शाह कहकर ही पुकारते थे। भूल कर भी मुझे ओ धन्नु कहकर नहीं बुलाते थे।''

सेवक की सेवा

श्री धन्नु ने बताया कि महाशय जी मुझ से अत्यन्त स्नेह करते थे। मेरा कोई भी सगा सम्बन्धी नहीं। न पत्नी न पुत्र, न भाई, न बन्धु, मैं अकेला ही हूं। मैं १९५०-५१ ई० से महाशय जी के घर सेवा कार्य कर रहा हूं। जब कभी मैं रुग्ण होता था तो महाशय मुकन्दलाल जी मेरे उपचार निदान की समुचित व्यवस्था करते थे। महाशय नन्दलाल आर्य अथवा किसी अन्य वैद्य डाक्टर से औषधि दिलाते।

सेवक का खानपान

महाशय जी के सेवक श्री धन्नु ने यह भी बताया कि महाशय जी मेरे खानपान का भी पूरा ध्यान रखते थे। जो कुछ उनके घर में अन्य सदस्यों को मिलता वही मुझे दिया जाता था। प्राय: लोग सेवकों को घटिया भोजन देते

महाशय जी के घनिष्ट मित्र
श्री महाशय नन्दलाल जी आर्य

महाशय जी के प्रिय सेवक
श्री धन्ने शाह

हैं। महाशय जी के परिवार में यह अमानुषिक प्रथा नहीं सेवक को भी वही भोजन प्राप्त होता जो परिवार के शेष सदस्य खाते थे।

नियमबद्धता

इस से पूर्व भी बताया जा चुका है। परन्तु यहां पुनः सेवक श्री धन्नु शाह के शब्दों में महाशय जी की दिनचर्या की चर्चा की जाती है। महाशय जी प्रातः काल स्नान के पश्चात् अपने घर के ऊपर जाकर भगवान का भजन करते थे। संध्या के समय शान्तचित्त होकर बैठ जाते। यह उनका नित्य नियम था।

सेवक के नाम आज्ञा

श्री धन्नु शाह ने कहा कि महाशय जी ने मुझे कह रखा था कि नगर में किसी की मृत्यु हो तो मुझे सूचित कर दिया कर। सेवक महाशय नन्दलाल आर्य आदि किसी व्यक्ति से ऐसी जानकारी प्राप्त करता। जब महाशय जी बाहर से आते तो उनको सूचित कर देता। महाशय जी श्री नन्दलाल को साथ लेकर दुःखी परिवारों से संवेदना प्रकट करने के लिए जाते। यदि किसी परिवार के घर का अता पता महाशय जी को न होता तो श्री धन्नु शाह ही यह पता करता था कि जिस के घर में महाशय जी ने

सहानुभूति व्यक्त करने जाना है, वह रहता कहां है ?

किसी को न बताना

महाशय नन्दलाल जी आर्य ने बताया कि कई बार महाशय मुकन्दलाल जी बाहर कहीं जाने से पूर्व श्री धन्नु को कह जाते कि मैं देहली अथवा अमुक नगर को जा रहा हूं तुम किसी को बताना मत। मैं कल या परसों आऊंगा। यद्यपि सेवक श्री धन्नु शाह महाशय जी का बड़ा विश्वस्त था तथापि वह मुझे (महाशय नन्दलाल) से आकर बता जाता कि महाशय जी देहली गये हैं। कह गये थे किसी को न बताना। कल आयेंगे। श्री धन्नु केवल महाशय नन्दलाल जी को आकर ऐसी बात बता दिया करता था। क्योंकि उसे दोनों महाशयों की घनिष्ठता का पता था। अबोध धन्नु को भी इस मैत्री का बोध है व था।

नगर की धुरी

एक दिन महाशय नन्दलाल जी ने कहा कि "जिज्ञासु" जी महाशय मुकन्दलाल सेतिया तो अबोहर की धुरी थे। वह एक विचित्र व्यक्तित्व था। आर्य समाज के तो वह थे ही। आर्य समाज से बाहर भी सब संस्थाओं से उनका प्रत्यक्ष या परोक्ष से सम्बन्ध था। नगर को वह निस्तब्ध, निष्क्रिय तो देख न सकते थे। कुछ न कुछ करते रहना

ुछ न कुछ कराते रहना यह उनका स्वभाव था। कभी ार्य समाज के माध्यम से, कभी अरोड़वंश के द्वारा; कभी ारित्र निर्माण सभा के नाम पर और कभी साहित्य सदन ी ओर से; वह नगर के सामने कुछ न कुछ रचनात्मक ार्यक्रम रखते रहे। उनको उनकी लगन के अनुरूप आचार्य ारायणदास ग्रोवर मिल गये। और कार्यों से कुछ ामय बचा तो कालेज के लिए भिक्षा की झोली ासार देते।

यहां राष्ट्रीय संघ के वह सर्वमान्य नेता थे। संघ ने उनके नेतृत्व में यहां बड़े बड़े कार्य किये हैं। जनसंघ को उत्तेजित करके वह नगर वासियों को क्रियाशील बना देते कांग्रेस में भी उनके कई निकटतम मित्र थे। अन्य राज-नैतिक पक्षों में भी उन से प्रभावित उनके साथी थे। दूसरे पक्षों में अपने मित्रों द्वारा वह हल चल पैदा करके नगर को गतिशील बना देते। आज नगर में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं जिसके प्रभाव के तंतु सब दलों को गति में ला सकें। उनके पश्चात् नगर का सामाजिक जीवन नीरस सा हो गया है।" मैं समझता हूं कि महाशय नन्दलाल जी के उपरोक्त शब्दों में तनिक भी अत्युक्ति नहीं। मैं ने श्री मुकन्दलाल सेतिया जी के ही एक अभिन्न बन्धु द्वारा

उनके चरित्र का यह मूल्यांकन इस अध्याय में देना उपयुक्त व आवश्यक समझ कर यहां दिया है।

कांग्रेस के घोर विरोधी

एक बार प्राध्यापक राजकुमार जी, श्री अशोक आर्य और मैं महाशय जी के घर गये। श्री राजकुमार जी व मैं उसी वर्ष अबोहर आए थे। आर्य समाजके संगठन को यहां सतेज व सशक्त बनाने तथा वैदिक धर्म सम्बन्धी साहित्य के प्रचार के लिए हम आर्य युवक समाज की ओर से लोगों से सम्पर्क जोड़ रहे थे। हम ने महर्षि दयानन्द; श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी, वीर लेखराम; महात्मा हंसराज जी आदि के चित्र व कुछ आर्य साहित्य महाशय जी को भेंट किया। महाशय जी ने हमारे प्रयास की प्रशंसा की। हमें प्रोत्साहन भी दिया। चित्र तो सहर्ष स्वीकार किये परन्तु पुस्तकें लेने से इनकार कर दिया। कारण यह बताया कि ये पुस्तकें श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय लिखित हैं। उपाध्याय जी कांग्रेसी हैं। मैंने लाख कहा कि उपाध्याय जी किसी भी राजनैतिक दल से सम्बंधित नहीं परन्तु सेतिया जी न माने। वह कहते थे कि मैं उपाध्याय जी के लेख रिफार्मर में पढ़ता रहता हूं। वह कांग्रेस का दृष्टिकोण रखते हैं। इससे स्पष्ट है कि कांग्रेस से उनको कितनी चिढ़

थी। कांग्रेस की मुस्लिम साँप्रदायिकता के सम्मुख घुटने टेकनीति से दु:खी होकर वह अपने परम प्यारे वैदिक धर्म के उस समय के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय का साहित्य पढ़ने को भी तैयार न थे।

दल से बड़ा राष्ट्र

डा० ज़ाकिर हुसैन की मृत्यु हुई। आर्य समाज में शोक प्रस्ताव रखा गया। महाशय कृष्ण जी ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। प्रस्ताव का विरोध इस आधार पर किया गया कि डा० ज़ाकिर हुसैन ने समय समय पर हिन्दु जाति व आर्य मान्यताओं के विरुद्ध बड़ी घातक नीति अपनाई। इस के कई उदाहरण भी दिये। महाशय कृष्ण जी की बात ठीक थी परन्तु सब का यह कहना था कि राष्ट्रपति के रूप में हमें उन के निधन पर शोक व्यक्त करना ही चाहिये। प्रस्ताव स्वीकार कराने के लिये महाशय मुकन्दलाल जी सेतिय ने सब को सबल प्रेरणा दी। उन का कथन था कि डा० ज़ाकिर हुसैन के राजनीतिक विचार अब मत देखो। दल से बड़ा राष्ट्र है। अतः राष्ट्रपति के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित करना चाहिये। पाठक ! इस घटना की इस से पहली घटना से तुलना

कीजिये। महाशय जी के हृदय की गहराइयों में घुसने के लिये इन पर मनन कीजिये।

पूर्वजों का सन्मान

महाशय जी का पालन पोषण आर्य समाज के स्वस्थ वातावरण में हुआ। उन के हृदय में आर्यवर्त की परम्पराओ एवं पूर्वजों के लिए असीम आदर था। अपने पूर्वजों के प्रति उन की श्रद्धा का पता, उन के नाम श्री डा० राम सुभग सिंह जी के एक पत्र से लगता है।

डा० राम सुभग सिंह के नाम महाशय जी के पत्र की प्रतिलिपि तो आज उपलब्ध नहीं परन्तु डा० जी के पत्र से महाशय जी के पत्र का भाव हम समझ सकते हैं।

६२०३ रेलवे राज्य मन्त्री, भारत

Ministry of State For Railwys

India

नयी दिल्ली,

जून २३; १९६६

प्रिय श्री मुकन्द लाल सेतिया जी,

आपका २० जून, १९६६ का पत्र मिला। यह अच्छी बात है कि आप ने मेरा ध्यान इस ओर आकृष्ट किया

कि राम और कृष्ण आदि के नामों के साथ 'श्री' अथवा 'भगवान' आदि आदर सूचक शब्दों का प्रयोग करना चाहिये। आप का यह सुझाव अच्छा है, पर अपने देश के कई—एक भागों में केवल राम और कृष्ण कहने का रिवाज है और उस के मायने सम्पूर्ण आदर और सम्मान समझा जाता है।

आशा है आप सानन्द हैं।

आप का

(हस्ताक्षर) राम सुभग

(राम सुभग सिंह)

इस पत्र पर किसी टिप्पणी की आवश्यकता तो नहीं परन्तु इस प्रसंग में एक रोचक घटना स्मरण हो आई। योगी अरविन्द घोष जी ने महर्षि दयानन्द जी महाराज पर जब ऐतिहासिक लेख Dayanand the Man and his works लिखा तो सुशिक्षित वर्ग में इस की धूम मच गई। आचार्य अभय देव जी शर्मा ने जनता की मांग को ध्यान में रखते हुए इस लेख को आर्य भाषा में अनूदित कर दिया। योगी जी महाराज को यह अनुवाद सुनाकर आचार्य जी ने उन्हीं से पूछा कि इस पुस्तक का नाम क्या रखूं ? योगी जी का

उत्तर था, "**दयानन्द**"। आचार्य जी ने कहा कि साथ कुछ और भी चाहिए। इस पर योगी अरविन्द जी ने एक मार्मिक वाक्य कहा, "Dayanand was Dayanand" अर्थात् दयानन्द तो दयानन्द ही था। इस सारगर्भित वाक्य का भाव यह है कि देव दयानन्द महानता के उस शिखर पर पहुंच चुके हैं जहां किसी विशेषण, उपाधि अथवा किसी आदर सूचक शब्द की आवश्यकता ही नहीं। दयानन्द महान् इस लिये नहीं कि उन के साथ महर्षि शब्द जोड़ा गया है अपितु महर्षि शब्द की शोभा दयानन्द के नाम नामी से बढ़ जाती है।

श्री राम व श्री कृष्ण महाराज आदि महापुरुष भी ऐसी विभूतियां थीं जिन के नाम हो इतने गौरवपूर्ण बन चुके हैं कि उन के साथ आदर सूचक शब्द जोड़ने की विशेष आवश्यकता नहीं रह जाती। डा० राम सुभग सिंह जी व योगी अरविंद घोष जी का एक ही भाव है।

इन पक्तियों के लेखक का मत यह है कि जहां तक हो सके हमें महापुरुषों के नाम के साथ आदर सूचक शब्दों का प्रयोग करना ही चाहिये। हां अपवाद नियम को सिद्ध करता है।

शुभ कर्मों के प्रेरक महाशय जी

श्रीयुत महाशय लालचन्द जी नारंग ने बताया कि वह
ौ रक्षा सत्याग्रह व हिन्दी रक्षा आन्दोलन में महाशय जी
 साथ कारावास में इकट्ठे रहे। महाशय जी सत्याग्रहियों
 पास जाकर एक एक की आवश्यकता पूछा करते थे।
त्येक के कष्ट निवारण की उन को चिन्ता रहती। वह
ारावास में इस बात का विशेष ध्यान रखते थे कि किसी
ा मनोबल शिथिल न पड़े। साधारण परिवारों के सत्या-
हियों की आवश्यकताओं को पूरा करनेके लिये महाशयजी
पने घर से भी पैसे मंगवा कर व्यय करते। इस कार्य में
न को बड़ा आनन्द अनुभव होता था। वह इस की चर्चा
कसी से भी नहीं करते थे।

भजनों के प्रेमी महाशय जी

महाशय लालचंद जी नारंग ने बताया कि कारा-
ास में महाशय जी को भजन सुनने का बड़ा रस था।
ो भी भजन अच्छा लगता वह अपनी कापी में लिख
ाते। कुछ भजन श्री लाल चंद जी की कापी में भी
न्होंने अपने हाथ से लिखे।

संध्या करते व कराते

महर्षि दयान्द जी ने लिखा है। 'वेद का पढ़ना पढ़ाना

सब आर्यों का परम धर्म है।' महाशय मुकन्द लाल जी सेतिया भी इस आर्य मर्यादा का पालन करने का पूरा यत्न करते थे। कारावास में दोनों समय **सत्संग** व संध्या की व्यवस्था थी। महाशय जी स्वयं तो संध्या करते ही थे दूसरों को भी संध्या करने के लिए प्रेरित करते।

कुरीतियों से लड़ने का अनोखा ढंग

इस घटना का उल्लेख अन्यत्र भी आ चुका है। श्रद्धेय श्री पं० ईश्वरचन्द्र जी ने अपने संस्मरण सुनाते हुए इस पर सविस्तार प्रकाश डाला है।

महाशय जी के परिवार में एक युवक का विवाह था। महाशय जी की श्री पं० ईश्वरचन्द्र जी पर विशेष श्रद्धा थी। उन्होंने पं० जी को साथ चलने एवं विवाह संस्कार कराने की भी प्रार्थना की। पं० जी ने कहा मुझे साथ चलने में तो आपत्ति नहीं किन्तु आप विवाह संस्कार के लिये किसी अन्य विद्वान को कहें। महाशय जी ने पूछा, "पौरोहित्य में आप को क्या आपत्ति है ?" श्री पं० जी ने उत्तर दिया कि धनी परिवारों मे विवाह के अवसर पर मांस, सुरा का खुला प्रयोग होता है। भंगड़ा भी डाला जाता है। मुझे इन सब बातों से घृणा है। ये वैदिक सिद्धांतों के विपरीत है। महाशय जी ने कहा मैं यत्न करूंगा कि ऐसा न हो।

महाशय जी के विश्वास दिलाने पर पंडित जी बरात के साथ गये परन्तु हुआ वही जिसकी आशंका थी। महाशय जी किसी कारणवश पिछली मोटर पर देर से पहुंचे। पण्डित जी लिखते हैं कि कन्या पक्ष ने सुरा व सोडे का प्रबंध कर रखा था। बराती पीने पिलाने में लग गये। पण्डित जी असमञ्जस की अवस्था में खड़े थे कि क्या करें व कहां जाएं ? कुछ मित्रों ने पण्डित जी के लिये पृथक स्थान पर प्रबंध किया और कुछ सात्विक वस्तुओं की भी व्यवस्था कराई।

महाशय जी आए तो पं० जी ने सारी कहानी सुना ी। महाशय जी ने झट क्षमा मांगते हुए कहा कि मैं समय र आता तो यह अनर्थ न होता। अच्छा ! अब ऐसा न ोने दूंगा। रात्री जब बरात भोजन के लिए चली तो कुछ री तक बड़े अच्छे ढंग से बराती चलते रहे। कोई अरु-चकर भद्दी बात न हुई। । कुछ दूर जा कर कुछ वयुवक एक दूसरे को भंगड़े के लिये उकसाने लगे। हाशय जी के प्रभाव के कारण कुछ समय तक ऐसा न हो का परन्तु अधिक उकसाने पर सब ने ज़ोर शोर से भंगड़ा ालना आरम्भ कर दिया। महाशय जी ने रोकने का यत्न कया परन्तु परिस्थिति उनके काबू से बाहर हो गई। कुछ ोगों ने कहा कि हम चाहते तो नहीं परन्तु देहली

चण्डीगढ़ से आए कुछ अतिथि नहीं मान रहे।

महाशय जी को बड़ा आघात लगा। वह बरात के साथ न जाकर पीछे लौट आए। श्री पण्डित जी भी साथ ही आ गये। पण्डित जी ने कहा, 'ऐसे समारोहों में जहां युवकों का बहुमत हो बड़ों की कौन सुनता है?' वह निरुत्तर थे। पंडित जी ने कहा, 'मुझे छुट्टी दीजिए। मैं यहां अब पुरोहित का कार्य न कर सकूंगा। मुझ से मेरे आत्मा की आवाज़ दबाई नहीं जा सकती ? मैं वेद मर्यादा के विरुद्ध नहीं जा सकता।" इतना कह कर पण्डित जी चलने लगे।

श्री पण्डित जी ने बताया कि यह सुनकर महाशय जी बड़ी गम्भीर मुद्रामें बोले, 'पण्डित जी ? इस प्रकार हम अपने प्यारे वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार न कर सकेंगे। जब सम्बंधित लोगों को इस बात का पता लगेगा तो बजाए इसके कि वे अपनी भूल पर पश्चाताप करें उलटा इसमें अपना अपमान समझेंगे और हठ व दुराग्रह से कुरीति ही का पक्ष लेंगे और भविष्य में आर्यसमाज के विरोधी बन जाएंगे। हमें तो इनमें प्रचार करना है व इनका सुधार करना है।"

तब पण्डित जी ने कहा, फिर कैसे इन्हें विदित हो कि इन्होने बहुत बुरा किया है?'

महाशय जी ने कहा, "मैंने एक उपाय सोचा है जिससे इन्हें अपना अपमान भी न लगे और वे अपना अपराध भी अनुभव करें।"

श्री पण्डित जी के पूछने पर महाशय जी ने कहा, "आज हम इनके हां भोजन नहीं करेंगे और कारण पूछने पर सब कुछ स्पष्ट बता देंगे।

पण्डित जी को महाशय जी की युक्ति जच गई। महाशय जी व पण्डित जी ने उस दिन भोजन न किया। इस का प्रभाव अच्छा पड़ा। साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे ऐसे उपायों से वे कार्य करते थे।

श्री पण्डित जी के साथ महाशय जी की वार्ता उनके हृदय की गहराइयों का चित्र है। इससे पता चलता है कि उनके मन में वैदिक धर्म प्रचार व देश सुधार के लिए कितनी तड़प थी।

गुणियों का पारखी

महाशय जी गुणी व्यक्तियों से, समाज सेवियों से स्नेह करते थे। श्रीयुत पं० ईश्वर चन्द्र जी यहां आर्यसमाज के पुरोहित बन कर आए। कुछ समय इस पद पर कार्य किया। समाज ने समीपवर्ती ग्रामों में प्रचार करने का कार्य भी पण्डित जी को ही सौंप दिया। पण्डित जी की धर्मपत्नी

स्थानीय आर्य पुत्री पाठशाला में मुख्याध्यापिका थीं। घरेलु स्थिति ऐसी थी कि वह बाहर न जा सकते थे। अतः पण्डित जी ने पुरोहित पद से त्याग पत्र दे दिया और किसी धंधे की खोज करने लगे।

मित्रों से विचार विमर्श करके आपने चारा काटने की मशीन व रूई धुनने की (पैंजा) मशीन लगाने का निर्णय किया। अब स्थान की खोज आरम्भ हुई। नगर के मध्य जहां लोग सुविधा से पहुंच सकें, ऐसा स्थान चाहिए था। उन दिनों यहां न चारा काटने की बिजली की मशीन थी और न ही रूई का पैंजा। जब कहीं स्थान न मिला तो पण्डित जी ने महाशय जी के सम्मुख अपनी समस्या रखी।

महाशय जी ने एकदम गली नं० सात में अपना एक मकान दे दिया। कार्य आरम्भ कर दिया गया। उन दिनों मशीनों से काम कराने का रिवाज कम था। मुसलमान पैंजे घर २ जाकर रूई धुनते थे। चारा भी हाथ के टोके से ही काटा जाता था। पंडित जी की मशीन पर इतना ही काम था जिससे घर की दैनिक आवश्यकताएं ही पूर्ण हो सकती थीं। बचत का प्रश्न ही न था।

महाशय जी से पंडित जी ने कहा कि एक वर्ष का अगाऊ किराया मेरे लिए देना कठिन है आप मासिक किराये

ी व्यवस्था करवा दें। वह मकान सारे कुटम्ब का का
ांझा था। महाशय जी ने कहा, 'मैं ऐसा ही करा दूंगा।"
ुछ दिन के पश्चात् दुकान का मुनीम आ धमका और कहा
के एक वर्ष का किराया दो अन्यथा मकान ख़ाली करो।
ंडित जी ने येन केन प्रकारेण एक वर्ष का किराया जमा
करा दिया। पून्जी के बिना काम ठप होने लगा।

महाशय जी से पंडित जी ने पुनः अपनी समस्या रखी।
महाशय जी ने कहा, "आपने एक वर्ष का किराया दे दिया
ो ठीक किया। दुकान का कार्य नियम से चलना चाहिए।
ं यह धन आपको अपने निजी खाते से दे देता हूं। आप
ापनी सुविधा के अनुसार मासिक किश्तों में मुझे लौटा
ेना।"

इस प्रकार पंडित जी का कार्य ठीक प्रकार से चलता
हा और महाशय जी का रुपया भी लौटा दिया गया। यह
 उनकी निःस्वार्थ समाज सेवा का एक ज्वलन्त उदाहरण।
उन के हृदय में समाज सेवियों के लिए अथाह प्यार व
सम्मान था।

प्रस्ताव नहीं संकल्प चाहिए

हमारे देश में लोग प्रस्ताव पारित करके अपने को
कर्तव्य पालन से मुक्त मानते हैं। महाशय जी केवल

प्रस्ताव पारित करके मौन धारण कर लेने वाले व्यक्तियों में से न थे।

महाशय जी ने अपने नगर में हिन्दी प्रचारिणी सभा में एक प्रस्ताव रखा कि निमन्त्रण पत्र हिन्दी में आवें तो समारोहों में सम्मिलित होना अन्यथा नहीं। प्रस्ताव पारित हो गया। महाशय जी इतने मात्र से ही सन्तुष्ट न हुए आपने एक रजिस्टर में हस्ताक्षर करने के लिए सबको कहा ताकि पूरा विवरण रहे कि किस किस ने यह संकल्प लिया है। हस्ताक्षर कर्ता को हाथ उठाने वाले की अपेक्षा अपने कर्तव्य के निभाने का कुछ अधिक ध्यान रहता है।

पहले बताया जा चुका है कि और कितनों ने इस संकल्प को मूर्तरूप दिया यह तो ज्ञात नहीं परन्तु महाशय जी आजीवन इस व्रत का पालन करते रहे। इसी कारण कई बार उनको अपने धनिष्ट मित्रों व निकट सम्बन्धियों का कोप भाजन भी बनना पड़ा।

घबराए नहीं, इतराए नहीं

महाशयजी की यह विशेषता थी कि वह संकटमें घबराते न थे। सुख वैभव में इतराते न थे। एक सज्जन ने बताया कि आर्यसमाज अबोहर के मन्दिर का निर्माण हो रहा था। मुसलमानों की ओर से कुछ रुकावट पैदा होने की आशंका

हुई । नगर पालिका की ओर से भी अंग्रेज़ी शासन के कारण कोई विघ्न उपस्थित होने लगा था । महाशय जी तब आर्य युवक समाज का संचालन करते थे । आपने साहस का परिचय दिया और रात में गली में पड़ी आर्यसमाज के भवन निर्माण की सब सामग्री सुरक्षित मन्दिर में रखवा दी । किसी को भी निर्माण कार्य में रोड़ा अटकाने का दु:साहस न हुआ । आर्यसमाज के संगठन व आर्य समाजियों की श्रद्धा के सामने विरोधियों की दाल न गल सकी ।

लोक-सेवक का अमूल्य जीवन

महाशय जी कई बार आचार्य नारायणदास जी की चर्चा करते हुए कहा करते थे कि इनका जीवन बड़ा मूल्यवान है । लोक सेवा में लीन इस विभूति को अपने तन के सुख की तो क्या अपने जीवन की भी चिन्ता नहीं । आप आचार्य जी से कहा करते थे कि आपके शुभ कार्यों एवं सौजन्य से जहां भले पुरुष आपका सन्मान करते हैं, वहां कुटिल वृत्ति के लोग जो स्वभाव से ही दूसरों का अनिष्ट करते हैं, आप की लोक प्रियता से जलते हैं । रात्री को देर से जब कभी आचार्य जी नगर से कालेज जाते तो आप एक बार तो अवश्य यह कहकर रोकते टोकते कि इस समय अकेले जाना ठीक नही । ''मैं किसी को साथ

भेजता हूं।"

महाशय जी स्वयं सुनाया करते थे कि मेरे इस वाक्य पर प्रिंसिपल महोदय हंस देते हैं। उनका यही उत्तर होता है कि कोई चिन्ता नहीं। ईश्वर पर विश्वास रखो। जब आयेगो तो कोई भी न टाल सकेगा।

आज धन की पूजा है। किसी समाज सेवी का महाशय मुकन्दलाल जैसे किसो विरले व्यक्ति को ही ध्यान हो सकता है।

सन्देश देश देश में वेदों का दें सुना

श्री वागीश्वर विद्यालंकार का यह पद आर्यसमाज की पिछली पीढ़ी के हृदय में निनादता रहा है। महाशयजी को यह आदर्श सदैव बेचैन रखता था। एक बार अरोड़-वंश सभा ने कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाने का निश्चय किया। महाशय जी ने मुझे कहा कि एक कार्य में आप दोनों (भाई राजकुमार जी व मैं) हमारा हाथ बटायें। मैंने पूछा क्या कार्य है?

महाशय जी ने कहा हरियाणा, राजस्थान व पंजाब के प्रमुख नगरों में सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध हमारी सभा प्रचार करायेगी। मैं चाहता हूं कि आप दोनों एक विद्वान सुवक्ता का प्रबन्ध करा दें। मैं अरोड़वंश से सारी आर्थिक

व्यवस्था करा दूंगा । मैं समझता हूं कि इसका एक लाभ यह भी होगा कि जो लोग हमारी बात सुनना नहीं चाहते ऐसे अभागे भाई भी अरोड़ वंश सभा के नाम पर हमारे विद्वान की बात जब सुनेंगे तो वैदिक सिद्धान्तों की आप उन पर अवश्य लगेगी ।"

मैंने श्री पं० ओम प्रकाश जी आर्य जालन्धर का कार्य-क्रम बनवाने का यत्न किया परन्तु उन से समय न ले पाया इस घटना से महाशय जी के मन की गहराई स्पष्ट दिखाई देती है । हम कुछ सीख सकते हैं तो इस से अवश्य प्रेरणा लें ।

नारी का निरादर

श्री पं० ईश्वर चन्द्र जी ने बताया कि महाशय जी ने अश्लील चित्रों के विरुद्ध जो आन्दोलन चलाया था उसका एक कारण यह भी था कि दुकानों पर, घरोंमें, सभा संस्थाओं के कार्यालयों में नारियों के अर्द्ध नग्न चित्र देख कर महाशय जी को बड़ा दुःख होता था । हलवाई की दुकान हो या नाई की, सिग्रेट बीड़ी का विज्ञापन हो अथवा रेडियो का सबमें नारियों के ही अश्लील चित्र दिये जाते हैं । वह इसे भारतीय महिला का अपमान समझते थे । नारी भोग की वस्तु नहीं, न ही व्यापार के लिए उसका रूप रंग कमाई

का साधन है। इस पुनीत भाव को लेकर वह इस क्षेत्र में सुधार की पताका लेकर आगे आए।

एक अनोखी बात

श्री पं० ईश्वर चन्द्र जी भूतपूर्व पुरोहित आर्यसमाज के विवाह को केवल चार साढ़े चार वर्ष ही बीते थे कि दोनों पति पत्नी ने वानप्रस्थी के रूप में जीवन बिताने का निश्चय कर लिया। पंडित जी के एक पुत्र था एक पुत्री। पति पत्नी ने यही निर्णय किया कि इन दो बच्चों का लालन पालन करके इनका ठीक २ निर्माण किया जाए और वानप्रस्थ के रूप में अपना भविष्य संवारा जाए।

पंडित जी ने अपने निश्चय की सूचना आर्यसमाज के प्रधान ला० शेरसिंह जी बजाज को दे दी। ला० जी बड़े नम्र, दक्ष व अनुभवी पुरुष थे। आपने पंडित जी की आयु का ध्यान करते हुए उनको आश्रम परिवर्तन से रोका। बहुत समझाया कि छुरेकी धार पर चलने लगे हो। सोचो, सम्भलो और भावुकता में आकर यह पग न उठाओ। बड़े बड़े फिसल गये तो आप कैसे यह व्रत निभा सकेंगे। यदि व्रत पर अडिग न रह पाए तो लोग हंसी उड़ायेंगे और आर्य-समाज की भी बहुत अपकीर्ति होगी। ला० जी ने समझाया कि कुछ वर्ष संयम से गृहस्थ में रहो फिर आश्रम

बदल लेना । व्रत लेना सुगम है परन्तु व्रत का पालन करना कठिन है ।

इधर पंडित जी व उनकी संगिनी दृढ़ निश्चय कर चुके थे । प्रधान जी ने यह विषय अन्तरंग में रख दिया । पंडित जी ने अन्तरंग के निर्णय की प्रतीक्षा किये बिना आश्रम परिवर्तन की तिथि भी निश्चित कर दी । बात किसी प्रकार से नगर में भी फैल गई । आर्यसमाज के एक विद्वान श्री पं० श्रीराम जी ने संस्कार कराना स्वीकार कर लिया ।

जिस दिन पं० ईश्वर चन्द्र जी ने आश्रम बदलना था, लोगों की भारी भीड़ आर्य समाज मन्दिर में आ गई । अन्तरंग में इस विषय पर एक मत न था । ला० शेर सिंह जी इस के विरुद्ध थे । उनके साथ कई अन्य सज्जन भी थे । ला० शेर सिंह अपनी बात पर अड़ गये कि समाज मन्दिर में यह संस्कार नहीं हो सकता । कई घंटे यह विवाद होता रहा । लोग जाने लगे । अन्तरंग ने ला० जी के प्रभाव में आश्रम परिवर्तन के निषेध का प्रस्ताव स्वीकार कर दिया ।

पं० श्री राम जी ने बहुत समझाया कि यह सिद्धांत विरुद्ध बात नहीं पर कुछ भी लाभ न हुआ । महाशय मुकन्द लाल, महाशय धर्मचन्द व श्री पं० विश्वनाथ जो

आश्रम परिवर्तन के पक्ष में थे। महाशय मुकन्द लाल जी ने प्रधान जी को अलग कर के कहा कि शास्त्रों का मत है कि जब वैराग्य हो जाये तो सन्यास की दीक्षा ली जा सकती है तो वह तो उस से पहले की अवस्था है। फिर आप यह क्यों पहले ही कल्पना कर लेते हैं कि वे दोनों अवश्य ही फिसलेंगे।

आप ने प्रधान जी से कहा कि वह पंडित जी व उन की पत्नी से अलग अलग बात कर देखें। यदि दोनों स्वेच्छा से यह व्रत ले रहे हैं तो आप को क्या आपत्ति है ? ये दोनों सहसा तो वानप्रस्थ में आ नहीं रहे। गृहस्थ के सुख दुख देख चुके हैं। बच्चे भी नहीं। दोनों पढ़े लिखे समझदार हैं। हमें इन्हें उत्साहित करना ही चाहिए। महाशय जी का सुझाव प्रधान जी को जंच गया। ऐसा ही किया गया अन्तरंग ने सर्वसम्मति से आश्रम परिवर्तन की स्वीकृति दे दी।

पाठकगण। स्मरण रहे कि जिस समय की यह बात है तब महाशय जी भी युवा अवस्था में थे। युवा अवस्था में ही उन की बुद्धि कितनी परिपक्व थी यह उन के उपरोक्त सुझाव से अनुमान लगा लें।

विद्वान का सम्मान

पं० ईश्वर चन्द्र जी ने आश्रम बदलने के पश्चात् पुरोहित-पद से त्यागपत्र दे दिया। तब महाशय जी व कुछ अन्य सज्जनों ने उन के निर्वाह के लिए कुछ सहायता देनी चाही। पंडित जी ने बिना कार्य किये कुछ लेने से इन्कार कर दिया। तब महाशय धर्म चन्द व महाशय मुकन्द लाल जी ने अपने बच्चों को धर्म शिक्षा देने, हिन्दी पढ़ाने आदि के कार्य सौंप कर पंडित जी को आर्थिक सहयोग दिया। महाशय जी ने अपने भाइयों के घरों में भी यह व्यवस्था करवाई।

हम अपना कर्तव्य निभाएं

एक बार महाशय जी श्री पं० ईश्वर चन्द्र जी के घर गये। पंडित जी की देवी दूध बिलो रही थी। दूध वाला पात्र बड़ा पुराना व टूटा फूटा था। महाशय जी बिना कुछ कहे सुने वहां से लौट आए। अगले ही दिन अपने सेवक के हाथ कई नये मिट्टी के पात्र अपने गांव सप्पां वाली से पंडितजी के घर भिजवा दिये। पंडित जी को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि बात क्या बनी ?

आप ने महाशय जी से पूछा कि आप ने यह क्या किया ? महाशय जी ने कहा कि आप ने तो सब कुछ ईश्वर

इच्छा के आधीन कर दिया। हमारा कर्तव्य है कि हम अपने पूज्य विद्वान का ध्यान रखें। आप के घर गया था बहिन जी को टूटे भांड में दूध बिलोते देख कर मुझे विचार आया कि इतने पात्र भेज दूं कि चिरकाल तक नया पात्र क्रय करने की आवश्यकता ही न पड़े।

पंडित जी ने यह भी बताया कि जब हमने पुरोहित-पद छोड़ा महाशय जी बिन मांगे हमारे लिये गुड़ अनाज आदि भेजते रहते। जब खेतों से पैदावार आती पहले पंडितजी का भाग घर पहुंचता फिर महाशय जी उस का घर में उपभोग करते।

स्त्री जाति का सत्कार

वेद आदि सत्य शास्त्रों में स्त्री जाति को हीन नहीं माना गया। अवैदिक मतों में नारी का बड़ा निरादर किया गया है। तुलसी दास जी ने तो लिखा है :—

अधम से अधम, अधम अति नारी। जैन भाई मानते हैं कि नारी को निर्वाण ही नहीं मिल सकता। एक ईसाई सन्त जैरम का मत है :—

Women is the door of devil, gate of evil and sting of scorpion'

महाशय मुकन्द लाल जी का जन्म ऋषि दयानन्द के युग में हुआ। वह महर्षि के जीवन-दायक विचारों से

विभूषित थे। वह नारी जाति के उत्थान व उद्धार में ही राष्ट्र का कल्याण व मनुजता का मान मानते थे। उन के जीवन की एक मार्मिक घटना पूज्य महाशय जी की सुपुत्री सतीश जी एम० ए० ने सुनाई। सेतिया परिवार में एक महिला को समाज ने अवहेलना से देखना आरम्भ कर दिया।

अवैदिक मतों का यह दूषित संस्कार है कि पुरुष लाख भूलें करे तो समाज में वह तन तान कर चलता है। नारो एक बार भूल करदे तो समाज उस को क्षमा नहीं करता। महाशय जीने इस देवी,को सम्भलने में पूरी सहायता दी। लोगों ने बुरा मनाया। बात यहीं तक रहती तो ठीक थी हीन वृत्ति के लोगों ने महाशय जी पर दोषारोपण भी किये। घर वालों ने भी कहा कि आप उसकी सहायता न करें आपने क्या लेना देना है। अपनी धुन के धनी महाशय जी न निन्दा से डरते थे न स्तुति से। उन्होंने उक्त देवी की सहायता करनी बन्द न की। वह कहते थे कि धर्म का, सत्य का पक्ष मैं डर कर नहीं तजूंगा। ऐसे विरले धीर पुरुष ही किसी बड़े कार्य को सिद्ध कर सकते है।

महाशय जी की मृत्यु पर वह देवी महाशय जी के घर आई और कहा, "मेरे लिए तो वह देवता थे।

वह उस ऋषि के शिष्य थे जिनके बारे लिखा है:—

मानवता का मान दयानन्द ।
दीनदुखी का त्राण दयानन्द ॥
जन हितकारी परोपकारी ।
है युग गौरव गान दयानन्द ॥
मातृ शक्ति को शीश निवाकर ।
करते हैं सन्मान दयानन्द ॥

लड़कों को डांटते, लड़कियों को नहीं

महाशय जी की सुपुत्री प्रो० सतीश जी ने बताया "मेरे पिता जी घर में लड़कों को तो डांट डपट करते थे परन्तु लड़कियों से भूल होने पर भी डाट डपट नहीं करते थे। हमें वह प्रेम से ही समझाते। नारी का सन्मान उनके स्वभवाव का एक अंग बन चुका था। उनकी कृपा से अब यह हमारे कुल की परम्परा बन गई है। मेरे दादा जी भी इसी विचार के थे।"

असफल होने पर हलवा खाओ

यदि परीक्षा में कोई असफल हो जाए तो महाशय जी कहते कि हलवा खाओ ताकि मस्तिष्क अच्छा बने। वह अपना निज का एक अनुभव सुनाया करते थे कि विद्यार्थी जीवन में असफल होने पर मैंने तो हलवा खाया था। अनुत्तीर्ण होकर मैं रोया धोया नहीं।

परिवारों के झगड़े

कई बार परिवारों के घरेलू झगड़े उनके पास आ
ते। किसी पति पत्नी का झगड़ा हो, विशेष रूप से
सी ने पत्नी को छोड़ दिया हो तो महाशय जी ऐसे
ाड़ों को निपटाने सुलझाने में विशेष रुचि लेते। ऐसी
तनी परित्यकता बहिनों का दुःख निवारण करने में वह
फल हुए। इन कार्यों में वह बड़ा समय देते थे।

कई बार वह बाहर से आते तो कोई ऐसी समस्या
कर उनके पास आ जाता। थका टूटा होने पर भी
णा-निधि दयानन्द का यह शिष्य नारी के कष्ट हरने के
ए अपना दुःख भूल कर घण्टों ऐसी समस्या सुनने और
र उसका समाधान ढूंढने में लगा देता। न जाने उनकी
ा से कितने घर उजड़ते उजड़ते पुनः बस गये।

बुरा क्या मनाना था, उनका तो यह स्वभाव ही था"

मैंने महाशय जी की सुपुत्री प्रो० सतीश कुमारी
से पूछा कि महाशय जी तो लोक सेवा में जुटे रहते थे।
खाने का नियत समय, न सोने का, न आने का समय,
जाने का, क्या आपका परिवार महाशय जी की इन
ाविधियों से खिन्न नहीं होता था ? सतीश जी ने कहा,
ब से बड़े भाई ने होश सम्भाला है पिता जी ने सब भार

उन पर ही डाल दिया। पिता जी का तो स्वभाव ही ऐसा है यह जानकर माता जी भी बुरा न मनातीं। पिता जी को न किसी की सगाई की चिन्ता थी; न विवाह का सामान लाने की। सब कुछ भाई जी करते। हाँ पिता जी का मार्ग दर्शन, वरदहस्त तो प्राप्त था ही। फिर हमारा परिवार विभक्त हो कर भी अविभक्त (Joint family) ही समझें।

जव पिता जी सामाजिक कार्यों में व्यस्त होते तो मेरे चाचे या ताऊ हमारी पूरी सुधि लेते। हम ने पिता जी द्वारा घर की उपेक्षा पर कभी बुरा नहीं मनाया।

जब लाजपत जी की मृत्यु हुई

महाशय जी के छोटे भाई लाजपत जी की मृत्यु हुई तो उनकी तीन पुत्रियों के लालन पालन का भार सब ने लिया। महाशय जी ने कहा कि इनका भार तो मैं लूंगा पाठक पूर्व पढ़ चुके हैं कि लाजपत जी की पुत्रियों व माता कौशल्या जी ने स्वयं बताया कि महाशय जी अपने बच्चों से कहीं अधिक हमारा ध्यान रखते थे। किसी ने सम्पत्ति के बटवारे के समय कहा कि पुत्री का तो सम्पत्ति में भाग नहीं (तब नहीं था) अतः इन को निकाल कर सम्पत्ति का बटवारा किया जाए तो महाशय जी ने कहा कि मैं अपना

स्व० ला० लाजपतराय सेतिया
(महाशय जी के बड़े भाई)

डा० श्री राम जी
(महाशय के परममित्र)

ाग तो छोड़ सकता हूं परन्तु इन देवियों को सम्पत्ति
ं अवश्यमेव भागीदार बनाया जाए।

यह था उनकी निःस्वार्थ भावना समझाने का ढंग

बच्चों को सभ्य बनाने, शिष्टाचार सिखाने में वह बड़ी
चि लेते थे। जब बच्चे देर से उठते तो वह यह नहीं
हते थे कि सूर्योदय से पहले क्यों नहीं उठते। वह यह
ह कर समझाते कि यह बड़ा अच्छा है सूर्य देवता का
रादर नहीं करता। सूर्य से पहले उठकर सूर्य का
रस्कार करना बहुत बुरा है। बस बच्चे इस व्यंग्य से
हाशय जी का भाव समझ जाते।

सारे परिवार का पत्र-व्यवहार

महाशय जी के सारे परिवार में पत्र-व्यवहार अब
क हिन्दी में ही चलता है। सतीश जी ने अंग्रेजी में एम०
० किया है परन्तु उनका सखियों से सारा पत्र-व्यवहार
ार्य भाषा में होता है। उनका एक पुत्र विनोद आठ वर्ष
अमरीका में है। आज पर्यन्त उसका एक भी पत्र घर
अंग्रेज़ी में नहीं आया। यह महाशय जी की प्रबल प्रेरणा
ौर सिद्धान्त-प्रियता का फल है।

जब अपनी पुत्री के अङ्क कटवा दिए

महाशय जी की पुत्री प्रो० सतीश आर्य पुत्री पाठ-

शाला में पढ़ती थी । प्राथमिक शाला में भी तब सिलाई की परीक्षा होती थी । सिलाई की परीक्षा के दस अंक थे । महाशय जी की सुपुत्री को दस में से छः अंक प्राप्त हुए । महाशय जी जानते थे कि सतीश ने सिलाई स्वयं नहीं की घर से करवाई है । शेष कन्यायें भी घर से ही सिलाई करवा कर दिखा देती थीं। प्राथमिक शाला की बच्चियां जानें भी क्या कि सीना पिरोना क्या होता है ?

महाशय जी पाठशाला गये और अपनी पुत्री के अंक कटवा दिये । आपने कहा, "यदि इसने स्वयं कार्य किया होता तो उसे आप कितने भी अक दे दें ! इसने झूठ बोला है। यह कार्य इसने स्वयं नहीं किया। बाल्य अवस्था में ही मेरे बच्चे झूठ बोलना सीखें, यह कोई अच्छी बात नहीं ।"

स्मरण रहे महाशय जी स्वयं पाठशालाला के सञ्चालकों में से एक थे। यह ठीक है कि आर्यसमाज की शिक्षा संस्थओं में भी निकम्मे लोगों ने घुसकर इनको दूषित कर दिया। परन्तु आर्य शिक्षा संस्थाओं की धाक जो जन मानस पर जमी है ता इसका कारण जहां महात्मा हंसराज, पं० मेहरचन्द, ला० मेहरचन्द जी आदि आदर्श आचार्य हैं वहां

महाशय जी सरीखे इन संस्थाओं के संचालकों
की भद्र भावनायें भी इन को उन्नत करने का एक
कारण है ।

जो सत्य है तो फिर डट कर कहेंगे

पाठक ! पूर्व पृष्ठों में यह पढ़ चुके हैं कि महाशय जी
र बाल्यकाल में ही वीर हक़ीकत राय के बलिदान की
मर कहानी का अमिट प्रभाव पड़ा । महाशय जी स्वयं
ुनाया करते थे कि वह बच्चों के दो दल बना कर वीर
कीकत का नाटक करने का प्रयास किया करते थे । वह
ुसलमान सहपाठियों के साथ वाद विवाद भी करते रहते ।
ौर प्रायः कहा करते थे कि मुसलमानों ने भारत पर बड़े
त्याचार किए हैं । इनका ज्वलन्त प्रमाण बाल हकीकत
से निर्दोष बाल की निर्मम हत्या है ।

कई बार उस समय के राजनैतिक प्रभाव में कुछ बच्चे
ो कह देते कि एकता के लिए ऐसी बात नहीं कहनी
ाहिए। महाशय जी के पक्ष में भले ही दो साथी हों या
ार वह निर्भीक होकर सबके मध्य यह कहने से कदापि न
ूते कि जो सत्य है सो कहूंगा ।

इतिहास के पृष्ठों पर यह रक्तरञ्जित कहानी लिखी

है कि वीर हकीकत का वध किया गया और मुसलमानी शासनकाल में ऐसी घटनाएं नित्य-प्रति घटती रहीं। महाशय जी का कथन था कि सत्य को छिपा कर एकता न होगी। सत्य को समझ कर यथार्थवादी बन कर ऐक्यभाव को मूर्त-रूप दे सकेंगे।

महाशय जी का प्यारा वेदमंत्र

वेद ईश्वर का अनादि ज्ञान है। आस्तिकों को वेद के
क-एक शब्द व एक-एक अक्षर पर अडोल श्रद्धा है। फिर
ी इस ज्ञान सागर में स्नान करने वाले, सम्पूर्ण वेद पर
द्धा रखते हुए भी अपनी-अपनी रुचि अनुसार किसी-किसी
न्त्र का विशेष रूप से पाठ करते हैं यथा महात्मा हंसराज
ो को 'ओ३म् विश्वानि देव—' मन्त्र से विशेष अनुराग था
तात्मा राष्ट्रवीर राम प्रसाद जी 'बिस्मिल' भी इन्हीं
ार्थना मन्त्रों का गान करते हुए फांसी के झूले पर झूम-
ूम कर चढ़े।

महाशय मुकन्दलाल जी सेतिया की कापियां देखने से
ता चलता है कि गायत्री मन्त्र के अतिरिक्त उनको वेद का
म्न मन्त्र अत्यन्त प्यारा था :...

ो३म भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम
देवा भद्रं पश्यमाक्षभिर्यजत्राः ।
थरै रंगैस्तुष्टुवा हूं सस्तनुभि-
व्यंशेमहि देवहितं यदायुः ॥

हे देवो! कानों से हम भद्र ही श्रवण करें। नयनों से

भद्र दृश्य ही देखें। हृष्टपुष्ट अंगों से युक्त हो कर प्रभु की स्तुति पूजन करते हुए हम देव जनों के हित में अर्पित होने वाली पूर्ण आयु प्राप्त करें।

महाशय जी का प्यारा भजन

महाशय लालचन्दजी नारंग ने बताया कि कारावास में सन्ध्या के पश्चात् महाशय जी प्रायः यह भजन श्रद्धा-विभोर होकर गाया करते थे :–

ईश्वर तुम ही दया करो तुम बिन हमारा कौन है।
दरिद्रता दीनता हरो तुम बिन हमारा कौन है ॥
जग के बनाने वाला तू, दुख के मिटाने वाला तू ।
बिगड़ी बनाने वाला तू, तुम बिन हमारा कौन है ॥
माता तू ही, तू ही पिता, बन्धु तू ही तू ही सखा।
केवल तुम्हारा आसरा, तुम बिन हमारा कौन है ॥
तेरा भजन, तेरा मनन, तेरी ही धुन तेरी लगन ॥
तेरी शरण में आए हम, तुम बिन हमारा कौन है ॥
तेरी दया को छोड़ कर, कुछ भी नहीं हमें ख़बर ।
जायें तो जायें हम किधर, तुम बिन हमारा कौन है ॥

महाशयजी की विचार-वाटिका

विचारों का महत्व

"किसी देश को अच्छा या बुरा बनाना हो तो उस के विचारों को बदल दो। किसी देश या जाति को बदलना हो तो उस के साहित्य और विचारों में परिवर्तन कर दो।

विचारों में बड़ी शक्ति है। अपने कर्तव्य-पथ से पतित हुए, कायरों की भाँति डरते तथा कांपते हुए वीर अर्जुन के अन्दर वीरता का भाव उत्पन्न करने वाले श्री कृष्णचन्द्र जी के ओजस्वी विचार ही तो थे।'

(अन्तिम डायरी से)

मन की लहरें

"जीवन नैया को सुरक्षित रखने के लिये मन की लहरों को ही शांत रखना होगा। मन की लहरें काम अथवा इच्छा से उत्पन्न होती हैं।"

(अन्तिम डायरी से)

मानव-जीवन का ध्येय

"मनुष्य का उद्देश्य है परम शान्ति, सदा रहने वाला सुख प्राप्त करना। सांसारिक भोग पदार्थों में सर्वदा रहनें वाला सुख व शांति नहीं मिल सकते। नाशवान वस्तुओं में अविनाशी सुख शांति खोजने वाला धोखा ही खायेगा। भगवान की शरण में आने से ही सुख और शान्ति मिलने लग जाते हैं।"

(अन्तिम डायरी से)

इन पंक्तियों को पढ़ कर लेखक को कविरत्न प्रकाश जी के एक गीत के ये पद स्मरण हो आते हैं :—

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है।
अचरज यह जल में रह के भी मछली को प्यास है॥
कुछ तो समय निकाल आत्मशुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य न केवल विलास है॥
आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक।
तू जब तलक 'प्रकाश' इन्द्रियों का दास है॥

मेरा योग

'कर्त्तव्य पालन ही मेरी भक्ति और पूजा है। कार्य में पूर्ण सफलता मेरे लिये पारितोषक है। यही मेरा योग है। मेरा योग निराश होकर मैदान छोड़ जाना मुझे नहीं

सिखाता अपितु भगवान कृष्ण जी की भांति महाभारत के युद्ध में कूद कर पूर्ण सफलता प्राप्त कर के ही विश्राम करना सिखाता है।' (अंतिम डायरी से)

कर्त्तव्य भावना

'हमें कर्त्तव्य को सम्मुख रखकर कर्त्तव्य की भावना से आगे बढ़ना चाहिए। संसार आगे बढ़ने वालों का सदा साथ देता है। हम अपने कर्म की ओर ध्यान दें तो संसार हमारी ओर ध्यान देगा। यह सन्देह रहित है।

(अंतिम डायरी से)

वैदिक धर्म

(१) वैदिक धर्म में बुद्धि को विशेष स्थान प्राप्त है।
(२) वैदिक धर्म आत्मा परमात्मा, प्राणिमात्र व सृष्टि का बोध कराता है।
(३) केवल संसार को जानना ही पर्याप्त नहीं। हमें आवश्यकता के अनुसार इसे सुधारना भी होगा, जैसे रक्षा उन्नति तथा पालन।
(४) वैदिक साम्यवाद का आधार है अपने प्रति, समाज के प्रति, ईश्वर के प्रति, अपना कर्त्तव्य। इन में से किसी एक की अवहेलना अशांति का कारण है।
(५) 'मा गृध: कस्य स्विद्धनम्' किसी के धन लेने की इच्छा

न कर। धन निर्धन का भेदभाव त्याग भाव को त्यागने के कारण है। स्वार्थी पूंजीपति बन गये हैं। व्याज; लाभ, व्यापार, कर, वेतन आदि के नाम पर लूट मची हुई है।

(६) ऊंच नीच, भेदभाव, वेद विरुद्ध कार्य करने से अशांति होती है। प्राणिमात्र को सब प्रकार की दासता, विषमता और अज्ञान से विमुक्त कर सर्वत्र समता, स्वतन्त्रता और ज्ञान को प्रतिष्ठा देना ही उद्देश्य है।

(७) श्रद्धा अंधी न हो, तर्क से उच्छृंखलता न हो। साध्य को छोड़ कर साधनों के पीछे जाने वाला न हो।

(८) प्रत्येक व्यक्ति को धंधा मिले। कोई व्यसनी व आलसी न हो। राज्य भोजन वस्त्र व आवास का प्रबन्ध करे।

विचार शक्ति

'यदि हमारे विचार शुद्ध पवित्र हैं तो वे हमें प्रसन्नता के साम्राज्य की ओर ले जाएंगे। यदि वे निकृष्ट, दुर्बल, अभद्र हों तो हमारे घोर शत्रु सिद्ध होंगे। इन्हीं के कारण व्यक्ति वीर योद्धा अथवा निकम्मा प्रमादी बन जाता है।'

(एक लिखित पत्र से)

अवतार नहीं महापुरुष

'महापुरुषों को अवतार मानकर नहीं अपने जैसा मनुष्य समझ कर उन के आदर्शों के अनुरूप हमें उन जैसे कार्य करने चाहिएं।' (छत्रपति शिवा जी के राज्यारोहण दिवस पर)

भले को भला बुरे को भी अच्छा बना कर

'भले को भला व बुरे को भी सुधार कर अपने साथ कार्य में लगाएं। छोटे से बड़े कार्य तक मोह छोड़ कर जुट जाएं।' (शिवा जी के राज्यारोहण दिवस पर संघ में दिये गए सेतिया जी के विचारों से)

हमारी दुर्दशा

'अब त्याग, तपस्या तथा तथा देश भक्ति के स्थान पर सदस्यता, मन्त्री पद, मोटर तथा मूल्यवान कोठी बनाने की दौड़ धूप हो रही है। संस्कारों पर सुनहरी निमन्त्रण पत्र छापने और घर पर मोटरों का तांता देखने की लग्न है। समाचार पत्रों में अपने चित्र छपवाने की प्रबल इच्छा है। देश भक्ति का उच्च उद्देश्य समाप्त है।

(अन्तिम डायरी से)

देश के शत्रु से

'हम भारतीय अपने शत्रु से अधिक घृणा नहीं करते

हमें अपने देश वासियों को न केवल यह सिखाना है कि अपने देश से कैसे प्रेम करें अपितु यह भी कि अपने शत्रु से कैसे घृणा करें।'

स्वतन्त्रता के पश्चात

'आज स्वतन्त्र होने पर भी अपनी सभ्यता संस्कृति को भुला कर पश्चिम की अंधी नकल करना, फैशन, विलासिता, सिनेमा, संस्कृति, कला के नाम पर युवक युवतियों के अर्द्ध नग्न नाच, स्वतन्त्रता के नाम पर उच्छृंखलता, सहशिक्षा, गन्दा साहित्य, गन्दे विज्ञापन गन्दे चित्र आदि संयम व सदाचार भुला कर पशु से गिरा जीवन बिताने के कारण हमारी यह दुर्दशा है।'

(श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर लिखित लेख से)

राष्ट्र भाषा

'अपने दैनिक तथा सार्वजनिक जीवन में राष्ट्र भाषा हिन्दी का प्रयोग कर के कर्त्तव्य का पालन करें।'

(महाशय जी के लिखित पत्रों में एक कागज़ पर केवल यही वाक्य लिखा मिला।)

दासता का कारण

'देश में संगठन का अभाव था इस लिये हमारा राष्ट्र

परतन्त्र हुआ ।'

(संघ के एक शिविर में दिये गये भाषण से)

हमारे महापुरुष

'हमारे महापुरुषों ने हमारे जैसे निकम्मों को आश्रय दिया ।' (संघ में दिये गए एक भाषण से)

वर्तमान परीक्षा पद्धति

'परीक्षा का वर्तमान ढंग जिस में नकल करना व पास होने के लिए गुरीला युद्ध सिखाया जा रहा है । कोई अंग इस बुराई से वंचित नहीं । अवस्था इतनी गिर गई है कि भृष्टाचार बुरा नहीं लगता अपितु अपना अधिकार समझ कर किया जाता है । किसी समय इन का वहिष्कार किया जाता था किन्तु अब तो अभिमान से भृष्टाचारी समाज में ऊंचा पद प्राप्त करने का यत्न कर रहे हैं । यह पद्धति आज से २५ वर्ष पूर्व तो कुछ लाभदायक होगी परन्तु आज तो इस का सर्वथा लाभ नहीं ।'

(शिक्षा पर एक लेख से)

सत्याग्रही कौन ?

'जनता ने कितना स्वागत किया अथवा फूल मालायें डाली गईं । इस बात की ओर ध्यान देने वाले सफल सत्याग्रही नहीं हुआ करते ।' (कारावास से एक पत्र)

कारावास यात्रा का अभिमान

'एक मास के लिये जेल जाकर कोई अभिमान करे तो यह किये हुये कार्य को अपमानित करना है। हम ने किसी के लिये कुछ नहीं किया। केवल अपना कर्त्तव्य समझते हुए जीवन में एक मास गो माता की रक्षा के लिये दिया है।'

(गो रक्षा आन्दोलन में जेल से लिखे एक पत्र से)

समय का उपयोग

'कलकत्ता अथवा शिकागो तो वर्ष में एक पत्र भी नहीं लिखता ताकि अमूल्य समय नष्ट न किया जावे। समय का उपयोग ज्ञान वृद्धि के लिये ही हो।'

(गोरक्षा आन्दोलन के समय २५.४.६९ को सेतिया जी के अपनी भतीजी सरोज के नाम पत्र से। स्मरण रहे वह कलकत्ता पढ़ती थी और शिकागो में महाशय जी का पुत्र पढ़ता था।)

भविष्य में ध्यान रखो

'शिक्षा जिस प्रकार की भी प्रचलित है, ग्रहण करनी है ताकि भविष्य सफल हो सके। यह बात दूसरी है कि भविष्य सफल केवल पश्चिमी ढंग से न बना कर भारतीय

सभ्यता के अनुसार बनाया जाये ।'

(सरोज के नाम लिखे उपरोक्त पत्र से)

'अच्छे वर्तमान काल से ही अच्छा भविष्य बनता है। इस बात का ध्यान कर लेवें तो भविष्य के विषय में चिन्ता करने की आवश्यकता न होगी ।'

(अरोड़वंश सम्मेलन १९६७ के स्वागताध्यक्ष के रूप में दिये गये भाषण से)

श्रद्धा-सुमन

'श्रत ते दधामि'

(सामवेद)

रत्न-दल प्रिय हार बन कर तब कहीं उर पर सुहाया ।
बिन तपस्या, त्याग के किसने भला प्रिय ध्येय पाया ।।

कुम्भकारों के सहे नित लात मुक्के औ कुदारे ।
धूप में सूखे, धरे निज शीश पर जलते अंगारे ।।

मृत्तिका का पात्र वह तब प्रेम से अधरों लगाया ।
बिन तपस्या त्याग के किसने भला प्रिय ध्येय पाया ।।

—कविरत्न प्रकाशचन्द्र

(१)

श्रद्धेय आचार्य नारायण दास जी की भावभीनी श्रद्धाञ्जलि

मानव स्वार्थी ही नहीं अपितु अपने स्वभाव से अपनी प्रकृति से स्वार्थी है। यह उस के बस की बात नहीं। गहराई से देखें तो माता का अपने बच्चे से प्रेम भी इसी लिए है ना कि बड़ा होकर मेरी सेवा करेगा।

आपके भाइयों का परस्पर प्रेम एक स्पर्धाजनक उदाहरण था। जहां इतना गहरा प्रेम नहीं होता वहां भी भाई की मौत एक ऐसा आघात है जिसे सहन करना बड़े धैर्य का कार्य है। परिवार के हितैषियों का कर्तव्य बनता है कि इस परिवार को धैर्य दें उनका दुःख बटायें।

आप के परिवार के सदस्य तो क्या सम्भवतः मेरे और महाशय जी के बहुत से निकट के मित्रों को भी यह ज्ञात नहीं कि मैं महाशय जी का प्राचार्य के रूप में एवं निजी

रूप में कितना ऋणी हूं। सात आठ वर्ष के इस काल में मैंने सौभाग्य से उनका इतना विश्वास प्राप्त कर लिया था कि कोई कार्य हो, निजी हो, कालेज का हो, आर्यसमाज का हो, देश जाति के संगठन अथवा सिद्धान्त की परख का हो, उनके लिए मेरी सम्मति लिए बिना और मेरे लिए उनकी सम्मति लिए बिना, निर्णय करना असम्भव था और न ही मुझे पूर्ण विश्वास हो सकता था कि मेरा कोई निर्णय, उनकी सम्मति की मुहर लगे बिना ठीक है।

उन के परिवार में उनके निधन से जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति असम्भव है। परन्तु मेरे लिए यह एक इतनी बड़ी क्षति है जिस को मैं जीवन भर अनुभव करता रहूंगा। मेरी आंखों में अश्रु न रुक सके, यह एक स्वार्थ था।

मैंने जीवन, विशेष रूप से सामाजिक जीवन के अत्यन्त महत्वपूर्ण निर्णय इसी बैठक में एकान्त में उन से विचार विनमय कर के किये हैं। ईश्वर ने एक ऐसी **परिस्थिति में मुझ से यह सहारा छीना है कि मैं अन्तिम दर्शन न कर सका और न हृदय की बात उन से उन के अन्त समय में कर सका।**

काल के इस चक्र में प्रत्येक आने वाले को जाना है

परन्तु जीवन यात्रा में प्रत्येक मनुष्य अपने पग चिह्न छोड़ जाता है, जो उस के पश्चात् आने वाले प्रत्येक पथिक का पथ प्रदर्शन करते हैं।

उन की प्रत्येक बात में दृढ़ निश्चय था चाहे मित्रों को जचे अथवा न। प्रत्येक बात में उन का एक दृष्टिकोण था कि आर्य समाज का हित सर्वोपरि रहे। अन्य व्यक्तियों को इसी तुला पर तोलते थे कि इन से आर्य समाज को कितना लाभ है। अपनी सम्मति दृढ़ता से दे देना और फिर कह देना कि मैं ने सम्मति दे दी है। बदल नहीं सकता। परन्तु आप की बात मान कर साथ चलने को उद्यत हूं।

उन की मृत्यु से जो हानि आर्य संस्थाओं को पहुंची है सम्भवतः उस की कल्पना आप अथवा नगर निवासी न कर सकेंगे।

सदैव मेरे मुख पर ताला लगाए रखा कि 'कार्य आप का हो गया अब मेरा नाम न लेना कि मेरे द्वारा हुआ है।' अपितु उन के शब्द थे कि जब आपने नाम प्रकट कर दिया मैं उस दिन से आप के लिये इतना उपयोगी न रह सकूंगा।'

मेरी इस स्वार्थ भावना ने उन की इस निस्वार्थ

भावना का सदैव आदर किया अर्थात् मैंने कभी भी उन का नाम कहीं प्रकट न किया।

'प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो' है कोई और विकल्प ? नहीं ! तो फिर अश्रु क्यों ?

---

(२)

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के गुरु जी

सरसंघचालक श्री मा० स० गोलवल्कर "आप ने संघ कार्य में आरम्भ से जिन्होंने पूरी शक्ति लगा कर काम किया उनमें आपका नाम बहुत ऊँचा है। अब वह नहीं रहे। श्री प्रभु की इच्छा! हम लोगों को दिवंगत जीव की सद्गति के लिए श्री परमात्मा के चरणों में प्रार्थना कर अपने मन को सन्तुलित रख एवं सब शोक पीड़ित परिवार को सान्त्वना देना इस समय कर्त्तव्य है।'

(३)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता श्री माधवराव जी

'माननीय श्री सेतिया जी का जीवन त्याग, सेवा और कर्त्तव्य परायणता का रहा है। सामाजिक कार्य के लिए वे अपने व्यक्तिगत सुख सुविधा, मानापमान को हमेशा छोड़ने को तत्पर रहते थे।

श्री सेतिया जी के हमसे विदा होने से संघ कार्य को जो हानि हुई है उसकी पूर्ति होना कठिन है।'

(४)

श्रीमद् भगवद् गीता उच्च विद्यालय कुरुक्षेत्र

'श्री सेतिया जी के निधन से सामाजिक जीवन का एक अथक निःस्वार्थी और अपार कार्यकर्त्ता उठ गया है। यह क्षति कठिनाई से पूरी होसकेगी। सेतिया जी की बहुमुख सेवायें सदा स्मरणीय रहेंगी तथा उनका पवित्र जीवन हम सब के लिए प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करेगा।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ एवं आर्यसमाज के वह अनन्य श्रद्धालु, एवं सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में सदा प्रेरणा स्रोत रहेंगे। शिक्षण संस्थाओं के लिए उनका योगदान सदैव अमर रहेगा।'

(५)

भारत सरकार के राज्य मन्त्री श्री इकबाल सिंह

'मुझे आपके पूज्य पिता श्री महाशय मुकन्द लाल जी सेतिया की मृत्यु से बहुत दुःख हुआ।'

(६)

पंजाब के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री रामकिशन

"मुझे आपके भ्राता श्री महाशय मुकन्दलाल जी के आकस्मिक निधन से बड़ा आघात पहुंचा।"

(७)

श्री हंसराज गुप्त महापौर दिल्ली

"यह जानकर के मुकन्दलाल जी सेतिया स्वर्गवास हो गये हैं मुझे अत्यन्त दुःख हुआ।"

(८)

डा० बलदेव प्रकाश प्रधान पंजाब प्रदेश जनसंघ

'श्री मुकन्दलाल जी सेतिया के देहान्त से अत्यन्त शोक हुआ। अपने साथ उनका बहुत ही घनिष्ट सम्बंध था। मेरे

साथ वह जेल में भी थे। उनका सरल व मधुर स्वभाव हम सभी के लिए एक उदाहरण है। उनकी मृत्यु से अपने क्षेत्र में भारी क्षति हुई है।"

(९)

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में महाशय जी को उन की वैदिक धर्म के प्रति अथक सेवाओं के लिए भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई।

(१०)

प्राध्यापक विश्वबन्धु जी "व्यथित"

'आज की कुण्ठापूर्ण नैराश्यवादी व उलझनदार जीवन पद्धति में महाशय मुकन्दलाल सेतिया जी का जीवन अमर-प्रदीप के समान था। साथ ही यह विशेषता भी कि जहाँ वे देश, धर्म, जाति के गौरव तथा सिद्धान्त एवं संस्कृति के उद्धारक प्रसारक अथच अथक प्रचारक होने के नाते एक प्रज्वलित दीपशिखा के समकक्ष थे, वहां आदर्शों की वेदी पर अपना तन-मन-धन तिल-तिल कर जलाने वाले शलभ भी थे ही। उनके धर्म एवं परमेश्वर के प्रति एकनिष्ठ समर्पण को स्मरण कर निम्न पंक्तियां अनायास अधरों पर

थिरक उठती हैं :–

'छोड़ ही तरणी भंवर में, इस दिलासे पर कि इक दिन,
तुम स्वयं मजबूर होकर हाथ में पतवार लोगे ।
कर दिया प्रारंभ अब अस्तित्व तिल तिल कर जलाना,
सोचता हूं 'जब मिटूंगा तब मुझे तुम प्यार दोगे ।।'

और इसी प्रकार एक दिन वह देवता अपने अस्तित्व को गलाकर परमपिता के प्यार का सच्चा अधिकारी हो गया ।

आज उनकी निर्भीकता, सत्यप्रियता, आचरण-दृढ़ता एवं सिद्धान्त-निष्ठता हमारे क्षुद्रजीवन के लिये एक चुनौती से कम नहीं है । कर्तव्य तथा आदर्शों की मर्यादा में बंधकर भी उनका आत्मा के स्वतन्त्र प्रकाश में उन्मुक्त विचरण एक अनुकरणीय आदर्श था । उन्होंने अपने जीवन का प्रमुख भाग हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान की सुरक्षा में समुद्यत राष्ट्रीय-स्वयं सेवक की सतत साधना और संरक्षता में व्यतीत किया, किन्तु जब देखा कि यह संस्था भारतीय जनसंघ के स्वार्थपूर्ण-संकेत पर हिन्दी के ही प्रति उपेक्षा-भाव दिखाने लगी तो उसकी खुली भर्त्सना करने से वे कभी पीछे नहीं रहे । इन पंक्तियों के लेखक से इस विषय पर विस्तृत विचार विमर्श होने पर वे अनेक बार कहा

करते थे कि 'निष्ठा से सिद्धान्त अधिक महान् हैं।' अन्ध-विश्वास का अनुशासन मनुजता का आदर्श नहीं है।

शिक्षा की उन्नत चोटियों पर न चढ़ कर भी वे शिक्षितों के मार्ग दर्शक थे। एक वाक्य में यही कहूंगा कि वे जीवन के रहस्य को खोज चुके थे और यह खोज उन्होंने गुरू वर देव दयानन्द के दिये प्रकाश में ही पूर्ण की थी। उन्हें मेरा शत शत प्रणाम है।'

———

—मुद्रक—
जय हिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर

लेखक की अन्य पुस्तकों पर सुप्रसिद्ध विद्वानों व पत्रों की कुछ सम्मतियां

वीर सन्यासी (जीवन चरित्र श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज) मूल्य तीन रुपये, प्राप्ति स्थान दयानन्द मठ दीनानगर।

श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

'स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की जीवनी तो तुम्हारी अद्भुत कृति है। जिसने पढ़ी प्रशंसा की है। आशा की जाती है कि अन्य ऐसे ही ग्रन्थ देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा।'

श्री पं० शान्ति प्रकाश जी

शास्त्रार्थ महारथी, गुड़गांव

'इस अमर गाथा को आपने अपनी लौह लेखनी से लिखा है। आपकी लेखन शक्ति को मैं बारम्बार प्रणाम करता हूं।'

डा० भवानीलाल जी भारतीय

एम० ए० पी० एच० डी० अजमेर

'आपने स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के विषय में लेखनी उठाकर एक बड़े अभाव की पूर्ति की है।'

प्रो० चन्द्रप्रकाश जी आर्य

मासिक 'विश्वज्योति' में

'लेखक वधाई एवं धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होंने साहित्य को अमूल्य निधि प्रदान की है। भावों को अत्यन्त रोचक एवं सुसम्बन्ध ढंग से उपनिबद्ध किया गया है।'

हृदय-तन्त्री (गीत संग्रह) :-

महाराष्ट्र के आर्य तपस्वी श्री हरिश्चन्द्र गुरुजी

'कवि के हृदय में धर्म तथा राष्ट्र के प्रति अटूट प्रेम का सागर सदैव उमड़ता रहता है। धर्म तथा राष्ट्र पर बलि जाने वाले हुतात्मा कवि के देवता हैं। उनका जीवन कवि का प्रेरणा स्रोत है। ध्येय के दीवाने कवि मस्ताने सीना ताने अपने पथ पर जा रहे हैं। वे रुकना झुकना क्या जानें ?'

'मौलिक भेद'

प्रि० रामचन्द्र जी जावेद

एम० ए० सम्पादक वैदिक धर्म साप्ताहिक ।

'यद्यपि पाँचों विषय अत्यन्त गूढ़ और दार्शनिक हैं परन्तु श्री 'जिज्ञासु' जी ने आर्य विद्वानों और आर्य ग्रन्थों के प्रमाणों से इन्हें ऐसा युक्ति-सम्मत रूप दे दिया है कि वे सरल, सुबोध और रोचक बनकर सबके लिए सरस बन गये हैं।'

कविराज हरनामदास जी बी०ए०

'आपके पुरुषार्थ से आर्यसमाज अपने को धन्य मानता है।'

पूज्य उपाध्याय जी के सुशिष्य श्री पं० राधेमोहन जी प्रयाग

'मौलिक भेद' में वैदिक एवं अवैदिक सिद्धान्तों की युक्ति युक्त मर्म स्पर्शी व हृदयग्राही समालोचना की गई है। तुलनात्मक विवेचन की शैली रोचक तथा ज्ञान वर्द्धक है।'

श्रद्धेय वेदज्ञ महात्मा देव मुनि जी
(पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड) ज्वालापुर

'मौलिक भेद' में आपने मत मतान्तरों से वैदिक धर्म का जो भेद दिखाया है वह आपके गम्भीर अध्ययन और मनन को सूचित करता है जिसे देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई।'

श्री स्वामी विद्यानन्द विदेह के मासिक
'सविता' की सम्मति

'पुस्तिका तर्क-प्रमाण पुरस्सर, प्रखर एवं ओजस्वी मस्तिष्क से प्रसूत तथा माननीय है।'

'महर्षि का ऐक्यवाद'

यह अपने विषय की आर्य साहित्य में प्रथम पुस्तक है। भूमिका लेखक हैं यशस्वी आर्य विद्वान डा० भवा[illegible] लाल जी भारतीय

प्राप्ति स्थान:-आ[illegible] करज़वे कैम्प

देहली-९